Bachelor of Arts
(B.A.)

Sem-II
SOCL-102

SOCIOLOGY
(Society, Culture & Social Change)

Directorate of Distance Education
Guru Jambheshwar University of Science & Technology HISAR-125001

CONTENTS

SOCIOLOGY
(Society, Culture & Social Change)

SOCL-102

	SEMESTER II (5 Chapters)			
	Titles/Chapters' name	Author	Editor	Page/s
1.	Culture: Definition, Nature and Types of culture	Dr. Shakuntla Devi	Dr. Shakuntla Devi	1-26
2	Societies: Types and Characteristics- Tribal, Urban, industrial and Post Industrial	Dr. Shakuntla Devi	Dr. Shakuntla Devi	27- 61
3.	Social Stratification and Social Mobility	Dr. Shakuntla Devi	Dr. Shakuntla Devi	62-89
4.	Socialization: Importance, Process, Stages, Social- Control, Its types and means	Dr. Shakuntla Devi	Dr. Shakuntla Devi	90- 116
5.	Processes of Social Change, its Forms and Features	Dr. Shakuntla Devi	Dr. Shakuntla Devi	117-137
6	Industialization and Its characteristic Features	Dr. Shakuntla Devi	Dr. Shakuntla Devi	138-151
7	Globalisation and Its characteristic Features	Dr. Shakuntla Devi	Dr. Shakuntla Devi	152-158
8	Modernization and Secularization, Its characteristic Features	Dr. Shakuntla Devi	Dr. Shakuntla Devi	159-171

Written and updated by: Dr. Shakuntla Devi, A.P.
PC(BA),DDE,GJUST, Hisar

Subject : Sociology(Society, Culture and Social Change)	
Course Code **: SOCL-102**	Author **: Dr. Shakuntla Devi**
Lesson No. **: 01**	Editor: **Self**
Culture: Definition, Nature and Types of culture (परिभाषा, प्रकृति और संस्कृति के प्रकार)	

अध्याय की संरचना

1.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

1.1 प्रस्तावना (Introduction)

1.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

1.2.1 संस्कृति के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Culture)

1.2.2 संस्कृति की व्यापक परिभाषा (Comprehensive Definition of Culture)

1.2.3 संस्कृति का वर्गीकरण (Classification of Culture)

1.2.4 संस्कृति की प्रकृति और मुख्य विशेषताएं (Nature and Features of Culture)

1.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

1.3.1 सांस्कृतिक निर्धारक (Cultural Determinants)

1.3.2 संस्कृति के महत्वपूर्ण कार्य (Functions of Culture)

1.3.3 सांस्कृतिक परिवर्तन (Cultural Change)

1.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

1.5 सारांश (Summary)

1.6 सूचक शब्द (Keywords)

1.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

1.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

1.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives):

इस अध्याय के माध्यम से जाने के बाद, आप निम्न कर सकेंगे:

- संस्कृति के अर्थ और परिभाषा को जानेंगे ।
- संस्कृति और विभिन्न सांस्कृतिक निर्धारकों की प्रकृति को समझेंगे ।
- संस्कृति के वर्गीकरण और कार्यों का वर्णन करेंगे ।
- समाज और उससे संबंधित संस्कृति में सह-संबंध स्थापित कर सकेंगे ।

1.1 परिचय/ प्रस्तावना (Introduction)

आप पहले से ही जानते होंगे कि संस्कृति एक सामूहिक विरासत है जिसे व्यक्तियों द्वारा सीखा जाता है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पारित किया जाता है। व्यक्ति सामाजिक विरासत के एक हिस्से के रूप में संस्कृति प्राप्त करता है और बदले में, संस्कृति को फिर से खोल सकता है और परिवर्तनों को पेश कर सकता है तब सफल पीढ़ियों की विरासत का हिस्सा बन जाते हैं। रीति-रिवाज, परंपराएं, दृष्टिकोण, मूल्य, मानदंड, विचार और प्रतीक मानव व्यवहार पैटर्न को नियंत्रित करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ व्यक्तिगत लक्षण और गुण होते हैं जो व्यक्ति की आदतों, सोच और व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं। ये व्यक्तिगत पसंद, नापसंद, रुचियां, सोच के तरीके और सामाजिक व्यवहार के पैटर्न उनकी व्यक्तिगत संस्कृति का निर्माण करते हैं। इसी प्रकार, विभिन्न समुदायों के अपने अलग-अलग रीति-रिवाज, परंपराएँ, विश्वास और जीवन शैली हैं जिन्हें सामुदायिक संस्कृति के रूप में जाना जाता है। इसी तरह प्रत्येक राष्ट्र के आदर्शों, मूल्यों, विचारों और व्यवहार के तरीकों के कुछ अलग पैटर्न होते हैं। ऐसे राष्ट्रीय लक्षणों को राष्ट्रीय संस्कृति के रूप में जाना जाता है

अब पूरी दुनिया में जीवन के सामान्य मूल्यों जैसे सहयोग, सहानुभूति, सामाजिक सेवाओं, सामाजिक जागृति और सामाजिक संवेदनशीलता के रूप में माना जाता है, जिसे विश्व संस्कृति कहा जाता है। समाजशास्त्री समाज को ऐसे लोगों के रूप में परिभाषित करते हैं जो एक सामान्य संस्कृति को साझा करने के लिए इस तरह से बातचीत करते हैं। सांस्कृतिक बंधन जातीय या नस्लीय हो सकता है, लिंग के आधार पर, या साझा मान्यताओं, मूल्यों और गतिविधियों के कारण हो सकता है। समाज शब्द का एक भौगोलिक अर्थ भी हो सकता है और उन लोगों को संदर्भित कर सकता है जो किसी विशेष स्थान पर एक सामान्य संस्कृति साझा करते हैं। उदाहरण के लिए, आर्कटिक जलवायु में रहने वाले लोगों ने रेगिस्तान संस्कृतियों में रहने वाले लोगों से विभिन्न संस्कृतियों को विकसित किया। समय के साथ, दुनिया भर में मानव संस्कृतियों की एक विशाल विविधता पैदा हुई।

संस्कृति और समाज जटिल रूप से संबंधित हैं। एक समाज में एक संस्कृति की "वस्तुएं" होती हैं, जबकि एक समाज में एक सामान्य संस्कृति को साझा करने वाले लोग होते हैं। जब संस्कृति और समाज ने पहली बार अपने वर्तमान अर्थों को प्राप्त किया, तो दुनिया के अधिकांश लोग एक ही स्थान पर छोटे समूहों में काम करते थे और रहते थे। आज के समय में, 6 बिलियन लोगों की शर्तों ने अपनी कुछ उपयोगिता खो दी है, क्योंकि लोगों की संख्या बढ़ रही है और विश्व स्तर पर संसाधनों को साझा करते हैं। फिर भी, लोग संस्कृति और समाज का उपयोग अधिक पारंपरिक अर्थों में करते हैं l

आप जानते हैं कि समाज के सदस्य न केवल संस्कृति स्वीकार करते हैं, बल्कि उनके अनुसार अपने व्यवहार को भी ढालते हैं। वे परंपराओं और रीति-रिवाजों के कारण समाज के सदस्य हैं जो आम हैं और समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पारित हो जाते हैं। ये सामान्य पैटर्न संस्कृति को नामित करते हैं और यह संस्कृति के संदर्भ में है कि हम मानव के विशिष्ट व्यवहार पैटर्न को उनके सामाजिक संबंधों और सामाजिक-सेटिंग्स में समझने में सक्षम हैं। साझा सांस्कृतिक विचार सामाजिक जीवन से निकलते हैं।

1.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

1.2.1 संस्कृति का अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Culture)

आप यहाँ देखते हैं कि एक साधारण भाषा में, संस्कृति का अर्थ अच्छा व्यवहार और अच्छा स्वाद है ।

- समाजशास्त्री टेलर ने संस्कृति " पूरे के रूप में उस जटिल रूप को परिभाषित किया, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता और कानून, रीति-रिवाज और किसी भी अन्य क्षमताओं और आदतों आदि को शामिल किया गया है जो समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित किए गए हैं।"
- समाजशास्त्री एलवुड ने कहा कि "संस्कृति में मनुष्य की संपूर्ण भौतिक सभ्यता, उपकरण, हथियार, कपड़े, आश्रय, मशीनें और यहां तक कि उद्योग की प्रणाली भी शामिल है।"
- समाजशास्त्री ब्राउन के अनुसार, भौतिक और गैर-भौतिक संस्कृति दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं। लोगों की संस्कृति उन लोगों के जीवन का तरीका है, उसके लोग, मूल्य, चीजें, वे चीजें जो वे महत्व नहीं देते हैं, जीवन की आदतें, उनकी कला, उनका काम, वे क्या करते हैं और उन्हें क्या पसंद है। भौतिक तत्वों से अभिप्राय मनुष्य की भौतिक सभ्यता, औजारों, हथियारों, कपड़ों, मशीनों और उद्योग से है। अभौतिक तत्वों से अभिप्राय भाषा, कला, धर्म, नैतिकता, कानून और सरकार आदि से है।

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ व्यक्तिगत लक्षण और गुण होते हैं जो व्यक्ति की आदतों, सोच और व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं। ये व्यक्तिगत पसंद, नापसंद, रुचियां, सोच के तरीके और सामाजिक व्यवहार के पैटर्न उसकी व्यक्तिगत संस्कृति का निर्माण करते हैं। इसी तरह, अलग-अलग समुदायों के अपने अलग-अलग रीति-रिवाज, परंपराएँ, काम, विश्वास और जीने के तरीके और व्यवहार होते हैं जिन्हें सामुदायिक संस्कृति के रूप में जाना जाता है। इसी तरह प्रत्येक राष्ट्र के आदर्शों, मूल्यों, विचारों और व्यवहार के तरीकों के कुछ अलग पैटर्न होते हैं। ऐसे राष्ट्रीय लक्षणों को राष्ट्रीय संस्कृति के रूप में जाना जाता है। आगे परिवहन और संचार के साधनों में वृद्धि के साथ पूरी दुनिया एक छोटी इकाई में

बदल गई है। पूरी दुनिया को अब जीवन के सामान्य मूल्यों जैसे सहयोग, सहानुभूति, सामाजिक सेवाओं, सामाजिक जागृति और सामाजिक संवेदनशीलता के रूप में माना जाता है, जिसे विश्व संस्कृति कहा जाता है।

अब छात्र! आपको समाजशास्त्रीयों के अनुसार संस्कृति की अन्य परिभाषाएँ मिलेंगी जो नीचे दी गई हैं:

i) संस्कृति की एक सरल परिभाषा: संस्कृति किसी समाज या लोगों के समूह की सीखी गई मान्यताओं, दृष्टिकोणों, मूल्यों, मानदंडों और रीति-रिवाजों का एक समुच्चय है, जो उनके द्वारा साझा किया जाता है और उस समाज के भीतर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित होता है। जिस समाज ने संस्कृति का विकास किया वह लगातार नए अनुभवों के संपर्क में आता है।

ii) ई, होएबेल के अनुसार, 'संस्कृति एकीकृत सीखा व्यवहार पैटर्न का कुल योग है जो एक समाज के सदस्यों की विशेषताएं हैं और इसलिए यह जैविक विरासत का परिणाम नहीं है।"

iii) Bierstedt के अनुसार "संस्कृति वह संपूर्ण है जिसमें वह सब कुछ होता है जो हम सोचते हैं और समाज के सदस्यों के रूप में होते हैं"

iv) एंडरसन और पार्कर के अनुसार, "संस्कृति भौतिक-सामाजिक, जैव-सामाजिक और मनो-सामाजिक ब्रह्मांड मनुष्य की कुल सामग्री है और सामाजिक रूप से बनाए गए तंत्र जिनके द्वारा ये सामाजिक उत्पाद संचालित होते हैं"।

v) मलिनोव्स्की ने संस्कृति को मनुष्य की करतूत और उस माध्यम के रूप में परिभाषित किया जिसके माध्यम से वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है।

1.2.2 संस्कृति की व्यापक परिभाषा (Comprehensive Definition of Culture)

कई प्रासंगिक परिभाषाओं से गुजरने के बाद, आप अच्छी तरह से **संस्कृति की व्यापक परिभाषा** भी जान सकते हैं। उसी परिभाषा को नीचे दिया गया है:-

संस्कृति मानव-उपलब्धियों का योग है जो मनुष्य की कुल विरासत के रूप में है जो एक व्यक्ति को उसके परिभाषित संचार माध्यम और परंपराओं आदि के माध्यम से प्रेषित किया जाता है। यह एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में लोगों के जीवन का एक तरीका है। समाज की जीवन शैली और सामाजिक प्रतिमान युग-अतीत की संचित विरासत का प्रत्यक्ष परिणाम हैं और एक समुदाय को दूसरे से अलग करते हैं।

संस्कृति इसलिए, संचित विरासत के आधार पर मानदंडों और मूल्यों के अनुसार उन्नति के लिए नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक अनुशासन है। संस्कृति समूह के सदस्यों के बीच सीखा हुआ साझा और प्रेषित व्यवहार की एक प्रणाली है।

छात्र! अब आपने संस्कृति के अर्थ और इसकी परिभाषाओं को अधिक स्पष्ट रूप से समझ लिया है।

1.2.3 संस्कृति का वर्गीकरण (Classification of Culture)

अब छात्र! संस्कृति की अवधारणा और परिभाषा को जानने के बाद आपको संस्कृति के व्यापक वर्गीकरण के बारे में भी पता होना चाहिए जो निम्नानुसार है:--

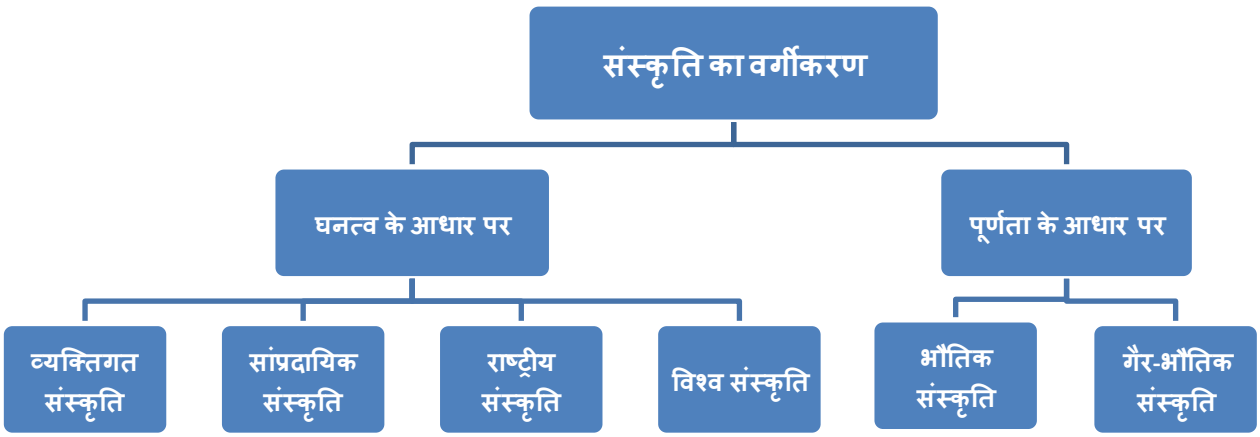

a) घनत्व के आधार पर वर्गीकरण- घनत्व के आधार पर, विशिष्ट समाज की संस्कृति को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे कि नीचे दिया गया है: -

- व्यक्तिगत संस्कृति

- सांप्रदायिक संस्कृति
- राष्ट्रीय संस्कृति
- विश्व संस्कृति

b) संस्कृति के वर्गीकरण को पूर्णता के आधार पर

सामग्री के संदर्भ में, दिए गए समाज की संस्कृति को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है जो निम्नानुसार हैं: -

a) भौतिक संस्कृति (Material Culture)

b) गैर-भौतिक संस्कृति (Non-Material Culture)

a) भौतिक संस्कृति: इसमें उन सभी चीजों और वस्तुओं को शामिल किया गया है जो मानव समाज ने अपने भौतिक कल्याण के लिए बनाई हैं। उदाहरण के लिए, कपड़े, बर्तन, टीवी, रेडियो, विभिन्न मशीनें आदि।

b) गैर-भौतिक संस्कृति: इसमें उन आदर्शों, दृष्टिकोणों और मूल्यों को शामिल किया जाता है जो किसी व्यक्ति के व्यवहार को संशोधित करते हैं। भाषा, साहित्य, कला, संगीत, धर्म, रीति-रिवाज, परंपराएँ आदि गैर-भौतिक संस्कृति के कुछ उदाहरण हैं।

सामग्री और गैर-सामग्री (Material and non material culture) संस्कृति के दो पहलू हैं। हमारी संस्कृति को उन मूल्यों, मानदंडों और मान्यताओं के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो हमारे समाज में हैं। हमारा मानना है कि किसी से चोरी करना गलत है और गाड़ी चलाते समय लाल ट्रैफिक लाइट पर रुकना सही है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि संस्कृति में भौतिक और गैर-भौतिक दोनों घटक होते हैं।

भौतिक संस्कृति (Material Culture)

भौतिक संस्कृति से तात्पर्य भौतिक टुकड़ों से है जो एक संस्कृति को बनाते हैं। भौतिक संस्कृति में ऐसी चीजें शामिल हैं जो मनुष्यों द्वारा बनाई गई हैं। उदाहरणों में कार, भवन, कपड़े और उपकरण शामिल हैं।

समाजशास्त्री मानव संस्कृति के दो परस्पर संबंधित पहलुओं का वर्णन करते हैं: संस्कृति की भौतिक वस्तुएँ और इन वस्तुओं से जुड़े विचार। भौतिक वस्तुओं, संसाधनों और रिक्त स्थान को संदर्भित करती है जिसका उपयोग लोग अपनी संस्कृति को परिभाषित करने के लिए करते हैं। इनमें घर, पड़ोस, शहर, स्कूल, चर्च, आराधनालय, मंदिर, मस्जिद, कार्यालय, कारखाने और पौधे, उपकरण, उत्पादन के साधन, माल और उत्पाद, भंडार और आगे शामिल हैं। संस्कृति के ये सभी भौतिक पहलू इसके सदस्यों के व्यवहार और धारणा को परिभाषित करने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, आज के प्रौद्योगिकी संयुक्त राज्य अमेरिका में भौतिक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

गैर-सामग्री संस्कृति (Non-Material Culture)

गैर-सामग्री संस्कृति (नॉनमेटेरियल संस्कृति) से तात्पर्य अमूर्त विचारों और सोचने के तरीकों से है जो एक संस्कृति को बनाते हैं। गैर-सामग्री संस्कृति के उदाहरणों में ट्रैफ़िक कानून, शब्द और ड्रेस कोड शामिल हैं। भौतिक संस्कृति के विपरीत, गैर-भौतिक संस्कृति अमूर्त है।

गैर- सामग्री संस्कृति, सैद्धांतिक विचारों को संदर्भित करती है जो लोगों की अपनी संस्कृति के बारे में है, जिसमें विश्वास, मूल्य, नियम, मानदंड, नैतिकता, भाषा, संगठन और संस्थान शामिल हैं। उदाहरण के लिए, धर्म की गैर-भौतिक सांस्कृतिक अवधारणा में ईश्वर, पूजा, नैतिकता और नैतिकता के बारे में विचारों और विश्वासों का एक समूह होता है। फिर इन मान्यताओं के चलते ये निर्धारित करते हैं कि संस्कृति अपने धार्मिक विषयों, मुद्दों और घटनाओं पर कैसे प्रतिक्रिया देती है।

गैर-भौतिक संस्कृति पर विचार करते समय, समाजशास्त्री कई प्रक्रियाओं का उल्लेख करते हैं जो एक संस्कृति अपने सदस्यों के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों को आकार देने के लिए उपयोग करती है। इनमें से चार सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक, भाषा, मूल्य और मानदंड हैं।

गैर-भौतिक संस्कृति के अवयव और उदाहरण (Components and Examples of Non-material culture)

गैर- भौतिक संस्कृति के सात घटक निम्नानुसार हैं:-

- **इशारे** (Gestures)
- भाषा (Language)
- मान (Values)
- मानदंड (Norms/Criteria)
- प्रतिबंध (Taboos/restrictions)
- फ़ोक्वेज़ (Folkways)
- आचार-विचार (Ethics/Behaviour)

आइए प्रत्येक के उदाहरणों पर करीब से नज़र डालें।

- **इशारे (Gestures)**

  इशारे ऐसी हरकतें हैं जिन्हें लोग अपने शरीर के साथ संवाद करने के लिए करते हैं। सभी संस्कृतियाँ इशारों का उपयोग करती हैं। दो संस्कृतियां समान हावभाव का उपयोग कर सकती हैं, लेकिन इसके दोनों संस्कृतियों में अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका में अपनी तर्जनी का उपयोग करके किसी को संकेत देना या संकेत देना पूरी तरह से सामान्य है। जापान में, अपनी तर्जनी के साथ किसी को भी अपमानजनक रूप से देखा जा सकता है।

- **भाषा (Language)**

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर, लिखकर व पढ़कर अपने मन के भावों या विचारों का आदान-प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में- जिसके द्वारा हम अपने भावों को लिखित अथवा कथित रूप से दूसरों को समझा सके और दूसरों के भावों को समझ सके, उसे भाषा कहते है।

- **मान (Values)**

मूल्य सापेक्ष महत्व का परिमाण है जो लोग अपने जीवन में अनुभव के परिवर्तनों पर रखते हैं। कुछ, लेकिन इस मूल्य के सभी बाजार की कीमतों में कब्जा नहीं है।

सामाजिक मूल्य के उदाहरण हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाने, या सामुदायिक पार्क के बगल में रहने से प्राप्त होने वाले मूल्य हो सकते हैं।

- **मानदंड (Norms/Criteria)**

वह निश्चित या स्थिर किया हुआ सर्वमान्य मान या माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता, श्रेष्ठता, गुण आदि का अनुमान या कल्पना की जाए उदाहरण के लिए, भारत में शिक्षा का मानदंड पहले से अच्छा हो गया है ।

- **प्रतिबंध (Taboos/restrictions)**

एक टैबू एक सांस्कृतिक भावना के आधार पर किसी चीज पर (आमतौर पर एक कथन या व्यवहार के खिलाफ) एक निहित निषेध है कि यह अत्यधिक प्रतिकारक है या, शायद, आम लोगों के लिए भी पवित्र है।

- **फ़ोक्वेज़ (Folkways)**

लोकमार्ग दैनिक जीवन के रीति-रिवाज या परंपराएं हैं। वे एक प्रकार के सामाजिक मानदंड हैं - अपेक्षाएं कि हम कैसे कार्य करते हैं। समाजशास्त्र में, लोकमार्ग आम तौर पर मोर्स (Mores) के विपरीत चर्चा करते हैं क्योंकि वे दोनों प्रकार के सामाजिक मानदंड हैं, हालांकि वे उस डिग्री में भिन्न होते हैं जहां वे लागू होते हैं।

- **आचार-विचार (Ethics/Behaviour)**

सही और गलत के सिद्धांत जो किसी व्यक्ति या सामाजिक समूह द्वारा स्वीकार किए जाते हैं ।

1.2.4 संस्कृति की प्रकृति और मुख्य विशेषताएं (Nature and Features of Culture)

अब छात्र! आपको एक विशिष्ट समाज की उस संस्कृति को पढ़ना और समझना चाहिए जिसमें निम्नलिखित विशेषताएं हो सकती हैं:-

a) सीखा व्यवहार (Learned Behaviour)

सभी व्यवहार को सीखा नहीं जाता है, लेकिन इसे सीखा जाता है। कभी-कभी सचेत सीखने और अचेतन सीखने की शर्तों का उपयोग सीखने की प्रक्रिया को अलग करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, जिस तरह से एक छोटा बच्चा एक अलोकतांत्रिक पिता या अस्वीकार करने वाली मां को संभालना सीखता है, वह अक्सर उन बच्चों को प्रभावित करता है, जो दस या पंद्रह साल बाद, अन्य लोगों के साथ अपने संबंधों को संभालते हैं।

कभी-कभी मानव व्यवहार स्पष्ट होता है जिसे आसानी से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए- लोगों को विशिष्ट खेलों में जाते हुए, कांटे के साथ भोजन करते हुए, या वाहन चलाते हुए आदि देखा जा सकता है।

b) संस्कृति सार है (Culture is abstract)

संस्कृति समाज के सदस्यों के मन या आदतों में मौजूद है। संस्कृति चीजों को सोचने और करने का साझा तरीका है। हम संस्कृति को ठोस रूप में नहीं देख सकते हैं; हम केवल मानव व्यवहार को देख सकते हैं। यह व्यवहार नियमित, पैटर्न वाले फैशन में होता है जिसे संस्कृति कहा जाता है।

c) कल्चर, लर्निंग बिहेवियर का एक पैटर्न है (Culture is a pattern of Learned Behaviour)

संस्कृति की परिभाषा ने संकेत दिया कि लोगों का सीखा व्यवहार पैटर्न है। प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार अक्सर किसी अन्य व्यक्ति के कुछ विशेष व्यवहार पर निर्भर करता है। मुद्दा यह है कि, एक सामान्य नियम के रूप में, व्यवहार अन्य व्यक्तियों के संबंधित व्यवहार के साथ कुछ हद तक एकीकृत या व्यवस्थित होते हैं।

d) संस्कृति व्यवहार का उत्पाद है (Culture is the product of behaviour)

संस्कृति सीखे-व्यवहार की उपज है। जैसा कि व्यक्ति व्यवहार करता है, उसके अनुसार उसमें परिवर्तन होते हैं। वह तैरने, किसी के प्रति घृणा महसूस करने या किसी के प्रति सहानुभूति रखने की क्षमता प्राप्त करता है। वे उसके पिछले अधिग्रहित व्यवहार से बाहर हो गए हैं।

व्यवहार दोनों तरह से, मानव व्यवहार का परिणाम है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे अन्य लोगों का अनुभव प्रभावित होता जाता है और उसके कई लक्षण और क्षमताएं उसके अपने पुराने व्यवहारों से भी बढ़ जाती हैं।

e) संस्कृति में दृष्टिकोण, मूल्य और ज्ञान शामिल हैं (Culture includes attitudes, values and knowledge)

बहुत से लोगों की सोच में एक व्यापक त्रुटि है, जो विचारों, दृष्टिकोणों और धारणाओं को मानते हैं, जो उनके पास "अपने स्वयं के" के रूप में हैं। किसी के स्वयं के दृष्टिकोण और विचारों की विशिष्टता का अनुमान लगाना आसान है। जब अन्य लोगों के साथ समझौता होता है तो यह काफी हद तक किसी का ध्यान नहीं जाता है, लेकिन जब कोई मतभेद होता है, तो आमतौर पर इसके प्रति सचेत होना होता है। आपके मतभेद हालांकि, सांस्कृतिक भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आप एक जैनी हैं और दूसरा व्यक्ति बौद्ध है।

f) संस्कृति में भौतिक वस्तुएं भी शामिल हैं (Culture also includes material objects)

वस्तुओं के निर्माण में एक व्यक्तिगत परिणाम का व्यवहार। मनुष्य ने कई भौतिक चीजों का आविष्कार किया है। कभी-कभी कोई इस विचार का सामना करता है कि आदमी वास्तव में "स्टील" या

युद्धपोत नहीं बनाता है। ये सभी चीजें पहले "राज्य प्रकृति" में मौजूद थीं। मनुष्य ने न केवल अपने रूप को संशोधित किया, उन्हें उस स्थिति से बदला जिसमें वे पहले से मौजूद थे।

g) संस्कृति सोसायटी के सदस्यों द्वारा साझा की जाती है (Culture is shared by the Members of Society)

सीखा हुआ व्यवहार के पैटर्न और व्यवहार के परिणाम एक या कुछ व्यक्तियों के पास नहीं होते हैं, लेकिन आमतौर पर इसका एक बड़ा अनुपात होता है। इस प्रकार, कई लाखों लोग क्षेत्रीयता या जातिवाद, ऑटोमोबाइल का उपयोग, या अंग्रेजी भाषा जैसे व्यवहार पैटर्न साझा करते हैं। लोग किसी संस्कृति के कुछ हिस्से को असमान रूप से साझा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जैसा कि अमेरिकी ईसाई धर्म करते हैं। कुछ व्यक्तियों के लिए ईसाई धर्म जीवन में सबसे महत्वपूर्ण, पूर्वव्यापी विचार है। दूसरों के लिए यह पहले से कम व्यस्त या कम महत्वपूर्ण है, और अभी भी दूसरों के लिए यह केवल सीमांत महत्व का है।

कभी-कभी लोग संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को साझा करते हैं। उदाहरण के लिए, हरियाणा की संस्कृति हरियाणवी लोगों के बीच समान रूप से प्रतिबिंबित नहीं हो सकती है।

लेकिन छात्र! यहाँ हमारी चर्चा का विषय यह नहीं है कि संस्कृति या इसके किसी भी हिस्से को समान रूप से साझा किया जाता है, यह केवल समाज के सदस्यों द्वारा काफी हद तक साझा किया जा सकता है।

h) कल्चर सुपर-ऑर्गेनिक है (Culture is Super-organic)

संस्कृति को कभी-कभी सुपर ऑर्गेनिक कहा जाता है। तात्पर्य यह है कि "संस्कृति" किसी भी तरह "प्रकृति" से श्रेष्ठ है। सुपर-ऑर्गेनिक शब्द तब उपयोगी होता है जब इसका अर्थ यह होता है कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से काफी अलग घटना हो सकती है।

उदाहरण के लिए, एक पेड़ का मतलब एक पर्यावरणविद् के लिए अलग-अलग चीजों से होता है, जो इसका अध्ययन करते हैं, दोपहर में बूढ़ी औरत जो देर से छाया के लिए इसका इस्तेमाल करती है, जो किसान इसके फलों को चुनता है, मोटरकार और युवा प्रेमी जो इसकी प्रारंभिक देखभाल करते हैं। दूसरे

शब्दों में, एक ही भौतिक वस्तुओं और भौतिक विशेषताओं, विभिन्न सांस्कृतिक वस्तुओं और सांस्कृतिक विशेषताओं की एक भिन्न किस्म का गठन हो सकता है।

i) संस्कृति व्यापक और सार्वभौमिक है (Culture is Pervasive and universal)

संस्कृति व्यापक रूप से सर्वव्यापी है क्योंकि यह जीवन के प्रत्येक पहलू को छूती है। संस्कृति की व्यापकता दो तरह से प्रकट होती है जैसे:

- यह एक निर्विवाद (बिना विवाद किए) संदर्भ प्रदान करता है जिसके भीतर किसी व्यक्ति की कार्रवाई और प्रतिक्रिया होती है। न केवल भावनात्मक क्रियाएं बल्कि संबंधपरक क्रियाएं भी सांस्कृतिक मानदंडों द्वारा शासित होती हैं।
- यह सामाजिक गतिविधियों और संस्थानों में व्याप्त है।

j) संस्कृति जीवन का एक तरीका है (Culture is a way of Life)

संस्कृति का अर्थ बस लोगों के "जीवन जीने का तरीका" या उनके "जीने के लिए डिज़ाइन" है। जीवन के लिए एक संस्कृति स्पष्ट और निहित डिजाइनों की एक ऐतिहासिक रूप से व्युत्पन्न प्रणाली है, जो एक समूह के सभी या विशेष रूप से डिजाइन किए गए लोगों द्वारा साझा की जाती है।"

- स्पष्ट संस्कृति शब्द और क्रिया में समानता को संदर्भित करती है जिसे सीधे देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, किशोरों के सांस्कृतिक व्यवहार को पोशाक, ढंग और उनकी बातचीत प्रणाली (भाषा भाग) आदि में नियमितताओं से सामान्यीकृत किया जा सकता है।
- अमूर्त संस्कृति अमूर्त रूप में मौजूद है इसका मतलब ठोस शब्दों में नहीं है जो दिखाई नहीं देते हैं और सीधे नहीं देखे जाते हैं। जैसे- दृष्टिकोण, मूल्य आदि ।

k) संस्कृति एक मानव उत्पाद है (Culture is a human Product)

संस्कृति कोई ताकत नहीं है। यह स्वयं और मानव-नेताओं के द्वारा स्वतंत्र संचालित है। उक्त संस्कृति को नकारने या अवज्ञा करने, इसे जीवन के साथ रखने और इसे एक चीज के रूप में

मानने की एक अचेतन प्रवृत्ति है। संस्कृति, व्यक्तिगत संपर्कों में समाज का निर्माण है और इसके अस्तित्व के लिए समाज की निरंतरता पर निर्भर करता है।

इसलिए, संस्कृति बहुत सख्त अर्थ में अपने दम पर कुछ भी नहीं करती है। यह व्यक्ति को किसी विशेष तरीके से कार्य करने का कारण नहीं बनाता है, और न ही यह सामान्य व्यक्ति को एक दुर्भावनापूर्ण व्यक्ति के रूप में बताता है। संस्कृति, संक्षेप में, एक मानवीय उत्पाद है; यह स्वतंत्र रूप से जीवन के साथ संपन्न नहीं है।

l) संस्कृति आदर्शवादी है (Culture is Idealistic)

संस्कृति एक समूह के विचारों और मानदंडों का प्रचार करती है। यह एक समूह के व्यवहार के आदर्श पैटर्न और मानदंडों का योग है। संस्कृति में बौद्धिक, कलात्मक और सामाजिक आदर्श और संस्थाएँ शामिल होती हैं जिन्हें समाज के सदस्य दावा करते हैं और जिसकी पुष्टि करने के लिए वे प्रयास करते हैं।

m) समाज के सदस्यों के बीच संस्कृति का संचार होता है (Culture is transmitted among members of Society)

सांस्कृतिक तरीके व्यक्तियों से व्यक्तियों द्वारा सीखे जाते हैं। उनमें से कई माता-पिता, शिक्षकों और समाज के अन्य लोगों द्वारा या बड़ों द्वारा "सौंप दिए गए" हैं। अन्य सांस्कृतिक व्यवहार "बड़ों को" सौंप दिए जाते हैं।

उदाहरण के लिए, पहनावों की शैली, राजनीतिक विचार और हाल ही में श्रम की बचत करने वाले उपकरणों आदि का उपयोग आदि। कोई व्यक्ति अनायास व्यवहार पैटर्न प्राप्त नहीं करता है, बल्कि सब सीखता है। इसका मतलब है कि कोई उसे सिखाता है और वह सीखता है। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के लिए सीखने की अधिकांश प्रक्रिया काफी अचेतन, अनजाने, या आकस्मिक ही कर लेते हैं।

n) संस्कृति लगातार बदलने की प्रक्रिया में है (Culture is continuously in the process of changing)

संस्कृति का एक मौलिक और विशेष गुण असमान परिवर्तन का तथ्य है। कभी-कभी कुछ समाज धीरे-धीरे बदल जाते हैं, और इसलिए अन्य समाजों की तुलना में यह बिल्कुल नहीं बदल सकता है। लेकिन वे बदल रहे हैं, भले ही स्पष्ट रूप से ऐसा नहीं है।

o) संस्कृति चर है (Culture is Variable)

संस्कृति समाज से समाज, समूह से समूह में बदलती है। इसलिए, हम भारत या पाकिस्तान की संस्कृति कहते हैं। आगे की समान संस्कृति समाज के भीतर समूह से समूह में बदलती है। एक संस्कृति के भीतर उप-संस्कृतियां होती हैं। जो दोनों समाज की सामान्य संस्कृति पैटर्न-क्लस्टर से संबंधित हैं और इससे अलग होने को उप-संस्कृतियां कहा जाता है।

p) संस्कृति एक एकीकृत प्रणाली है (Culture is an integrated system)

संस्कृति एक आदेश और प्रणाली है। इसके विभिन्न भाग एक दूसरे के साथ एकीकृत हैं और जो भी नया तत्व पेश किया जाता है, वह भी एकीकृत है।

q) भाषा संस्कृति का मुख्य वाहन है (Language is the Chief Vehicle of Culture)

मनुष्य न केवल वर्तमान में, बल्कि अतीत और भविष्य में भी रहता है। वह ऐसा करने में सक्षम है क्योंकि उसके पास वह भाषा है जो उसे या उसके पास पहुँचती है और जो पहले से सीखी हुई है और उसे संचित ज्ञान को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने में सक्षम बनाती है। एक विशेष भाषा पैटर्न एक विशेष समूह या उपसंस्कृति के सदस्यों के लिए एक सामान्य बंधन के रूप में कार्य करता है। यद्यपि संस्कृति विभिन्न तरीकों से प्रसारित होती है, लेकिन भाषा सांस्कृतिक पैटर्न को बनाए रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण वाहनों में से एक है।

संस्कृति के विकास के लिए शिक्षा के कार्य (Education for the Development of Culture)

शिक्षा का कार्य समाज की प्रगति और निरंतर विकास के लिए सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों में आवश्यक और वांछनीय परिवर्तन लाना है, जिसके बिना सामाजिक प्रगति नहीं हो सकती। शिक्षा अपनी विविध गतिविधियों और कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृति की निरंतरता को बढ़ाती है।

1.2.5 सांस्कृतिक निर्धारक (Cultural Determinants)

अब छात्र! आपको किसी विशेष समाज की संस्कृति के बुनियादी आधारों यानी सांस्कृतिक-निर्धारकों को जानना चाहिए। निर्धारक अपनी संस्कृति के संदर्भ में किसी विशेष समाज के ठोस या अमूर्त व्यवहार हैं। किसी विशेष समाज के विभिन्न सांस्कृतिक निर्धारकों को निम्नानुसार दिया जाता है:-

- खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ
- कला और शिल्प, मिट्टी के बर्तन
- संगीत, नृत्य और साहित्यिक रुचियां
- फैशन, वेशभूषा और कपड़े
- परिवारों, प्रेमियों, दोस्तों आदि के बीच संबंध।
- भाषा जैसे हिन्दी
- क्षेत्र और धर्म
- अनुष्ठान, संस्कार, संस्कार, वर्जना और प्रतिबंध

1.2.6 संस्कृति के महत्वपूर्ण कार्य (Functions of Culture)

संस्कृति के कुछ महत्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित हैं:--

a) संस्कृति स्थितियों को परिभाषित करती है (Culture defines situations)

प्रत्येक संस्कृति में कई सूक्ष्म (बहुत छोटे) संकेत या संकेत होते हैं जो प्रत्येक स्थिति को परिभाषित करते हैं। इससे पता चलता है कि क्या किसी को लड़ने, दौड़ने, हंसने या प्यार करने के लिए तैयार होना चाहिए। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि कोई व्यक्ति आपके दाहिने हाथ से मित्रवत हाथ के स्तर पर फैला हुआ है। इसका मतलब है कि वह मित्रवत अभिवादन में हाथ मिलाना चाहता है। यह हमारी संस्कृति से परिचित किसी भी व्यक्ति के लिए स्पष्ट और ठीक है।

लेकिन किसी अन्य स्थान या समय में सामने वाले हाथ का मतलब दुश्मनी या चेतावनी हो सकता है। किसी को यह नहीं पता होता है कि जब तक उसने स्थिति को परिभाषित नहीं किया है तब तक क्या करना है। प्रत्येक समाज की अपनी लड़ाई होती है- शब्द, नाम और प्रसिद्धि शब्द। स्थिति को परिभाषित करने वाले संकेत अनंत विविधता में दिखाई देते हैं।

b) संस्कृति दृष्टिकोण, मूल्यों और लक्ष्यों को परिभाषित करती है (Culture defines attitudes, values and goals)

प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति में सीखता है कि अच्छा, सच्चा और सुंदर क्या है। दृष्टिकोण, मूल्य और लक्ष्य संस्कृति द्वारा परिभाषित किए गए हैं। और व्यक्ति सामान्य रूप से उन्हें अनजाने में सीखता है क्योंकि वह भाषा सीखता है। दृष्टिकोण कुछ तरीकों से महसूस करने और कार्य करने की प्रवृत्ति है, जबकि मूल्य अच्छाई या वांछनीयता के उपाय हैं, उदाहरण के लिए, हम निजी संपत्ति, सरकार और कई अन्य चीजों को महत्व देते हैं और इसके अनुभव करते हैं।

लक्ष्य वे प्राप्तियां हैं जिन्हें मूल्य हमारे योग्य के रूप में परिभाषित करते हैं, उदाहरण के लिए दौड़ जीतने के लिए, किसी विशेष व्यक्ति के स्नेह को प्राप्त करना, या कंपनी का अध्यक्ष बनना आदि ।

c) संस्कृति मिथकों, किंवदंतियों और अलौकिक विश्वासों को परिभाषित करती है (Culture defines myths, legends, and the supernatural believes)

मिथक और किंवदंतियां हर संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। वे प्रेरणा, प्रयास और बलिदान को सुदृढ़ कर सकते हैं और नुकसान या असंतोष में आराम ला सकते हैं। भूत उन लोगों के लिए वास्तविक हैं जो उन पर विश्वास करते हैं और जो इस विश्वास पर कार्य करते हैं। मिथकों, किंवदंतियों और अलौकिक मान्यताओं के बारे में कुछ भी जाने बिना हम किसी भी समूह के व्यवहार को समझ नहीं सकते हैं। मिथक और किंवदंतियाँ समूह के व्यवहार में शक्तिशाली ताकतें हैं।

संस्कृति भी व्यक्ति को तैयार दृष्टिकोण प्रदान करती है। महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दों और दिव्य शक्ति की प्रकृति को संस्कृति द्वारा परिभाषित किया गया है। एक ईसाई, बौद्ध, हिंदू, मुस्लिम या कुछ अन्य धार्मिक परंपरा के अनुसार प्रशिक्षित किया जाता है।

घ) संस्कृति व्यवहार पैटर्न प्रदान करती है (Culture provides behaviour patterns)

व्यक्ति को दर्दनाक परीक्षण और त्रुटि सीखने के माध्यम से यह जानने की ज़रूरत नहीं है कि खाद्य पदार्थ क्या खाया जा सकता है (खुद को जहर के बिना), या बिना डर के लोगों के बीच कैसे रहना है। वह तैयार पैटर्न का एक तैयार सेट पाता है, जिसका उसे इंतजार होता है, जिसे उसे केवल सीखने और

अनुसरण करने की आवश्यकता है। संस्कृति वैवाहिक जीवन का मार्ग दिखाती है। व्यक्ति को आश्चर्य नहीं होता कि कोई व्यक्ति एक साथी को कैसे सुरक्षित करता है; वह अपनी संस्कृति द्वारा परिभाषित प्रक्रिया जानता है।

एक समाज सही और गलत व्यवहार को परिभाषित करने के लिए नियमों या मानदंडों के बिना ट्रैफिक संकेतों या वाहनों के मिलने और गुजरने के किसी भी नियम के बिना भारी यात्रा वाली सड़क की तरह होगा। या तो मामले में अराजकता वाला परिणाम होगा। सामाजिक व्यवस्था इस धारणा पर नहीं टिक सकती है कि व्यक्ति सहज तरीके से सामाजिक सद्भाव के लिए अनुकूल तरीके से व्यवहार करेंगे।

1.2.1 सांस्कृतिक परिवर्तन (Cultural Change)

आप पहले से ही जानते हैं कि शिक्षा और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और एक दूसरे से अविभाज्य हैं। संस्कृति समाज के मानदंडों का निर्माण करती है जहां आचरण का तरीका शिक्षा द्वारा निर्धारित किया जाता है। शिक्षा संस्कृति के प्रसार में सहायता करती है। वैश्वीकरण सांस्कृतिक परिवर्तन ला रहा है जो शिक्षा के प्रतिमान को प्रभावित कर रहा है। प्रत्येक संस्कृति को मूल्यों और मानदंडों के हस्तांतरण के लिए शिक्षा के एक विशिष्ट तरीके की आवश्यकता होती है। शिक्षा की सांस्कृतिक-सामग्री भी शैक्षिक-संरचना को बदल रही है। जबकि वैज्ञानिक और तकनीकी आविष्कारों के कारण सामग्री-संस्कृति तेज गति से विकसित होती है जहां गैर-भौतिक संस्कृति के रूप में विचारों, मूल्यों और मानदंडों से युक्त होती है। यह गैर-भौतिक संस्कृति पीछे रह जाती है और दोनों के बीच एक खाई पैदा करती है। शिक्षा ही एकमात्र साधन है जिसके द्वारा इस खाई को पाटा जा सकता है।

शिक्षा के आधुनिकीकरण और अपनी संस्कृति से शिक्षा को विकसित करने के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण की आवश्यकता है। भारत फिर से एक नए पुनर्जागरण के वादे के साथ आगे बढ़ रहा है। इस पुनर्जन्म और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में सबसे शक्तिशाली उपकरण एक ओर नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों और दूसरी ओर विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित शिक्षा है। आइए हम अपनी

सारी शक्ति और शक्ति के साथ औद्योगिक प्रगति के लिए अपने मार्ग का अनुसरण करें और याद रखें कि एक ही समय में, बिना पदार्थ और करुणा और ज्ञान के जो धन समृद्ध होता है ,धूल और राख में बदल सकता है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि नई पीढ़ी को संस्कृति को प्रसारित करना चाहिए और क्रॉस-सांस्कृतिक प्रभावों के संदर्भ में शिक्षा से व्यक्ति और समाज की भविष्य की आवश्यकताओं के प्रकाश में जीवन के प्रति युवा के दृष्टिकोण को बदलना चाहिए ।

1.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

आत्म मूल्यांकन

निम्न वाक्यों के समक्ष "T/F" लिखें

i) शिक्षा और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं "T/F"

ii) मिथक और किंवदंतियां हर संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। "T/F"

iii) मनुष्य न केवल वर्तमान में, बल्कि अतीत और भविष्य में भी रहता है। "T/F"

iv) संस्कृति बातचीत में समाज का निर्माण है और समाज की निरंतरता पर इसके अस्तित्व के लिए निर्भर करता है। "T/F"

v) सभी व्यवहार को सीखा जाता है "T/F"

vi) दो संस्कृतियां समान हावभाव का उपयोग कर सकती हैं, लेकिन इसके दोनों संस्कृतियों में अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं । "T/F"

कृपया उत्तर की पड़ताल पाठ के अंतिम हिस्से 1.3 में करेंI

1.5 सारांश (Summary)

सारांश में, संस्कृति को भाषा, मानदंडों, मूल्यों, विश्वासों और अधिक के रूप में एक साथ परिभाषित किया जा सकता है, संस्कृति लोगों के जीवन का एक तरीका है। यह मानव होने का एक अनिवार्य हिस्सा है। हालांकि कई तत्व हैं और संस्कृति के पहलुओं, वे सभी को सामग्री या गैर-सामग्री के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है । भौतिक संस्कृति में सभी भौतिक चीजें शामिल हैं जो लोग अर्थ बनाते हैं औरसेवा संलग्न करते हैं । गैर-भौतिक (नोन-मेटर) संस्कृति में ऐसी रचनाएँ और अमूर्त विचार शामिल हैं जो भौतिक वस्तुओं के रूप से सन्निहित नहीं हैं । संस्कृति शब्द का उपयोग अक्सर राष्ट्र और समाज के लिए एक पर्याय के रूप में किया जाता है, लेकिन वे एक ही चीज़ नहीं हैं। एक राष्ट्र नामित सीमाओं वाला एक क्षेत्र है। एक समाज एक आबादी है जिसमें लोग और साझा हित बातचीत करते हैं दूसरी ओर संस्कृति, लोगों के जीवन जीने का साझा तरीका है। संस्कृति एक समाज में यह एक हो सकता है, एक ही पाया जाता है, और इसे समाजों के बीच भी एक ही साझा किया जा सकता है।

आपने अध्ययन किया है कि समाज व्यक्तियों का एक संगठित समूह है। एक संस्कृति सीखी गई प्रतिक्रियाओं का एक संगठित समूह है। एक समाज संस्कृति से अलग नहीं हो सकता। एक समाज हमेशा व्यक्तियों और उनके समूहों से बना होता है। लोग संस्कृति को लेते हैं और प्रसारित करते हैं, लेकिन वे सुसंस्कृत नहीं हैं। कोई भी संस्कृति अस्तित्व में नहीं हो सकती है, क्योंकि यह मनुष्य के समाज में सन्निहित है; कोई भी समाज सांस्कृतिक निर्देशों के बिना काम नहीं कर सकता है। पदार्थ और ऊर्जा की तरह या मन और शरीर की तरह, वे मानव सेटिंग्स में एक दूसरे के अन्योन्याश्रित और पूरक हैं।आपने सांस्कृतिक संदर्भ में संस्कृति के अर्थ, उसकी प्रकृति और शिक्षा की भूमिका को समझा। हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि संस्कृति और समाज के बीच अन्योन्याश्रय और पारस्परिक संबंध अविभाज्य है। प्रत्येक अलग-अलग अवधारणा है, जिसमें किसी भी अन्य घटक भागों की तुलना में पूरे का संगठन अधिक महत्वपूर्ण है। संस्कृति में हमारे समाज के मूल्य, मानदंड और मान्यताएँ शामिल हैं। संस्कृति भौतिक और गैर-भौतिक दोनों भागों से बनी है। भौतिक संस्कृति इमारतों

और कारों जैसी भौतिक चीजों से बनी है। गैर-भौतिक संस्कृति के सात घटक इशारों, भाषा, मूल्य, मानदंड, प्रतिबंध, लोकमार्ग, और बहुत कुछ हैं ।

फिर से आपने शिक्षा और संस्कृति के बारे में ज्ञान प्राप्त किया है जो एक दूसरे पर निर्भर और पूरक हैं। हालाँकि, भारत में शिक्षा की मौजूदा प्रणाली अपनी संस्कृति से विकसित नहीं हुई है। जरूरत इस बात की है कि शिक्षा का संबंध हमारी अपनी संस्कृति से होना चाहिए। शिक्षा प्रणाली को सांस्कृतिक विरासत से संबंधित होना चाहिए। यह अभी भी अकादमिक और पुस्तक-केंद्रित है और उचित तर्ज पर सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक या राजनीतिक विकास को बढ़ावा देने में विफल है। भारत की सांस्कृतिक विरासत को ध्यान में रखे बिना भारत में शिक्षा की एक विदेशी प्रणाली शुरू की गई थी। यह भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं से मेल नहीं खा रहा है और जनता के लिए अलग-थलग है।

इस अध्याय के बाद के चरण में, आपको शिक्षा और सांस्कृतिक निर्धारकों के बारे में अच्छी जानकारी मिली। अंत में, सांस्कृतिक परिवर्तन का वर्णन किया गया है जिसमें आपने भौतिक संस्कृति, गैर-भौतिक संस्कृति और संबंधित घटना में प्रगति का अध्ययन किया है और संस्कृति के रूप का अध्ययन किया गया था।

संस्कृति को समाप्त करने के लिए आगे वह सब कुछ है जो समाज के सदस्यों द्वारा सामाजिक रूप से सीखा और साझा किया जाता है। दुनिया के व्यापक फोकस में, यह संस्कृति है, जो व्यक्ति से अलग, समूह और समाज से अलग है। हम एक विविध दुनिया में रहते हैं जहाँ हर हिस्से में विशिष्ट सांस्कृतिक प्रथाएँ हैं। संस्कृति का अर्थ और व्याख्या करने के लिए अलग है लेकिन मूल रूप से यह समाज की संरचना से उपजा है। यह समाज का एक अभिन्न अंग है जिसमें कोई रहता है और यही शिक्षा है।

1.6 सूचक शब्द (Keywords)

- **संस्कृति:** संस्कृति मानव समाज में पाया जाने वाला सामाजिक व्यवहार और मानदंड है
- **शिक्षा:** शिक्षा सीखने की सुविधा की प्रक्रिया है।

- **समाज:** यह सामाजिक संबंधों का जाल है।
- **सांस्कृतिक निर्धारक**: सांस्कृतिक निर्धारक प्रभाव डालने वाले कारक हैं।
- **सांस्कृतिक परिवर्तन**: समाज के किसी भी पहलू में परिवर्तन को सांस्कृतिक-परिवर्तन कहा जाता है।

1.7 स्व-मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

- संस्कृति क्या है? यह समाज के साथ कैसे जुड़ा है।
- संस्कृति की प्रकृति पर चर्चा करें?
- सांस्कृतिक संदर्भ में शिक्षा की भूमिका स्पष्ट करें। अपने उत्तर को प्रासंगिक उदाहरणों की सहायता से सपोर्ट करें।
- सांस्कृतिक परिवर्तन को परिभाषित करें।
- एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को ढालने में संस्कृति के महत्व को बताएं
- संस्कृति के विभिन्न कार्य क्या हैं?
- उप संस्कृति व विभिन्न प्रकार की उप- संस्कृति पर एक नोट लिखें
- शिक्षा पर संस्कृति के प्रभाव से आप क्या समझते हैं?
- समाज में परिवर्तन लाने के लिए सांस्कृतिक निर्धारकों और उनकी भूमिका की व्याख्या करें।

1.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

उत्तर: निम्न वाक्यों के समक्ष "T/F" लिखें ।

i) T, ii) T, iii) T, iv) T, v) F, vi) T

1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

- Basic Concepts of Education by Arung, Fernades , www.linkedin.com

- Indian Political System (4th Ed.) By Roy, H and Singh, M.P. , Pearson India Education Services
- History of Social thought by K.Singh, Prakashan Kendra, Lucknow.
- Principles of Political Science by Anup C, Kanpur, S. Chand and Company.
- Sociology: An Introduction by Smelser, Neil, J.,Wiley Eastern Private Limited
- Sociology: Principles of sociology with an introduction to social thought by Shanker Rao C.N., S. Chand and Company.

Subject : Sociology(Society, Culture and Social Change)	
Course Code **: SOCL 102**	Author **: Dr. Shakuntla Devi**
Lesson No. **: 02**	Updated by: **Self**
Societies: Types and Characteristics- Tribal, Urban, industrial and Post Industrial(सोसाइटीज: प्रकार और विशेषताएं- जनजातीय, शहरी, औद्योगिक और पोस्ट औद्योगिक)	

<u>अध्याय की संरचना</u>

2.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

2.1 प्रस्तावना (Introduction)

2.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

2.2.1 समाज का अर्थ (Meaning of Society)

2.2.2 समाज की परिभाषा (Definition of Society)

2.2.3 समाज की विशेषताएँ (Features of Society)

2.2.4 समाज के प्रकार (Types of Society)

a) आदिवासी (Tribal Society)

b) कृषि (Agriculture)

c) शहरी समाज(Urban Society)

d) औद्योगिक समाज (Industrial Society)

e) पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसायटी (Post-Industrial Society)

2.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

2.3.1 आदिवासी समाज (Tribal Society)

2.3.2 जनजाति के मुख्य लक्षण (Characterstics of Tribes)

2.3.3 जनजातीय समाज की संरचना और विशेषताएं (Structure and Features of tribal Society)

2.4 शहरी समाज (Urban Society)

2.4.1 शहरी समाज के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Urban Society)

2.4.2 शहरी समाज की अवधारणा (Concept of Urban Society)

2.4.3 शहरीकरण (Urbanisation)

2.5औद्योगिक समाज (Industrial Society)

2.5.1 औद्योगिक समाज की विशेषताएं (Characteristics of Industrial Society)

2.5.2 पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसायटी (Post-industrial Society)

2.5.3 पोस्ट-इंडस्ट्रियलिज़्म के आवश्यक लक्षण (Features of Post-Industrialism)

2.6 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

2.7 सारांश (Summary)

2.8 सूचक शब्द (Keywords)

2.9 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

2.10 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

2.11 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

2.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय की पढ़ाई करने के बाद आप निम्न में सक्षम हो जाएगे और आप निम्न कर सकेंगे:

- समाज और समाजशास्त्र की बुनियादी समझ होगी ।
- छात्रों को विभिन्न समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों से परिचित होंगे ।
- प्रीइंडस्ट्रियल, इंडस्ट्रियल और पोस्टइंडस्ट्रियल सोसाइटी के बीच अंतर का वर्णन कर सकेंगे ।
- पर्यावरणीय औद्योगिक समाजों की भूमिका को समझें गे ।
- समझेंगे कि प्रौद्योगिकी सामाजिक विकास को कैसे प्रभावित करती है ।

2.1प्रस्तावना (Introduction)

व्यक्ति समाज का मूल घटक है। एक दूसरे के साथ व्यक्तियों का परस्पर संवाद समूह को जन्म देता है। सामाजिक समूह एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं और एक-दूसरे के साथ संबंध विकसित करते हैं, समाज का नेतृत्व करते हैं। फुटबॉल या अन्य खेलों में शामिल खिलाड़ी एक समाज नहीं हैं, बल्कि लोगों का एक समूह हैं। समाज के भीतर समानता और मतभेद के आधार पर पैटर्न और समूह होते हैं। "समानता" एक ही पेशे, समान निवास, समान जाति, परिवार और रिश्तेदारी, कॉलेज, आयु, लिंग आदि जैसे एक या अधिक स्थितियों में समानता वाले व्यक्तियों के बीच संबंधों की एक श्रृंखला बनाता है। "

चेतना विकसित होती है और समान हितों के लोग विभिन्न समूहों और श्रेणियों के निर्माण में एक साथ सरसराहट में शामिल हो जाते हैं। किसी समाज की सांस्कृतिक स्थितियों में अंतर के बिना मानव जीवन नीरस और सीमित होता है। जिसमें थोड़ा परिवर्तन अनुमानित है। संबंध और संपर्क देने और लेने की प्रणाली मानव जीवन में पारस्परिक भूमिका बनाती है। ये अंतर मानव व्यवहार और श्रम के विशेषज्ञता की प्रक्रिया का विकास होता है। सामाजिक विभाजन की विविधता को जन्म देते हैं। मनुष्य बुनियादी जरूरतों यानी भोजन, सुरक्षा, शिक्षा इत्यादि की पूर्ति के लिए समाज पर निर्भर है । समाज स्थानीय स्तर के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी हैं।

अठारहवीं शताब्दी में, यूरोप ने तकनीकी आविष्कार में एक नाटकीय वृद्धि का अनुभव किया, जिसे औद्योगिक क्रांति के रूप में जाना जाता था। इस अवधि को उल्लेखनीय बनाने वाले नए आविष्कारों की संख्या थी जिसने लोगों के दैनिक जीवन को प्रभावित किया। औद्योगिक क्रांति से पहले, मानव-कार्य काफी हद तक श्रमिकों या घोड़ों, व्यक्ति या पशु आधारित था, और वर्तमान में बिजली मिलों और ड्राइव पंपों पर निर्भर करता है।

1782 में, जेम्स वाट और मैथ्यू बोल्टन ने एक भाप इंजन बनाया जो स्वयं बारह घोड़ों का काम कर सकता था।हर जगह भाप की शक्ति दिखाई देने लगी। कारीगरों को श्रमसाध्य ऊन का भुगतान करने और कपड़े में बुनाई करने के बजाय, लोगों ने कपड़ा मिलों की ओर रुख किया, अक्सर जो बेहतर मूल्य और बेहतर गुणवत्ता के साथ कपड़े का उत्पादन करते थे । हाथ से खेतों को बोने और कटाई करने के बजाय, किसान यांत्रिक बीजों और थ्रेशिंग मशीनों को खरीदने में सक्षम थे जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ गई। कागज और कांच जैसे उत्पाद औसत व्यक्ति के लिए उपलब्ध हो गए, और शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की गुणवत्ता और पहुंच बढ़ गई। गैस की रोशनी ने अंधेरे में दृश्यता बढ़ाने की अनुमति दी, और कस्बों और शहरों ने एक नाइटलाइफ़ विकसित किया।

बढ़ी हुई उत्पादकता और प्रौद्योगिकी के परिणामों में से एक शहरी केंद्रों का उदय हुआ था। श्रमिकों ने नौकरियों के लिए कारखानों में भाग लिया, और शहरों की आबादी तेजी से विविध हो गई। नई पीढ़ी पारिवारिक भूमि और परंपराओं को बनाए रखने के लिए अरुचिकर हो गई।अधिक धन प्राप्त करने,

अपने और अपने परिवार के लिए ऊपर की ओर गतिशीलता प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया। लोग चाहते थे कि उनके बच्चे और उनके बच्चों के बच्चे सबसे ऊपर की ओर बढ़ते रहे, और जैसे-जैसे पूंजीवाद बढ़ता गया, वैसे-वैसे सामाजिक गतिशीलता भी बढ़ती गई।

यह औद्योगिक क्रांति के अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान समाजशास्त्र का जन्म हुआ था। जीवन तेजी से बदल रहा था और कृषि युगों की लंबे समय से स्थापित परंपराएं बड़े शहरों में जीवन पर लागू नहीं होती थीं। लोगों का जीवन नए वातावरण की ओर बढ़ रहा था और अक्सर खुद को गन्दगी, भीड़भाड़ और गरीबी की भयावह स्थितियों से सामना करते पाया। समग्र रूप से सामाजिक वैज्ञानिक समाज और समाज के व्यक्तिगत सदस्यों के बीच संबंधों का अध्ययन करने के लिए उभरे। यह उस समय के दौरान था जब सत्ता ने अभिजात वर्ग के हाथों और "पुराने पैसे" को व्यापार-प्रेमी नए लोगों के लिए स्थानांतरित कर दिया, जिन्होंने अपने जीवन काल में भाग्य को चमकाया। रॉकफेलर्स और वेंडरबिल्ट जैसे परिवार नए बिजली खिलाड़ी बन गए और सरकार के पहलुओं को नियंत्रित करने के लिए व्यवसाय में अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया। आखिरकार, श्रमिकों के शोषण पर चिंता के कारण श्रमिक संघों और कानूनों का गठन हुआ, जिन्होंने कर्मचारियों के लिए अनिवार्य शर्तें निर्धारित कीं। यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में नई तकनीक की शुरुआत ने औद्योगिक युग को समाप्त कर दिया। औद्योगिक समाज में हमारी सामाजिक संरचना और सामाजिक विचारों में परिवार और समय मानकीकरण आदि एक आधार है

2.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

2.2.1 समाज का अर्थ (Meaning of Society)

यह शब्द एक लैटिन शब्द 'सोशियस' से लिया गया है जिसका अर्थ है संघ या साहचर्य। इस प्रकार समाज का अर्थ है व्यक्तियों का एक बड़ा समूह, जो एक-दूसरे के साथ सहयोगी हैं '।

भारतीय समाज को मोटे तौर पर आदिवासी, ग्रामीण और शहरी समाजों में उनके भौगोलिक परिवेश और सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर विभाजित किया गया है। ... दूसरी ओर, ग्रामीण समाज ग्राम समाज हैं, जो मुख्य रूप से जाति, अतीत के प्रति लगाव, साथ ही कृषि अर्थव्यवस्था पर आधारित हैं।

ऐसे लोगों का समूह जो एक निश्चित समुदाय में रहते हैं और समान संस्कृति साझा करते हैं

समाजशास्त्रियों के अनुसार, एक समाज सामान्य क्षेत्र, सहभागिता और संस्कृति वाले लोगों का एक समूह है। सामाजिक समूहों में दो या दो से अधिक लोग होते हैं जो आपस में बातचीत करते हैं और पहचानते हैं। अधिकांश देशों की औपचारिक सीमाएँ और क्षेत्र हैं जिन्हें दुनिया उनके रूप में पहचानती है।

व्यक्ति समाज का मूल घटक है। एक दूसरे के साथ व्यक्तियों का परस्पर संवाद समूह को जन्म देता है। सामाजिक समूह एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं और एक-दूसरे के साथ संबंध विकसित करते हैं, समाज का नेतृत्व करते हैं। फुटबॉल या अन्य खेलों में शामिल खिलाड़ी एक समाज नहीं हैं, बल्कि लोगों का एक समूह हैं। समाज के भीतर समानता और मतभेद के आधार पर पैटर्न और समूह होते हैं। "समानता" एक ही पेशे, समान निवास, समान जाति, परिवार और रिश्तेदारी, कॉलेज, आयु, लिंग आदि जैसे एक या अधिक स्थितियों में समानता वाले व्यक्तियों के बीच संबंधों की एक श्रृंखला बनाता है। "

2.2.2 समाज की परिभाषा (Definitions of Society)

समाजशास्त्रियों के अनुसार, समाज की कुछ परिभाषाएँ हैं, जो निम्नलिखित हैं:--

- **ग्रीन** ने समाज की अवधारणा की जो व्याख्या की है उसके अनुसार समाज एक बहुत बड़ा समूह है जिसका व्यक्ति सदस्य होता है। समाज जनसंख्या, संगठन, समय,स्थान और स्वार्थों से बना होता है।
- **एडम स्मिथ के अनुसार** - मनुष्य ने पारस्परिक लाभ के निमित्त जो कृत्रिम उपाय किया है वह समाज है।

- **डॉ0 जेम्स के अनुसार** मनुष्य के शान्तिपूर्ण सम्बन्धों की अवस्था का नाम समाज है।
- **प्रो0 गिडिंग्स के अनुसार** - समाज स्वयं एक संघ है, यह एक संगठन है और व्यवहारों का योग है, जिसमें सहयोग देने वाले व्यक्ति एक-दूसरे से सम्बंधित है।
- **प्रो0 मैकाइवर के अनुसार** - समाज का अर्थ मानव द्वारा स्थापित ऐसे सम्बंधों से है, जिन्हें स्थापित करने के लिये उसे विवश होना पड़ता है।

ठोस शब्दों में समाज: "एक समाज" (A Society)

जब समाज को ऐसे व्यक्तियों के दृष्टिकोण से देखा जाता है जो इसका गठन करते हैं, तो यह सामान्य रूप में समाज 'के बजाय सोसाइटी (समाज)' का आकार लेता है। एक समाज मनुष्य की सबसे बड़ी संख्या है जो अपनी सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बातचीत करते हैं और जो एक साझा संस्कृति को साझा करते हैं। "एक समाज को एक इकाई के रूप में देखे जाने और एक सामान्य संस्कृति को साझा करने वाले प्रमुख समूहों के एक नेटवर्क के रूप में परिभाषित किया जा सकता है" (जे.एच. फिक्सर, समाजशास्त्र, 1351)।

समाज की एक समान परिभाषा इयान रॉबर्टसन (समाजशास्त्र, 1311) द्वारा दी गई है:

"एक समाज एक ही क्षेत्र को साझा करने वाले व्यक्तियों और एक संस्कृति में भाग लेने वाले व्यक्तियों के परस्पर संवाद का एक समूह है।" 'समाज की यह परिभाषा निम्नलिखित पृष्ठों में बताई गई समुदाय की परिभाषा के काफी पीछे है। इस प्रकार, एक समाज सामान्य रूप से समाज से अलग होता है; समाज एक ऐसा संगठन है जो लोगों को एक सामान्य जीवन जीने में सक्षम बनाता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है, समाज एक उद्देश्यपूर्ण समूह होता है, जो किसी एक क्षेत्र में बनता है, उसके सदस्य एकत्व एवं अपनत्व में बंधे होते हैं।

2.2.3 समाज की विशेषताएँ (Features of Society)

i. **समाज अमूर्त है (Society is Abstract)**

यदि समाज को सामाजिक संबंधों के वेब के रूप में देखा जाता है, तो यह भौतिक इकाई से अलग है जिसे हम इंद्रियों के माध्यम से देख और अनुभव कर सकते हैं। जैसा कि पहले लिखा गया था, मैकलेवर ने तर्क दिया, "हम लोगों को देख सकते हैं लेकिन समाज या सामाजिक संरचना को नहीं देख सकते हैं, इसके केवल बाहरी पहलू हैं"। सामाजिक संबंध अदृश्य और अमूर्त होते हैं। हम सिर्फ उन्हें महसूस कर सकते हैं लेकिन उन्हें देख या छू नहीं सकते। इसलिए समाज अमूर्त है। रेउटर ने लिखा: "जैसे जीवन एक चीज नहीं है, बल्कि जीवन जीने की प्रक्रिया है, इसलिए समाज एक चीज नहीं है, बल्कि एक प्रक्रिया है"।

ii. समाज में समानता और अंतर (Similarities and Dis-similarities in Society)

समाज में समानता और अंतर दोनों शामिल हैं। अगर लोग बिलकुल एक जैसे हैं, केवल एक जैसे हैं, तो उनके रिश्ते सीमित होंगे। और थोड़ा पारस्परिकता,थोड़ा देना और लेना होगा । यदि सभी लोग एक जैसे सोचते थे, एक जैसे महसूस करते थे, और समान रूप से कार्य करते थे, यदि उनके पास समान मानक और समान हित होते, यदि वे सभी एक ही रीति-रिवाजों को स्वीकार करते और बिना किसी प्रश्न के और बिना भिन्नता के समान मतों को गूँजा हुआ महसूस करते तो सभ्यता कभी उन्नत और अल्पविकसित रहा। इस प्रकार समाज को अपने अस्तित्व और निरंतरता के लिए भी अंतर की आवश्यकता है।

हम परिवार के सबसे परिचित उदाहरण के माध्यम से इस बिंदु का वर्णन कर सकते हैं। परिवार लिंगों के बीच जैविक अंतर पर टिका हुआ है। प्राकृतिक अंतर अभिरुचि, क्षमता , रुचि हैं। उन सभी के लिए रिश्ते शामिल हैं जिनमें अंतर एक दूसरे के पूरक हैं, जिसमें अदल–बदल और लेन–देन होता है।

समानता और तार्किक अंतर विपरीत हैं लेकिन दूसरे से समानता को समझने के लिए, इसके संबंध की समझ आवश्यक है। समाज उन लोगों के बीच मौजूद है जिनके पास मन और शरीर में समानता की कुछ डिग्री है। एफ.एच. गिडिंग्स ने समाज के इस गुण को "दयालुता की चेतना" (समानता की भावना) कहा है। यद्यपि समानता और अंतर दोनों समाज के

अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं, लेकिन समाज में समानता के लिए अंतर हमेशा अधीनस्थ है। समानता का समाज के संविधान में एक प्रमुख हिस्सा है।

iii.) समाज में सहयोग और संघर्ष (Cooperation and struggle in Society)

सहयोग और संघर्ष मानव जीवन में सार्वभौमिक तत्व हैं। समाज सहयोग पर आधारित है लेकिन आंतरिक मतभेदों के कारण, इसके सदस्यों में भी संघर्ष है। यही कारण है, समाजशास्त्री मैकवर और पेज ने देखा कि "समाज सहयोग संघर्ष से पार है"। हम अपने स्वयं के अनुभव से जानते हैं कि यदि एक व्यक्ति विकलांग हो जाएगा और नीचा दिखाया जाएगा वह निराश महसूस करेगा उसे दूसरों की सहायता के बिना अकेले सब कुछ करने की उम्मीद है। "सहयोग सामाजिक जीवन की सबसे प्राथमिक प्रक्रिया है जिसके बिना समाज असंभव है" (गिस्बर्ट, 1351)।

यद्यपि समाज के गठन के लिए सहयोग आवश्यक है, लेकिन मॉडेम संघर्ष सिद्धांतकारों (जैसे मार्क्स) ने समाज में संघर्ष की भूमिका पर प्रकाश डाला है। यदि कोई संघर्ष नहीं है, यहां तक कि छोटे उपाय में भी, समाज स्थिर हो सकता है और लोग निष्क्रिय हो सकते हैं। हालांकि, संघर्ष के रूप में असहमति की अभिव्यक्ति हमेशा सहनीय सीमा के भीतर होनी चाहिए।

iv.) **समाज एक प्रक्रिया है और उत्पाद नहीं (Society is a process not a product)**

मैकलेवर एंड पेज के अनुसार “समाज केवल समय के अनुक्रम के रूप में मौजूद है। यह बन रहा है, एक नहीं है; एक प्रक्रिया और एक उत्पाद नहीं” । दूसरे शब्दों में, जैसे ही प्रक्रिया बंद हो जाती है, उत्पाद गायब हो जाता है। मशीन के खराब होने के बाद मशीन का उत्पाद खत्म हो जाता है। कुछ हद तक वही है जो न केवल मनुष्य की पिछली संस्कृति के भौतिक अवशेषों का है, बल्कि उसकी सार-हीन सांस्कृतिक उपलब्धियों का भी है।

v.) **स्तरीकरण की प्रणाली के रूप में समाज (Society in the form of Socialisation)**

समाज उन स्थितियों और वर्गों के स्तरीकरण की एक प्रणाली प्रदान करता है जो प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक संरचना में अपेक्षाकृत स्थिर और पहचानने योग्य स्थिति होती है। यह ठोस है, भौतिक वास्तविकता है और व्यक्तियों का एक समुच्चय है जबकि समाज अमूर्त है और व्यक्तियों और व्यक्तियों के योग से अधिक है। यह संघों के पूरे नक्षत्र को संदर्भित करता है जो लोगों की विशेषता है। जब हम भारतीय समाज, फ्रांसीसी समाज या अमेरिकी समाज के बारे में बात करते हैं, तो हमारे दिमाग में आमतौर पर 'एक समाज 'का विचार आता है

2.2.3 समाज के प्रकार (Types of Society)

समाज के प्रकार निम्नलिखित हैं:--

i. आदिवासी (Tribal Society),

ii. कृषि (Agriculture),

iii. शहरी समाज(Urban Society)

iv. औद्योगिक समाज (Industrial Society)और

v. पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसायटी (Post-Industrial Society)

यह ग्रह जिस पर मनुष्य रहता है एक दूसरे के साथ सामाजिक संबंधों में लोगों से बना है। यह विशिष्ट समाजों में टूट जाता है जहां एक सामान्य संस्कृति वाले लोग अपनी अन्योन्याश्रितता (एक दूसरे पर आश्रित) के आधार पर साझा जीवन जीते हैं। इस ग्रह पर हर जगह समाज का प्रकार समान नहीं है और न ही यह मानव इतिहास के दौरान समान है। इस ग्लोब पर तीन मुख्य प्रकार के समाज आदिवासी, कृषि और औद्योगिक को चिह्नित किया गया है। अफ्रीकी समाज आदिवासी है; भारतीय समाज कृषि प्रधान है जबकि अमेरिकी समाज औद्योगिक है। इन समाजों की संरचना और विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

2.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

2.3.1 आदिवासी समाज (Tribal Society)

इससे पहले कि हम आदिवासी समाज की संरचना और विशेषताओं की जांच करें, यह शब्द "जनजाति" के अर्थ को समझने के लिए प्रासंगिक होगा जैसा कि समाजशास्त्र में उपयोग किया जाता है।

जॉर्ज पीटर मर्डॉक के अनुसार, जनजाति एक सामाजिक समूह है जिसमें कई वंश, घुमंतू बैंड, गाँव या अन्य उप-समूह होते हैं, जिनमें आमतौर पर एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र, एक अलग भाषा, एक विलक्षण और विशिष्ट संस्कृतिया कम से कम अजनबियों के खिलाफ आम दृढ़ संकल्प की भावना या एक सामान्य राजनीतिक संगठन होता है। ।

जैसा कि भारत के इंपीरियल गजट में परिभाषित किया गया है, एक जनजाति एक सामान्य नाम रखने वाले परिवारों का एक संग्रह है, जो एक सामान्य बोली बोलता है, एक सामान्य क्षेत्र पर कब्जा करने या रखने के लिए पेश करता है और आमतौर पर यह स्थान नहीं है, हालांकि मूल रूप से ऐसा हो सकता है।" बोगार्डस के अनुसार, "जनजातीय समूह सुरक्षा की आवश्यकता पर, रक्त संबंधों पर और एक सामान्य धर्म के बल पर आधारित है।"

जनजाति एक निश्चित क्षेत्र, सामान्य बोली, सामान्य नाम, सामान्य धर्म और एक सामान्य संस्कृति वाले व्यक्तियों का एक समूह है। वे रक्त संबंध (Blood Relation) से एकजुट हैं और एक अजीब राजनीतिक संगठन है।

2.3.2 जनजाति के मुख्य लक्षण (Characterstics of Tribes)

जनजाति के मुख्य लक्षण निम्नलिखित हैं:

(i) सामान्य क्षेत्र (Common Area)

जनजाति एक सामान्य क्षेत्र में रहती है।

(ii) एकता की भावना (Spirit of Unity)

एक जनजाति के सदस्यों में एकता की भावना होती है।

(iii) सामान्य भाषा (Common Language)

एक जनजाति के सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते हैं।

(iv) एंडोगामस (Endogamous):

एक जनजाति एक समूह है।

(v) रक्त संबंध (Blood Relations):

एक जनजाति के सदस्य रक्त से संबंधित हैं।

(vi) राजनीतिक संगठन (Political Organisation)

प्रत्येक जनजाति का अपना राजनीतिक संगठन होता है। जनजाति का एक प्रमुख होता है जो जनजाति के सभी सदस्यों पर अधिकार करता है।

(vii) धर्म का महत्व (Importance of Religion)

आदिवासी संगठन में धर्म एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक जनजाति के सदस्य एक सामान्य पूर्वज की पूजा करते हैं।

(viii) सामान्य नाम (Common Name)

जनजाति का एक सामान्य नाम है। कबीले से एक जनजाति अलग है। कबीले का कोई निश्चित क्षेत्र नहीं है और न ही कोई आम भाषा है और यह एक बहिष्कृत समूह है।

जनजाति, जाति से अलग होती है (Difference between Caste and Tribes)

(i) जनजाति एक क्षेत्रीय समूह है, जबकि जाति एक सामाजिक समूह है,

(ii) जाति का जन्म श्रम विभाजन के आधार पर हुआ, जनजाति एक समूह में एक समुदाय के विकास की भावना के कारण आई। भौगोलिक क्षेत्र,

(iii) जनजाति एक राजनीतिक संगठन है, जबकि जाति कभी एक राजनीतिक संगठन नहीं है।

2.3.3 जनजातीय समाज की संरचना और विशेषताएं (Structure and Features of tribal Society)

जनजाति के अर्थ पर गौर करने के बाद, अब हम आदिवासी समाज की संरचना और विशेषताओं की व्याख्या कर सकते हैं।एक आदिवासी समाज एक प्रकार का आदिम समाज है जो मानव इतिहास के प्रारंभिक काल में मौजूद था, हालांकि यह आज भी अफ्रीका, एशिया और यूरोप के पिछड़े क्षेत्रों में पाया जा सकता है।

(i) आर्थिक संरचना (Economic Structure)

आदिवासी समाज में लोग भौतिक वातावरण के करीब रहते हैं जो उनका समर्थन करता है और उनकी आर्थिक गतिविधि निर्धारित करता है। उनकी मुख्य आर्थिक गतिविधि शिकार और भोजन एकत्र करना है। कुछ आदिवासी समाज मुख्य रूप से शिकार पर निर्भर हैं। संयंत्र-सभा के माध्यम से कुछ पूरकता को छोड़कर, वे न केवल भोजन के लिए बल्कि आश्रय, कपड़े और उपकरणों के लिए भी जानवरों पर निर्भर हैं। इसलिए उनकी मुख्य तकनीक में शिकार जानवरों को कुछ आदिवासी समाज शिकार के बजाय मुख्य रूप से जड़ें, जंगली अनाज और जंगली फल भोजन पर निर्भर हैं। खाद्य, आश्रय और कपड़े और बुनियादी उपकरणों के कौशल प्रसंस्करण की तकनीक शामिल है। छाल और पौधों के तंतुओं की बुनाई से मैट और आवास प्राप्त होते हैं। लकड़ी का उपयोग औजार और हथियार बनाने में किया जाता है।

आदिवासी समाजों में साधारण लिंग से परे श्रम का विभाजन उम्र के भेदभाव लगभग न के बराबर है। महिलाएं आमतौर पर घर की देखभाल करती हैं, होती हैं और भोजन इकट्ठा और तैयार करती हैं और बच्चों के लिए जिम्मेदार होती हैं। पुरुष जब आवश्यक हो, दुश्मनों से लड़ते हैं और आदिवासी समारोहों में भाग लेते हैं।

प्रत्येक आदिवासी समूह का अपना खाद्य आपूर्तिकर्ता है। व्यापार द्वारा प्राप्त कुछ वस्तुओं को छोड़कर, परिवार के लिए हर चीज की जरूरत होती है- कपड़े, जूते, कंटेनर, उपकरण। आदिवासी समूह में उत्पादन में विशेषज्ञता यदि कोई हो तो बहुत अल्पविकसित रूप में मौजूद है।

आदिवासी समाज निजी संपत्ति, विनिमय और ऋण की संस्थाओं से भी रहित है। आदिवासी समाज के लोगों को कोई शक नहीं है कि उनके पास युद्ध और शिकार के लिए हथियार हैं, लेकिन इन को रखने की उनकी भावना निजी संपत्ति की संस्था है। मुद्रा ऋण एजेंसियों, विनिमय प्रणाली या सरकारी सब्सिडी की कोई आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार आदिवासी समाज में आर्थिक गतिविधियों के पैटर्न औद्योगिक समाज की जटिलता की तुलना में सरल और उदासीन हैं।

ii) सामाजिक जीवन (Social Life)

एक आदिवासी समाज में जीवन सरल और एकीकृत है। यह आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक और मनोरंजक श्रेणियों में विभागीय नहीं है, जो आधुनिक समाज में प्रत्येक व्यक्तित्व को पांच या दर्जन विशिष्ट भूमिकाएं निभाने का कारण बनता है। आदिवासी समाज में सामाजिक संपर्क एक प्राथमिक समूह का है।

समाज का रखरखाव आदिवासी नेताओं की शक्ति के बजाय लोकमार्गों और तटों पर अधिक निर्भर करता है। समूह सेंसर या, चरम मामलों में आधिकारिक बंद होने के बजाय निर्वासन सजा का रूप है। युवा का समाजीकरण ज्यादातर परिवार और दिन-प्रतिदिन के अंतरंग संबंधों में होता है।

प्रत्येक जनजाति व्यवहार के मानदंडों को जानती है और यह देखने की आदिवासी बड़ों की जिम्मेदारी है कि युवा व्यवहार के उचित तरीके सीखे। आदिवासी समाज आकार में छोटा और रचना में सजातीय है। आदिवासी लोग अपने दृष्टिकोण में धार्मिक हैं । कुलदेवता, जादू और बुतपरस्ती में विश्वास करते हैं।

निष्कर्ष निकालने के लिए, आदिवासी समाज औद्योगिक समाज की तुलना में सरल, सजातीय, एकीकृत और उदासीन है जो कि जटिल, विषम, विघटित और विभेदित है।

2.4 शहरी समाज(Urban Society)

2.4.1शहरी समाज के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Urban Society)

शहरी समाज अपनी विविधता और जटिलता के लिए जाना जाता है। यह द्वितीयक संबंधों पर हावी है। लोगों के व्यवहार को विनियमित करने के लिए अनौपचारिक साधनों के अलावा कानून, कानून, पुलिस और अदालत जैसे सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक साधनों की

आवश्यकता होती है। शहरी समाज मोबाइल/ घूमता हुआ (mobile) और खुला (more open) है। इस प्रकार यह अस्थिर माना जाता है।

एक व्यक्ति लगातार सामाजिक संपर्क में शामिल व्यक्तियों का एक समूह है, या एक ही स्थानिक या सामाजिक क्षेत्र को साझा करने वाला एक बड़ा सामाजिक समूह, आमतौर पर एक ही राजनीतिक प्राधिकरण और प्रमुख सांस्कृतिक अपेक्षाओं के अधीन होता है।

कुछ समूहों और व्यक्तियों में इस हद तक समाज का विकास अपने पूर्ण मानव विकास को प्राप्त करने के साधनों से वंचित है। इस प्रकार हमारी रूपरेखा एक समावेशी शहरी समाज की दृष्टि की वकालत करता है जहाँ हमारे शहरों में रहने वाले सभी लोग देखे जाते हैं और हितधारकों के रूप में व्यवहार करते हैं, जो अपनी जिम्मेदारियों और लाभों दोनों में भाग लेते हैं। सामाजिक संरचनाएं और मानवीय अंतःक्रियाएं जो लोगों को इस भागीदारी को महसूस करने से रोकती हैं ।

2.4.2 शहरी समाज की अवधारणा (Concept of Urban Society)

समाजशास्त्र में, एक सैद्धांतिक निर्माण के रूप में शहरी समाज के संदर्भ में वर्णित किया जाता था ।

"शहरी बनाम ग्रामीण" समाज (द्वैतवाद)

शहरों में ग्रामीण स्थानों की तुलना में अधिक आबादी है। शहरों में भी अधिक घनत्व होता है, जिसका अर्थ है कि अधिक लोग किसी विशेष स्थान पर केंद्रित होते हैं। घनत्व एक माप है कि कितने लोग रह रहे हैं, काम कर रहे हैं, या किसी विशेष क्षेत्र से गुजर रहे हैं। ढाका, बांग्लादेश दुनिया का सबसे घना शहरी क्षेत्र है, जहाँ प्रति वर्ग मील लगभग 112,000 लोग रहते हैं। जैसा कि आप सोच सकते हैं, यह एक ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में बहुत अधिक है! बस कुछ संदर्भ के लिए, अलास्का संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे कम घना राज्य है, जिसमें प्रति वर्ग मील लगभग 1.3 लोग रहते हैं।

बाद में शहरी समाज की अवधारणाओं ने शहरी के लिए एक विशिष्ट सामग्री को परिभाषित करने की मांग की

समाज, जो जीवन के ग्रामीण तरीके से इसके विरोध के प्रति कम नहीं है। पूंजीवादी समाज के ऐतिहासिक विकास से जुड़ा हुआ पाया जाता है, यह विशेष रूप से पूंजीवादी औद्योगीकरण की सामग्री थी । सत्ता और सामाजिक संबंधों को समाज के तरीके से जुड़ा हुआ देखा गया जो औद्योगिक पूंजीवाद के तहत उत्पादन के कारकों को व्यवस्थित किया। इस प्रकार, उदाहरण के लिए - सामाजिक संघर्ष, शहरी हिंसा और सामाजिक विभाजन, जो हावी हो गए हैं औद्योगिक युग और बाद के औद्योगिक युग में शहरी समाजों को उत्पादन के पूंजीवादी मोड के सामाजिक विरोधाभासों में अंततः जड़ता के रूप में देखा गया था । इस प्रकार से दोनों अवधारणा ऐतिहासिक समाज और शहरी समाज को अलग नहीं किया जा सकता है ।

शहर के भौतिक (या पारिस्थितिक) आयाम: शहर के भौतिक आयाम जो निम्नलिखित हैं:-

- ऐतिहासिक वास्तविकता के रूप में समाज, हम शहरी समाज को आकार देने की एक अधिक गतिशील धारणा की कल्पना करते हैं और ऐतिहासिक ताकतों और सामाजिक आंदोलनों द्वारा आकार दिया जा रहा है।
- शहरी क्षेत्र बहुत विकसित हैं, जिसका अर्थ है कि घरों, वाणिज्यिक भवनों, सड़कों, पुलों और रेलवे जैसे मानव संरचनाओं का घनत्व है।
- "शहरी क्षेत्र" कस्बों, शहरों और उपनगरों को संदर्भित कर सकता है।
- एक शहरी क्षेत्र में शहर ही शामिल है, साथ ही आसपास के क्षेत्र भी शामिल हैं।

2.4.3 शहरीकरण (Urbanisation)

शहरीकरण एक शहर की तरह बनने के लिए एक शब्द है। जब लोगों की आबादी बढ़ती है, तो एक जगह की आबादी शहर से लेकर आस-पास के क्षेत्रों में फैल सकती है। इसे शहरीकरण कहा जाता है।

- **शहरीकरण के दो कारण (Causes of Urbanisation)**

शहरीकरण के दो कारण, जो निम्नलिखित हैं:

i. प्राकृतिक जनसंख्या वृद्धि (Population Explosion)और

ii. ग्रामीण से शहरी प्रवास (Mobility) शहरीकरण छोटे गांवों से लेकर शहरों तक की सभी बस्तियों को प्रभावित करता है, जिससे मेगा-शहरों की वृद्धि होती है, जिसमें दस मिलियन से अधिक लोग होते हैं।

- **शहरीकरण के लाभ (Advantages of Urbanisation)**

शहरों को इस बात के लिए सक्षम माना जाता है कि बुनियादी सुविधाओं की आपूर्ति के लिए कम प्रयास की आवश्यकता होती है, उदाहरण के लिए, बिजली और ताजे पानी आदि । शहरों की ओर पलायन करने वाले लोग इन सुविधाओं का आनंद लेते हैं, जो बुनियादी सुविधाओं का ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचना मुश्किल है ।

2.5 औद्योगिक समाज (Industrial Society)

समाज के इतिहास में एक बहुत महत्वपूर्ण कारक औद्योगिक क्रांति रही है जिसने समाजों की संरचना में दूरगामी परिणाम लाए हैं। औद्योगिक क्रांति से पहले अधिकांश श्रमिकों ने अपने कच्चे माल को सुरक्षित कर लिया था और उनके अपने उपकरण थे।

उन्होंने अपने स्वयं के समय पर अपनी छतों के नीचे काम किया, और उपभोक्ता द्वारा तैयार उत्पाद को उत्पादित और बेचा दोनों की गुणवत्ता और मात्रा दोनों का निर्धारण किया। कार्यकर्ता को अपने उत्पाद पर गर्व था और वह एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करता था जिसने सबसे अच्छा उत्पाद बनाया था। उन्होंने पारंपरिक सामुदायिक तटों द्वारा नियंत्रित सादगी का जीवन जिया। उनके बच्चों ने अपने पिता को उत्पाद पर काम करते हुए देखा, उनकी मदद की और धीरे-धीरे वह काम सीख गए जो पिता कर रहे थे।
औद्योगिक क्रांति की शुरुआत के साथ यह सामाजिक संरचना बदलने लगी। एक उद्यमी, एक व्यक्तिवादी पूँजीपति इसमें आ गया और कुछ कार्यों को संभालने लगा। वह एक बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी आदमी था और एक कारखाने की स्थापना की। उन्होंने अपने कारखाने में चीजों का उत्पादन करने के लिए कच्चे माल को सुरक्षित किया, बाजार का उद्घाटन किया और अपनी छतों

(आश्रय) के नीचे श्रमिकों को लिया। उसने (Owner) उपज ली और बेच दी। इस प्रक्रिया में श्रमिक उत्पादन के साधनों से अलग हो गया। अब उसके पास न तो कच्चा माल, न ही उपकरण, न ही इमारत और न ही उत्पाद का स्वामित्व था। वह अब एक श्रमिक था। कारखाना उत्पादन, निश्चित पूंजी और मुक्त श्रम इस क्रांति की विशेषताएं थीं।

इस आर्थिक क्रांति के परिणामस्वरूप, सामाजिक संरचना में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए और औद्योगिक समाज नामक एक नए प्रकार के समाज का जन्म हुआ।

2.5.1 औद्योगिक समाज की विशेषताएं (Characteristics of Industrial Society)

एक औद्योगिक समाज निम्नलिखित विशेषताओं द्वारा चिह्नित है:

(i) आधुनिक परिवार का उभरना (Emergence of Modern Family)

पारंपरिक पितृसत्तात्मक परिवार के स्थान पर, आधुनिक परिवार का उदय औद्योगिक समाज की पहली विशेषता है। औद्योगिक समाज में परिवार एक संस्था से साहचर्य की ओर बढ़ गया है। आधुनिक परिवार में स्त्री अब पुरुष की भक्त नहीं है, बल्कि समान अधिकारों के साथ जीवन में एक समान भागीदार है।

यह न केवल काम के लिए कारखाने और कार्यालयों में जाने वाले पुरुष हैं, बल्कि महिलाएं भी पुरुषों की तरह अच्छी कमाई करने वाली सदस्य हैं। परिवार एक उत्पादन से उपभोग इकाई में बदल गया है। यह अब उन कार्यों को नहीं करता है जो उसने पूर्व-औद्योगिक समाज में किए थे। मशीनों और उपकरणों ने खाना पकाने, स्नान, सफाई और धुलाई के काम को कम कर दिया है।

यहां तक कि बाल-बच्चे और पालन का कार्य भी औद्योगिक समाज में अलग तरह से किया जाता है। अस्पताल बच्चे के जन्म के लिए कमरा प्रदान करता है और उसे नर्सिंग होम में लाया जाता है जबकि माँ कारखाने से दूर रहती है। औद्योगिक समाज के परिवार के सदस्यों को उनके दृष्टिकोण में व्यक्त किया जाता है। संक्षेप में, औद्योगिक समाज में परिवार की संरचना और कार्य कृषि समाज में उन लोगों से अलग हैं।

(ii) आर्थिक संस्थान (Economic Institutions)

औद्योगिक समाज और पूर्व-औद्योगिक समाज के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर आर्थिक संस्थानों की संरचना में देखा जा सकता है। औद्योगिक समाज उत्पादन, वितरण और विनिमय की एक नई प्रणाली द्वारा चिह्नित है। हाउस-होल्ड्स के स्थान पर कारखाने हैं जहां काम को छोटे टुकड़ों में विभाजित किया गया है। बड़े कारखाने लगाए गए हैं। निगम अस्तित्व में आ गए हैं।

स्वामित्व को नियंत्रण से अलग कर दिया गया है। बड़े औद्योगिक व्यवसाय, जैसे कि टाटा और बिड़ला का स्वामित्व एक आदमी के पास नहीं, बल्कि लाखों लोगों के पास है। जिन शेयरहोल्डरों के बीच यह विविध स्वामित्व फैला हुआ है, वे अपनी कंपनियों के मालिक हैं। लेकिन वे वेतन प्रबंधन के लिए निगम को नियंत्रण सौंपते हैं।

तथ्य के रूप में, हम एक औद्योगिक समाज में स्वामित्व का सामूहिक संग्रह है। पूंजीवाद अपनी सभी आवश्यक विशेषताओं के साथ, औद्योगिक समाज का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इस प्रकार यह निजी संपत्ति, श्रम विभाजन, लाभ, प्रतियोगिता, मजदूरी और ऋण के संस्थानों द्वारा चिह्नित है। ट्रेड यूनियनों की वृद्धि भी औद्योगिक समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

(iii) व्यावसायिक उप-संस्कृतियाँ (Occupational Sub-cultures)

जैसा कि ऊपर कहा गया है, औद्योगिक समाज में श्रम का चरम विभाजन है। माल के उत्पादन और कारखाने के प्रबंधन दोनों को छोटे टुकड़ों में विभाजित किया गया है, जो व्यावसायिक विशेषताओं के लिए अग्रणी है। कहने के लिए विशेष कार्यों का उत्पादन करने के लिए, जूते के एक जोड़े का उत्पादन, कारखाने हजारों में हैं।

जैसे-बुद्धिमान, प्रबंधन का काम भी विभाजित है, एक कच्चे माल की खरीद में लग रहा है, दूसरा संयंत्र और मशीनरी के रखरखाव के लिए, तीसरा विज्ञापन और प्रचार के कार्य देख रहा है।

श्रम का ऐसा विभाजन होता है जो कुछ समाजशास्त्रियों ने संबंधित व्यावसायिक विशेषताओं के साइटस सेट को व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित किया है जो संबंधित भूमिकाओं के अन्य सेटों से अलग हैं, जो कि पदानुक्रम में भी व्यवस्थित हैं। प्रत्येक साइटस या परिवार या संबंधित व्यवसाय इसे मानदंडों का एक सेट बनाता है।

ये व्यावसायिक उप-संस्कृतियाँ अपने प्रतिभागियों को दूसरे साइटस के सदस्यों से प्रेरित करती हैं। डॉक्टर और नर्स इंजीनियरों और ट्रक ड्राइवरों द्वारा साझा नहीं किए गए मूल्यों को रखते हैं। वकीलों के व्यावसायिक मानदंड शिक्षकों के नहीं हैं।

औद्योगिक समाज जैसा कि अत्यधिक व्यावसायिक विशेषज्ञता द्वारा चिह्नित है, इस प्रकार व्यावसायिक उप-संस्कृतियों द्वारा खंडित किया जाता है। यह अपने चरम पर देखा जा सकता है जब भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के डॉक्टरों के पास एक-दूसरे के बारे में बात करने के लिए संपर्क काफी है, अपने ही देश के किसान, किसानों के समूह के साथ अंतरंग और व्यक्तिगत संपर्कों पर अलग हैं ।

(iv) खंडित रोल्स (Segmentalized Roles)

औद्योगिक समाज के लोगों की भूमिकाएँ खंडित हैं। एक वेल्डर, एक धार्मिक उपदेशक, एक पिता, एक राजनीतिक समूह का सदस्य, क्रिकेट टीम का सदस्य हो सकता है। इनमें से कोई भी दूसरे के लिए उतना ही आवश्यक संबंध नहीं रखता है जितना कि एक जनजाति समाज में एक जनजाति के पुरुष द्वारा भरी गई भूमिकाएं करती हैं। ऐसे समाज में, व्यक्ति को अपने व्यवसाय, अपने संबंध और उसकी शैक्षिक प्राप्ति की भविष्यवाणी (Predictions) करने के लिए केवल उसकी कुल सदस्यता की आवश्यकता होती है।

(v) संबंध की प्रतिरूपण (Impersonality of Relationship)

एक औद्योगिक समाज व्यक्तिगत संबंधों के बजाय अवैयक्तिक रूप से चिह्नित होता है। व्यावसायिक विशेषज्ञता औद्योगिक जीवन की अवैयक्तिकता के लिए एक अच्छी हिस्सेदारी है। संघ का द्वितीयक चरित्र, व्यवसायों की बहुलता, कार्यों और क्षेत्रों की विशेषज्ञता और प्रतिस्पर्धा को संलग्नक संकीर्ण करते हैं और पूरे समाज के साथ पहचान की भावना से व्यक्ति को अलग करते हैं।

इसके अलावा, काम के स्थान को निवास स्थान से अलग करने से काम करने वाले पिता अपने बच्चों के दृष्टिकोण से दूर हो जाते हैं। ज्यादातर बच्चे यह नहीं जानते कि जब वह काम पर जाते हैं तो डैडी क्या करते हैं। उन्हें बस पता है कि वह जाता है और वापस आता है। तथ्य के रूप में, अधिकांश न केवल बच्चे बल्कि कई पत्नियों को वास्तव में नही पता है कि उनके पिता/पति क्या करते हैं ।

पत्नी केवल यह जानती है कि उसका पति टेक्सटाइल मिल में काम करता है, लेकिन वह वास्तव में वहां क्या करता है, चाहे वह असेंबली लाइन पर काम करता हो, या वह मशीन ऑपरेटर हो या वह सप्लाई मैन हो, उसे इसकी जानकारी नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में, परिवार किशोरावस्था से बाहर निकलकर बच्चे को वयस्क व्यावसायिक भूमिका में सक्षम नहीं कर पाता है।

(vi) अनुबंध की स्थिति (Status to Contract)

औद्योगिक समाज की समझ के लिए सबसे महत्वपूर्ण विशेषता, वह प्रवृत्ति है जिसे समाजशास्त्री स्थिति से लेकर संपर्क तक के रूप में वर्णित करते हैं। मध्ययुगीन समाज में सर्फ़ के पास भूमि थी। सर्फ़ ज़मीन से जुड़े हुए थे और ज़मीन से अधिकांश आय ज़मीनदारों की जेब में चली जाती थी । सर्फ़ों ने उपलब्धि के कारण नहीं, बल्कि कुछ दायित्वों का स्वामित्व किया, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्थिति में पैदा हुआ था। पूरे संरचित समाज को स्थिति पर संरचित किया गया था। लेकिन औद्योगिक समाज ने इस ढांचे को तोड़ दिया है।

एक औद्योगिक समाज में ज्यादातर लोग बड़े संगठनों के लिए काम करते हैं और स्थिति प्रणाली के लिए अनुबंध किए जाते हैं। एक मजदूरी अनुबंध, एक सामाजिक सुरक्षा अनुबंध, एक बेरोजगारी बीमा अनुबंध और इतने पर है। आपसी दायित्व प्रणाली के स्थान पर औद्योगिक समाज में अनुबंध प्रणाली पाई जाती है।

(vii) सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility)

चूंकि औद्योगिक समाज स्थिति से अनुबंध तक चला गया है, इसके परिणामस्वरूप, यह सामाजिक गतिशीलता द्वारा चिह्नित है। इसलिए अपनी उपलब्धि के द्वारा औद्योगिक समाज का सदस्य अपने जीवन काल के दौरान अपनी स्थिति को बढ़ा या कम कर सकता है। स्थिति के निर्धारण में एक कारक के रूप में जाति की भूमिका औद्योगिक समाज में न्यूनतम हो जाती है।

- एक व्यक्ति की सामाजिक पदों के बीच स्थानांतरित करने की क्षमता उनकी आर्थिक, सांस्कृतिक, मानवीय और सामाजिक पूंजी पर निर्भर करती है। ... सामाजिक गतिशीलता में आम तौर पर औपनिवेशिक गतिशीलता, व्यक्तियों या समूहों की

आवाजाही या एक सामाजिक-आर्थिक स्तर से दूसरे तक, अक्सर नौकरी या विवाह को बदलकर संदर्भित किया जाता है।

- सामाजिक गतिशीलता एक सामाजिक स्तरीकरण प्रणाली के भीतर पदों को बदलने की क्षमता को संदर्भित करती है। जब लोग सामाजिक वर्ग को प्रभावित करने वाले तरीके से अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार या कमी करते हैं, तो वे सामाजिक गतिशीलता का अनुभव करते हैं।
- व्यक्तिगत गतिशीलता का निर्धारण व्यक्तिगत विशेषताएँ- जैसे दौड़, जातीयता, लिंग, धर्म, शिक्षा का स्तर, व्यवसाय, निवास स्थान, स्वास्थ्य, और इसी तरह आदि करते हैं।

(viii) महिलाओं की स्थिति (Position of Women)

कृषि प्रधान समाज में महिलाओं के लिए कुछ आर्थिक लक्ष्य खुले हैं। वे ज्यादातर घरेलू कार्य तक ही सीमित हैं; और फसलों के रोपण और कटाई के समय सहायता प्रदान करना। एक औद्योगिक समाज में महिलाओं के लिए अधिक अवसर खुले हैं।

औद्योगीकरण और विशेषज्ञता ने महिलाओं को कार्यशाला और कारखाने में लाया है। उन्होंने व्यापक जीवन में प्रवेश किया है जिसने उनके दृष्टिकोण को बदल दिया है और उन्हें घरेलूता की विशिष्टता से मुक्त किया है। अब विधानसभाओं और अन्य वैकल्पिक निकायों में सीटें उनके लिए आरक्षित हैं। 'आंदोलन, औद्योगिक समाज का एक योगदान है।

(ix) डीवियनस एंड एनोमी (Deviance and Anomie)

औद्योगिक समाज विभिन्न उप-संस्कृतियों वाला एक सामूहिक समाज है। इसके सदस्य तीव्र प्रतिस्पर्धा के कारण तनाव में रहते हैं। कारखाने दिन-रात चलते हैं। लोग बहुत अधिक गतिविधियों में शामिल होते हैं और जबरदस्त गति से काम करते हैं। वे विभिन्न एजेंसियों द्वारा निर्धारित व्यवहार के जटिल और विषम नियमों से घिरे हैं जो मानव व्यवहार के लिए भारी संख्या में बाधाएं डालते हैं।

पूँजीवाद, शोषण, वर्ग संघर्ष, सांस्कृतिक ढोंग, रिश्तों की अवैयक्तिकता, व्यक्तिवाद और यांत्रिक जीवन की प्रमुखता औद्योगिक समाज की विशेषताएँ हैं जो मानसिक और भावनात्मक विकार पैदा करती हैं। औद्योगिक समाज के सदस्य न्यूरोसिस, मनोदैहिक विकारों और मनोविकृति से पीड़ित हैं। आत्महत्या और मादक पदार्थों की लत की घटना भी औद्योगिक समाज में अधिक है।

निष्कर्ष निकालने के लिए, औद्योगिक समाज ने संस्थागत संरचना और मानदंडों में महान बदलाव लाए हैं। अमेरिकी समाज एक औद्योगिक समाज है जहां लोग उच्च साक्षर हैं, वैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित हैं, आर्थिक रूप से समृद्ध हैं, लेकिन व्यक्तिगत रूप से उन्मुख हैं।

क्या ऐसे में समाज में मानवीय संबंध अधिक स्थिर और एकीकृत होंगे?

उत्तर निश्चित नहीं है। हालाँकि, अधिक से अधिक कृषि समाज औद्योगीकरण के चरण में प्रवेश कर रहे हैं और भविष्य में हमारे पास अधिक औद्योगिक समाज होंगे।

2.5.2 पोस्टइंडस्ट्रियल सोसायटी (Post-industrial Society)

सूचना समाज, जिसे कभी-कभी औद्योगिक या डिजिटल समाज के रूप में जाना जाता है, एक हालिया (निकट अतीत का) विकास है। भौतिक वस्तुओं के उत्पादन में निहित औद्योगिक समाजों के विपरीत, सूचना समितियाँ सूचना और सेवाओं के उत्पादन पर आधारित होती हैं।

डिजिटल तकनीक सूचना समाजों का स्टीम इंजन है, और स्टीव जॉब्स और बिल गेट्स जैसे कंप्यूटर उत्पादन से जुड़े इसके जॉन डी. रॉकफेलर और कॉर्नेलियस वेंडरबिल्ट हैं। चूँकि सूचना समाजों की अर्थव्यवस्था ज्ञान से संचालित होती है और भौतिक वस्तुओं से नहीं, शक्ति सूचनाओं के भंडारण और वितरण के आरोप में निहित है। एक पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसायटी के सदस्यों को सेवाओं के विक्रेताओं के रूप में नियोजित किए जाने की संभावना है l उदाहरण के लिए- सामाजिक वर्गों को सॉफ्टवेयर प्रोग्रामर या व्यापार सलाहकार, माल के उत्पादकों के बजाय, शिक्षा तक पहुंच से विभाजित किया जाता है, क्योंकि तकनीकी कौशल के बिना, समाज में लोगों को सफलता के लिए सूचना साधन की कमी होती है।

- **औद्योगिक समाज के बाद के आवश्यक लक्षण**

पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसाइटी बड़े पैमाने पर काम के प्रकार में बदलाव और सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसंस्करण के कारण है। सूचना प्रसंस्करण पर अधिक जोर दिया जाता है और इसलिए, कभी-कभी उभरते हुए औद्योगिक समाज को 'सूचना समाज' भी कहा जाता है।

इस नए समाज के उद्भव की प्रकृति के बारे में, समाजशास्त्रियों के बीच बहस छिड़ गई है। इस बहस में बेल, कैस्टेल, गॉर्डन, गोरज़, पोराट और टॉउन का प्रमुख योगदान रहा। इन सिद्धांतकारों ने अपने दृष्टिकोण से सूचना समाज या उत्तर-औद्योगिक समाज का निर्माण किया है।

बेल और पोराट दोनों का तर्क है कि सूचना व्यवसाय या प्रौद्योगिकियां लंबे समय के बाद के परिणाम में औद्योगिक समाज के विकास में होंगी। कैस्टेल, हालांकि, बेल और टौयेन से सख्ती से भिन्न है और कहता है कि सूचना-आधारित समाज औद्योगिक समाज की तुलना में अधिक उत्तर-औद्योगिक (पोस्ट-इंडस्ट्रियल) है जो उत्तर-कृषिवादी था।

कैस्टेल के लिए यह महत्वपूर्ण है कि सूचना समाज केवल एक सेवा समाज के साथ भ्रमित नहीं होता है जिसमें विनिर्माण क्षेत्र सभी को देखने से गायब हो गया है। बेल और टॉरिन की तरह, वह आने वाले समाज की गतिशीलता की पहचान करता है जिसमें ज्ञान की भूमिका और ज्ञान का उपयोग होता है न कि किसी अर्थव्यवस्था के किसी एक विशेष क्षेत्र की प्रबलता का ।

हम किसी भी विचारक का उल्लेख कर सकते हैं, जिन्होंने औद्योगिक समाज के बाद अपनी चिंता दिखाई है, और इस तरह के समाज के विकास में ज्ञान और सूचना की प्रमुख भूमिका पर जोर दिया है।

- **आधुनिक अर्थव्यवस्था का नया चरित्र (वैश्वीकरण-Globalisation)**

वे सभी जिन्होंने उत्तर आधुनिक समाज पर लिखा है, उन्होंने नई अर्थव्यवस्था के लिए अपनी चिंता दिखाई है। उनका तर्क है कि पहले की औद्योगिक अर्थव्यवस्था में एक निर्णायक बदलाव आया है। वे वैश्वीकरण के नाम से नई अर्थव्यवस्था की विशेषता रखते हैं। दूसरे शब्दों में, उत्तर आधुनिक समाज वैश्विक समाज की ओर बढ़ रहा है।

1980 के दशक के दौरान, वैश्वीकरण की अवधारणा सामाजिक विज्ञानों में परवान चढ़ने लगी। आधुनिक युग ने मानवीय मामलों के प्रगतिशील वैश्वीकरण का समर्थन किया है। पश्चिमी आधुनिकता के प्राथमिक संस्थानों, अर्थात्, उद्योगवाद, पूंजीवाद और राष्ट्र-राज्य, ने सूक्ष्म-इलेक्ट्रॉनिक सूचना प्रौद्योगिकी के युग में एक नया महत्व प्राप्त किया।

वैश्वीकरण 'औद्योगिक-बाद' के समाज के सबसे अधिक दिखाई देने वाले परिणामों में से एक है। इसमें सामाजिक जीवन में समय और स्थान की गहन रिकॉर्डिंग शामिल है। गिडेंस ने इसे 'समय-स्थान भेद' कहा है। संचार और जटिल वैश्विक प्रणालियों के उत्पादन और विनिमय के वैश्विक नेटवर्क का विकास लोगों के जीवन पर स्थानीय परिस्थितियों की पकड़ को कम करता है।

सूचना और ज्ञान ने दुनिया के लोगों के बीच संबंध स्थापित किए हैं। अब, यह विश्वास है कि मानव जाति को एक सार्वभौमिक समुदाय में बदल दिया जा सकता है, वैश्वीकरण और तकनीकी ज्ञान की प्रक्रियाओं के साथ आकार ले रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि दुनिया मानवता के लिए स्वतंत्रता, न्याय और समानता पर आधारित एक महानगरीय आदेश विकसित कर सकती है। इस प्रकार, वैश्वीकरण, 'औद्योगिक-बाद' के समाज की एक नई विशेषता है।

- **विकास के सूचनात्मक मोड और पूंजीवाद के पुनर्गठन के बीच बातचीत**

उत्तर-औद्योगिक समाज के आने से पूंजी निर्माण में जबरदस्त बदलाव आया है। औद्योगिक-बाद के उद्योग के क्षेत्र में तकनीकी-आर्थिक परिवर्तन हुए हैं।

लियोनेल स्टोलरु ने उत्तर आधुनिकतावाद पर एक विशिष्ट अवलोकन किया l

तकनीकी विकास की एक लहर ने नौकरियों की एक पूरी श्रृंखला का प्रतिपादन किया है ,कहीं एक समान संख्या बनाए बिना…रोजगार को भारी पैमाने पर कम कर दिया है । यह विनिर्माण लागत में

बचत और बढ़ती शक्ति के साथ काम करने के समय और अर्थव्यवस्था में कहीं और गतिविधि के नए क्षेत्रों का निर्माणहमें कम मानवीय प्रयास के साथ अधिक और बेहतर उत्पादन करने में सक्षम करेगा ।

उत्पादन की ऐसी प्रक्रिया पूरी अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करती है और अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा देती है। इस तरह के बाद के उद्योगवाद का अर्थ है पूंजीवाद का उदय। यह वृद्धि मूल रूप से विकास के सूचनात्मक मोड से संबंधित है।

दो घटक हैं जो उद्योगवाद के बाद पूंजीवाद को नया रूप देते हैं। ये निम्नलिखित हैं:--

(a) सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology), और

(b) विकास की संगठनात्मक विधा (Organisational approach of Development।

पूंजीवाद में वृद्धि के लिए ये दो तरीके जिम्मेदार हैं।

हम इन तरीकों पर चर्चा करते हैं:--

a) सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology)

सूचना प्रौद्योगिकी पूंजीवाद का पुनर्गठन निम्नलिखित तरीके द्वारा करती है:--

(i) यह लाभ की दर को बढ़ाता है। माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स की शुरूआत से उत्पादकता में वृद्धि हुई है। इलेक्ट्रॉनिक मशीनों

द्वारा उत्पादन प्रक्रिया को बदलना, सूचना प्रौद्योगिकी उत्पादन के विकेंद्रीकरण, और फर्म की विभिन्न इकाइयों के स्थानिक पृथक्करण के लिए भी संभव बनाती है।

(ii) नई तकनीक अर्थव्यवस्था के अंतर्राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया को भी आरंभ और प्रोत्साहित करती है। दूरसंचार और लचीले विनिर्माण क्षेत्र में प्रगति भी माल के मानकीकरण और अनुकूलन की अनुमति देती है।

इसके साथ-साथ कंप्यूटर और नई सामग्रियों के उपयोग से नई परिवहन प्रौद्योगिकियों में तेजी से वृद्धि हुई है। ये सभी परिवर्तन 'विश्व अर्थव्यवस्था के लिए भौतिक आधारभूत संरचना प्रदान करते हैं, क्योंकि रेलवे प्रणाली के निर्माण ने राष्ट्रीय बाजारों के गठन के लिए आधार प्रदान किया।

इस प्रकार, पोस्ट-औद्योगिक अवधि के दौरान सूचना प्रौद्योगिकियों के उदय ने लाभ की दर में वृद्धि की; माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स और नई परिवहन प्रौद्योगिकी के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि भी हुई। इन सभी कारकों के परिणामस्वरूप पूंजीवाद के बाद के उद्योगवाद का विकास हुआ।

b) संगठनात्मक घटक (Organisational Components /approach of Development)

अमेरिकी और यूरोपीय देशों में उच्च-स्तरीय संगठनों में ज्ञान निर्माण और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की एक मजबूत एकाग्रता है। इन क्षेत्रों की कोशिकाएँ सूचना के प्रसंस्करण से संबंधित हैं।

उत्पादकता और लाभप्रदता में ज्ञान और सूचना नियंत्रण की रणनीतिक भूमिका को देखते हुए, कॉर्पोरेट संगठनों के ये मुख्य केंद्र सिस्टम के एकमात्र अपरिहार्य घटक हैं, इस प्रकार मानना है कि अधिकांश अन्य कार्यों और अधिकांश अन्य श्रमिकों के साथ, कड़ाई से कार्यात्मक बिंदु से स्वचालन के लिए संभावित उम्मीदवार हैं।

संगठनात्मक घटक निम्नलिखित मायने रखता है पर पूंजीवाद के विकास में योगदान करते हैं:--

i. सूचना का परिणाम लचीला उत्पादन है। लचीलापन इसकी इकाइयों के बीच के रिश्तों को प्रभावित करता है, क्योंकि यह दोनों की आवश्यकता है और नई सूचना प्रौद्योगिकियों द्वारा पेश की जाने वाली संभावना है।

ii. नई विश्व अर्थव्यवस्था के गठन के लिए लचीलापन भी एक आवश्यक शर्त है। यह लचीलेपन के कारण है कि उपभोक्ताओं की बदलती माँगों को पूरा किया जाता है।

iii. फिर भी सूचनात्मकता की संगठनात्मक-विशेषताओं का एक और प्रभाव केंद्रीकृत बड़े निगमों से विकेंद्रीकृत नेटवर्क में बदलाव का है जो संगठनात्मक इकाइयों के आकार और रूपों की बहुलता से बना है। दुनिया भर में, ऐसे संगठनात्मक रूपों का उपयोग प्रमुख बहु-राष्ट्रीय निगमों द्वारा किया जाता है। ऐसे गठबंधनों में प्रवेश किए बिना अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में भागीदारी संभव नहीं है।

पोस्ट-इंडस्ट्रियलिज़्म में बहुत ही कमज़ोर अर्थव्यवस्था है। इसने फोर्डिज्म को पछाड़ दिया है। फोर्डिज्म का उद्योगवाद सूचनावाद में बदल जाता है। फोर्डवाद से पोस्ट-फोर्डवाद तक, उद्योगवाद से सूचनावाद तक-यह दौड़ वास्तव में मैराथन है उत्पादन के क्षेत्र में, बड़े निगमों का उदय हुआ है। एक अर्थव्यवस्था, जो बड़े पैमाने पर उत्पादन और केंद्रीकृत प्रबंधन पर आधारित है, प्रणाली की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक सूचना प्रवाह की बढ़ती संख्या उत्पन्न करती है।

2.5.3पोस्ट-इंडस्ट्रियलिज़्म के आवश्यक लक्षण (Features of Post-Industrialism)

- पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसाइटी बड़े पैमाने पर काम के प्रकार में बदलाव और सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसंस्करण के कारण है। सूचना प्रसंस्करण पर अधिक जोर दिया जाता है और इसलिए, कभी-कभी उभरते हुए औद्योगिक समाज को 'सूचना समाज' भी कहा जाता है।

- इस नए समाज के उद्भव की प्रकृति के बारे में, समाजशास्त्रियों के बीच बहस छिड़ गई है। इस बहस में बेल, कैस्टेल, गॉर्डन, गोरज़, पोराट और टॉउन का प्रमुख योगदान रहा। इन सिद्धांतकारों ने अपने दृष्टिकोण से सूचना समाज या उत्तर-औद्योगिक समाज का निर्माण किया है।

- बेल और पोराट दोनों का तर्क है कि सूचना व्यवसाय या प्रौद्योगिकियां लंबे समय के बाद के परिणाम में औद्योगिक समाज के विकास में होंगी। हालांकि कैस्टेल, बेल और टौयेन से सख्ती से भिन्न है।
- कैस्टेल के लिए यह महत्वपूर्ण है कि सूचना समाज केवल एक सेवा समाज के साथ भ्रमित नहीं होता है जिसमें विनिर्माण क्षेत्र सभी को देखने से गायब हो गया है। बेल और टॉरिन की तरह, वह आने वाले समाज की गतिशीलता की पहचान करता है जिसमें ज्ञान की भूमिका और ज्ञान का उपयोग होता है न कि किसी अर्थव्यवस्था के किसी एक विशेष क्षेत्र की प्रबलता।

- हम किसी भी विचारक का उल्लेख कर सकते हैं, जिन्होंने औद्योगिक समाज के बाद अपनी चिंता दिखाई है, और इस तरह के समाज के विकास में ज्ञान और सूचना की प्रमुख भूमिका पर जोर दिया है।
- हम पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसायटी की कुछ विशेषताओं को निम्न श्रेणी के द्वारा देखते हैं जो विकास के सूचनात्मक मोड के परिणाम हैं , लोग सेवा देने के लिए अन्य लोगों के साथ काम करते हैं ।
- एक औद्योगिक समाज है जहाँ मजदूर आये दिन एक के बाद एक बदलाव मशीनों में सबसे अधिक हैं । अब, वहाँ सेवा क्षेत्र का विकास हुआ है जहाँ बहुत कम मैनुअल श्रम होता है जिसमें कुछ हद तक रचनात्मकता और सामाजिकता होती है। बाद के उद्योगवाद में, श्रमिक चीजों पर काम नहीं करते हैं; वे एक सेवा देने के लिए अन्य

लोगों के साथ काम करते हैं। यह काम मैनुअल श्रम का अधिक पुरस्कृत और दिलचस्प रूप प्रदान करता है।

- **पेशेवर मध्यम वर्ग के लिए कामकाजी वर्ग का परिवर्तन**

उद्योगवाद के बाद श्रमिक वर्ग के स्थान पर एक नया पेशेवर वर्ग तैयार होता है। औद्योगिक समाज में, श्रम अपनी शारीरिक निपुणता के लिए आवश्यक था। अब वह समाप्त हो गया है। नए समाज में, श्रमिक वर्ग मौजूद नहीं है। यह इस वजह से है कि आंद्रे गोरज़ (1982) का कहना है कि पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसाइटी में श्रमिक वर्ग की विदाई होती है।

- **ज्ञान योगियों का उद्भव (Origin of Elites)**

औद्योगिक समाज में सामाजिक परिवर्तन के स्रोत के रूप में ज्ञान पर जोर है। लेकिन, सवाल यह है कि ज्ञान के स्रोतों को कौन नियंत्रित करता है? बेल का तर्क है कि यह ज्ञान-वर्ग (elites) का समूह है जो नियंत्रण करता है। ज्ञान, सूचना संसाधन, विश्वविद्यालयों, सरकारी संस्थानों और आर्थिक उद्यमों में नए तकनीकी अभिजात (Technical elite) वर्ग से आता है।

इसके अलावा, जैसे-जैसे बौद्धिक कार्य अधिक विशिष्ट होते जाते हैं, अभिजात वर्ग टेक्नोक्रेट काम के बढ़ते व्यावसायीकरण के साथ-साथ उन्नत पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं के भीतर तकनीकी कार्यों के नौकरशाहीकरण की दिशा में बदलाव के साथ तकनीकी अभिजात वर्ग के नए पदानुक्रमों का उदय होता है।

हालांकि, यह स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए कि ज्ञान के अभिजात वर्ग का उद्भव हर जगह एक स्वागत योग्य इशारा था। अमेरिका और फ्रांस जैसे देश हैं जहां आधुनिक समाज को अपमान और विद्रोह के साथ देखा गया था। फ्रांस में, 1360 के दशक में, कट्टरपंथी छात्र आंदोलन था।

2.6 **अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)**

अधिगम सम्बंधित क्रियाकलाप

निम्न वाक्यों के समक्ष "R/W" लिखें

i)व्यक्ति समाज का मूल घटक है। "R/W"

ii)औद्योगिक क्रांति के बाद अधिक सामाजिक गतिशीलता की ओर रुझान हुआ। "R/W"

iii)इंडस्ट्रियल सोसाइटी में श्रमिक वर्ग की विदाई होती है। "R/W"

iv)नई विश्व अर्थव्यवस्था के गठन के लिए लचीलापन भी एक आवश्यक शर्त है। "R/W"

v)पोस्ट-इंडस्ट्रियल सोसाइटी में सूचना प्रसंस्करण पर अधिक जोर दिया जाता है । "R/W"

vi) औद्योगिक समाज के आने से पूंजी निर्माण में जबरदस्त बदलाव आया है। "R/W"

कृपया उत्तर की पड़ताल पाठ के अंतिम हिस्से 2.10 में करें I

2.7 सारांश (Summary)

आपने अध्ययन किया है कि समाज ठोस है, भौतिक की वास्तविकता है और व्यक्तियों का एक समुच्चय है जबकि समाज अमूर्त है और व्यक्तियों और व्यक्तियों के योग से अधिक है। यह संघों के पूरे नक्षत्र को संदर्भित करता है जो लोगों की विशेषता है। जब हम भारतीय समाज, फ्रांसीसी समाज या अमेरिकी समाज के बारे में बात करते हैं, तो हमारे दिमाग में आमतौर पर society एक समाज 'का विचार आता है

सोसायटी को उनके विकास और प्रौद्योगिकी के उपयोग के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। अधिकांश मानव इतिहास के लिए, लोग सीमित प्रौद्योगिकी और माल के कम उत्पादन की विशेषता वाले प्रीइंडस्ट्रियल सोसाइटियों में रहते थे। औद्योगिक क्रांति के बाद, कई समाजों ने मशीनीकृत श्रम के आसपास अपनी अर्थव्यवस्थाओं को आधारित किया, जिससे अधिक लाभ हुआ और अधिक से अधिक सामाजिक गतिशीलता की ओर रुझान हुआ। नई सहस्राब्दी के मोड़ पर, एक नए प्रकार का समाज उभरा। यह पोस्ट-इंडस्ट्रियल, या सूचना, समाज डिजिटल प्रौद्योगिकी और गैर-भौतिक वस्तुओं पर बनाया गया है। एक औद्योगिक समाज के बाद के समाज के विकास में एक चरण होता है, जिसके दौरान अर्थव्यवस्था एक से संक्रमण करती है जो मुख्य रूप से एक को सामान प्रदान करती है जो मुख्य रूप से सेवाएं प्रदान करती है। दूसरे शब्दों में, अन्य लोगों के अलावा, सेवा क्षेत्र, नर्सों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और वकीलों जैसे लोगों से बना है । आर्थिक क्षेत्र निर्माण और विनिर्माण क्षेत्र की तुलना में अधिक श्रमिकों, कपड़ा मिल श्रमिकों, खाद्य निर्माताओं और उत्पादन श्रमिकों के रूप में जो लोगों से बना है, आर्थिक परिवर्तन औद्योगिक समाज से जुड़ा बाद के समाज को समग्र रूप से बदल देता है।

2.8 सूचक शब्द (Keywords)

- **औद्योगीकरण:** उद्योग हेतु नए कारखाने आदि खोलने की क्रिया।
- **सोसायटी:** समाज, मंडली, सार्वजनिक संस्था (जैसे–सोसाइटी से बाहर)।
- **प्रतिस्पर्धा:** किसी वस्तु को प्रापत करने की प्रतियोगिता को कहते हैं जो कि इतनी मात्रा मे कहीं नहीं पा जाती जिससे मांग की पूर्ति हो सके
- **प्रौद्योगिकी:** व्यावहारिक और औद्योगिक कलाओं और प्रयुक्त विज्ञानों से संबंधित अध्ययन या विज्ञान का समूह है।
- **औपनिवेशिक**: उपनिवेश में होने अथवा उससे संबंध रखने वाला

- **डिजिटल तकनीक:** प्रविधि, शिल्प विज्ञान।
- **पोस्टइंडस्ट्रियल सोसायटी:** पश्च-औद्योगिक समाज

2.9 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

संक्षेप में उत्तर दें

- समाजशास्त्र की परिभाषा लिखें l
- समाज के प्रकार व समाज विषय पर चर्चा करें।
- समाज की विशेषताएँ क्या है? संक्षेप में उत्तर दें ।
- जनजातीय समाज की संरचना और विशेषताएं लिखें ।
- शहरीकरण पर संक्षिप्त नोट लिखें ।

2.10 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

निम्न वाक्यों के समक्ष "R/W" लिखें

उत्तर: i)R, ii) R, iii) W, iv) R, v) R, vi) R

2.11 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

- Basic Concepts of Education by Arung, Fernades , www.linkedin.com
- Indian Political System (4th Ed.) By Roy, H and Singh, M.P. , Pearson India Education Services
- History of Social thought by K.Singh, Prakashan Kendra, Lucknow.
- Principles of Political Science by Anup C, Kanpur, S. Chand and Company.

- Sociology: An Introduction by Smelser, Neil, J.,Wiley Eastern Private Limited

- Sociology: Principles of sociology with an introduction to social thought by Shanker Rao C.N., S. Chand and Company.

Subject : Sociology(Society, Culture and Social Change)	
Course Code : **SOCL 102**	Author : **Dr. Shakuntla Devi**
Lesson No. : **03**	Updated by: **Self**
सामाजिक स्तरीकरण और सामाजिक गतिशीलता (Social Stratification and Social Mobility)	

<u>अध्याय की संरचना</u>

3.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

3.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

3.2.1 सामाजिक स्तरीकरण को समझना (Understanding Social stratification)

3.2.2 सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ और परिभाषा (Meaning and definition of social stratification)

3.2.3सामाजिक स्तरीकरण की उत्पत्ति (Origin of Stratification)

3.2.4 सामाजिक स्तरीकरण के प्रकार (Types of Social Stratification)

3.2.5 सामाजिक स्तरीकरण के लक्षण (Characteristics of Social Stratification)

3.2.6 सामाजिक स्तरीकरण के उदाहरण (Examples of Social Stratification)

3.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

3.3.1 सामाजिक संपर्क के तत्व (Elements of Social Interaction)

3.3.2 सामाजिक स्तरीकरण का मानदंड (Criteria of Social Stratification)

3.3.3 सामाजिक स्तरीकरण पर कार्यात्मक परिप्रेक्ष्य (Functional Perspective on Social Stratification)

3.3.4 शिक्षा और सामाजिक स्तरीकरण (Education and Social Stratification)

3.3.5 सामाजिक गतिशीलता की परिभाषा (Definition of Social Mobility)

3.3.6 सामाजिक गतिशीलता का सम्बन्ध व्यक्ति या समूह के पद या प्रस्थिति से है।

3.3.7 सामाजिक गतिशीलता के प्रकार (Types of Social Mobility)

3.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

3.5 सारांश (Summary)

3.6 सूचक शब्द (Keywords)

3.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

3.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

3.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप निम्न में सक्षम हो जाएगे /सकेंगे ।

• सामाजिक संपर्क और सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणा को समझेंगे ।

• सामाजिक स्तरीकरण के प्रकारों में अंतर कर पाएंगे ।

• सामाजिक स्तरीकरण के विभिन्न मानदंडों की व्याख्या कर पाएंगे ।

• शिक्षा और सामाजिक स्तरीकरण के बीच संबंध का वर्णन कर सकेंगे ।

3.1 प्रस्तावना (Introduction)

जातियाँ (Caste) निश्चित पारंपरिक व्यवसायों के साथ वंशानुगत एंडोगैमस समूह हैं, जो पारस्परिक निषेध और बातचीत पर सामाजिक प्रतिबंधों का पालन करते हैं। ऐसा माना जाता है कि देश में लगभग 3,000 जातियां हैं। इन जातियों को उच्च जातियों (जैसे ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, कायस्थ, आदि) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, मध्यवर्ती जातियों (जैसे अहीर, सुनार, कुर्मी, आदि) और निचली जाति (जैसे गोबी, नई, आदि) के रूप में। अनुष्ठान

पदानुक्रम में स्थिति का निर्धारण करने के लिए जातियों को चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और सुद्रा) के साथ जोड़ा जाता है। मेरा विचार से हिंदू धर्म में जाति व्यवस्था को मीडिया और राज्य द्वारा स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है कि किसी भी प्रणाली को बदनाम करने का एक तरीका इसकी ज्यादतियों को उजागर करना है, और यह केवल हीनता की भावना को जोड़ता है जो कई भारतीय अपनी संस्कृति के बारे में महसूस करते हैं। ।

जाति व्यवस्था (Caste System) को अक्सर परम आतंक के रूप में चित्रित किया जाता है, मीडिया में इस प्रकार जाति व्यवस्था भारत में स्थायी रूप से रहने वाली है हालांकि वेदों ने जाति व्यवस्था को समाज में अतिक्रमण नहीं किया था और यह सब उलझा हुआ था। सरकारी नीतियों के साथ, समाज के लिए अपूरणीय क्षति हुई है और बुराई को मिटाना असंभव होगा। निहित स्वार्थ विभिन्न आरक्षणों के कारण विकसित हुए हैं जहां हवाओं के लिए योग्यता डाली जाती है।

सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification) एक प्रणाली को संदर्भित करता है जिसके द्वारा एक समाज एक पदानुक्रम में लोगों की श्रेणियों को रैंक करता है। यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में, कुछ समूहों में अन्य समूहों की तुलना में अधिक स्थिति, शक्ति और धन है। ये अंतर सामाजिक स्तरीकरण के कारण हैं। सामाजिक स्तरीकरण निम्नलिखित चार प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है:

- सामाजिक स्तरीकरण समाज का एक लक्षण है, न कि केवल व्यक्तिगत मतभेदों का प्रतिबिंब।
- सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी दर पीढ़ी जारी है।
- सामाजिक स्तरीकरण सार्वभौमिक है (यह हर जगह होता है) लेकिन परिवर्तनशील (यह विभिन्न समाजों में अलग-अलग रूप लेता है)।
- सामाजिक स्तरीकरण में न केवल असमानता शामिल है, बल्कि विश्वास (असमानता एक समाज के दर्शन में निहित है)।

- सामाजिक स्तरीकरण क्यों मौजूद है और कुछ देश दूसरों की तुलना में अधिक स्तरीकृत क्यों हैं? इस प्रश्न का विश्लेषण करने के लिए, हम तीन प्रमुख दृष्टिकोणों के माध्यम से सामाजिक स्तरीकरण को देख सकते हैं: संरचनात्मक कार्यात्मकता, सामाजिक संघर्ष और प्रतीकात्मक बातचीत।

3.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

3.2.1 सामाजिक स्तरीकरण को समझना (Understanding Social stratification)

प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका और स्थिति का निर्धारण करने के लिए, प्रत्येक समाज में स्तरीकरण की एक प्रणाली आवश्यक है। इसमें उन व्यक्तियों और समूहों की अंतर रैंकिंग शामिल है जो प्रतिष्ठा और शक्ति का एक पदानुक्रम बनाते हैं। समाजशास्त्री सामाजिक स्तरीकरण शब्द का उपयोग सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रणाली का वर्णन करने के लिए करते हैं। सामाजिक स्तरीकरण से तात्पर्य एक ऐसे व्यक्ति से है जो अपने लोगों को धन, आय, दौड़, शिक्षा और शक्ति जैसे कारकों के आधार पर सामाजिक आर्थिक स्तरों की रैंकिंग में वर्गीकृत करता है। समाज की ऐसी विशेषता लगभग सार्वभौमिक है। इसने विभिन्न दार्शनिकों और सामाजिक सिद्धांतकारों का ध्यान आकर्षित किया है। आइए हम पहले इसका अर्थ समझें और फिर इसके प्रकार, आधार, विशेषताएं और उदाहरण देखें।

3.2.2 सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ और परिभाषा (Meaning and definition of social stratification)

सामाजिक स्तरीकरण समाज को विभिन्न वर्गों में विभाजित करता है; इसलिए एक समाज को स्तरीकृत कहा जाता है जिसमें समूह बनाम बाहर के समूह संबंधों की औपचारिकता होती है। सभी व्यक्तियों के साथ-साथ समूहों को मान्यता और विशेषाधिकार के आधार पर विभेदित किया जाता है, फलस्वरूप समाज में विभिन्न विभाजन पैदा होते हैं। इन विभाजनों की अवधारणा को 'सामाजिक स्तर' कहा जाता है।

कुछ शिक्षाविदों और समाजशास्त्रीयों के अनुसार, सामाजिक स्तरीकरण की परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:--

- समाजशास्त्री मुरे (Murrey) ने सामाजिक स्तरीकरण को समाज के क्षैतिज विभाजन के रूप में उच्च और निम्न सामाजिक इकाइयों में परिभाषित किया।
- समाजशास्त्री तुमिन ने सामाजिक स्तरीकरण को किसी भी सामाजिक समूह या समाज की व्यवस्था के पदानुक्रम के रूप में परिभाषित किया जो सत्ता, संपत्ति, सामाजिक मूल्यांकन और मानसिक संतुष्टि के संबंध में असमान हैं।
- समाजशास्त्री सदरलैंड और वुडवार ने सामाजिक स्तरीकरण को केवल भेदभाव की बातचीत की । एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया, जिससे कुछ लोग दूसरों की तुलना में उच्च रैंक पर आते हैं।
- समाजशास्त्री ओगबर्न और निमकोफ ने सामाजिक स्तरीकरण को उस प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया, जिसके द्वारा व्यक्तियों और समूहों को स्थिति के अधिक या कम स्थायी पदानुक्रम में स्थान दिया जाता है, जिसे स्तरीकरण के रूप में जाना जाता है
- समाजशास्त्री लुंडबर्ग ने परिभाषित किया कि "एक स्तरीकृत समाज एक असमानता से चिह्नित है, लोगों द्वारा उन लोगों के बीच मतभेदों द्वारा जिन्हें" निम्न "और" उच्च "के रूप में मूल्यांकन किया जाता है।
- समाजशास्त्री गिस्बर्ट ने सामाजिक स्तरीकरण को "श्रेष्ठता और अधीनता के संबंध द्वारा एक दूसरे से जुड़े श्रेणियों के स्थायी समूहों में समाज का विभाजन" के रूप में परिभाषित किया।
- समाजशास्त्री विलियम्स ने सामाजिक स्तरीकरण को मूल्यांकन के कुछ स्वीकृत आधार के अनुसार श्रेष्ठता-हीनता-समानता के पैमाने पर व्यक्तियों की रैंकिंग के रूप में परिभाषित किया।

3.2.3 स्तरीकरण की उत्पत्ति (Origin of Stratification)

स्तरीकरण की उत्पत्ति के संबंध में, कई विचार निम्न दिए गए हैं।

- समाजशास्त्री कार्ल मार्क्स ने अपने भौतिकवादी दर्शन में, स्ट्रेटा के आर्थिक विश्लेषण को बहुत महत्व दिया है, लेकिन स्ट्रैट के स्थान पर वह 'क्लास' शब्द को पसंद करते हैं। उन्होंने वर्ग प्रणाली के आर्थिक आधार के व्यापक दृष्टिकोण का निर्माण किया है। मार्क्स के अनुसार ये आर्थिक वर्ग, सामाजिक स्तरीकरण के वास्तविक प्रतिनिधि हैं।
- समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम और फ्रेडिनैंड टोननीज ने भी गेसलशाफ्ट और कार्बनिक एकजुटता वर्ग की अपनी व्याख्या में आर्थिक स्तर पर ध्यान दिया, इस प्रकार आर्थिक दृष्टिकोण सामाजिक स्तरीकरण का सबसे महत्वपूर्ण आधार है।
- समाजशास्त्री कार्ल मैनहेम के अनुसार, स्तरीकरण न केवल आर्थिक स्थितियों पर आधारित है, बल्कि गैर-आर्थिक कारकों से भी संबंधित है। असमानता के साथ नस्लीय मतभेद भी स्तरीकरण की ओर जाता है।
- समाजशास्त्री गुम्पलोविज़ और रतज़ेनहोफ़र ने स्तरीकरण की राजनीतिक अवधारणा को प्रतिपादित किया। इन विचारकों के अनुसार स्तरीकरण विचलन जातीय समूहों की विजय से लिया गया है। इस प्रकार, शासक वर्ग ने समाज की संरचना और सभ्यता के स्तर को निर्धारित किया। प्लेटो ने यह भी माना कि स्तरीकरण शासक वर्ग की संरचना और गतिशीलता पर आधारित है।
- समाजशास्त्री डेविस के अनुसार, सामाजिक स्तरीकरण सामाजिक व्यवस्था की कार्यात्मक आवश्यकता के कारण अस्तित्व में आया है।
- समाजशास्त्री प्रोफेसर सोरोकिन ने सामाजिक स्तरीकरण को मुख्य रूप से पर्यावरणीय परिस्थितियों में विरासत में अंतर के लिए जिम्मेदार ठहराया।
- समाजशास्त्री गुम्पलोविज़ और अन्य ने कहा कि सामाजिक स्तरीकरण की उत्पत्ति एक समूह द्वारा दूसरे समूह की विजय में पाई जानी है।

- समाजशास्त्री स्पेंगलर के अनुसार, सामाजिक स्तरीकरण की स्थापना उस बिखराव पर की जाती है, जिसे तब बनाया जाता है जब भी समाज कार्यों और शक्तियों के संदर्भ में सकारात्मकता को अलग करता है।

3.2.4 सामाजिक स्तरीकरण के प्रकार (Types of Social Stratification)

सामाजिक स्तरीकरण विभिन्न सिद्धांतों पर आधारित है। इसलिए, हम विभिन्न प्रकार के स्तरीकरण पाते हैं। यह मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं:

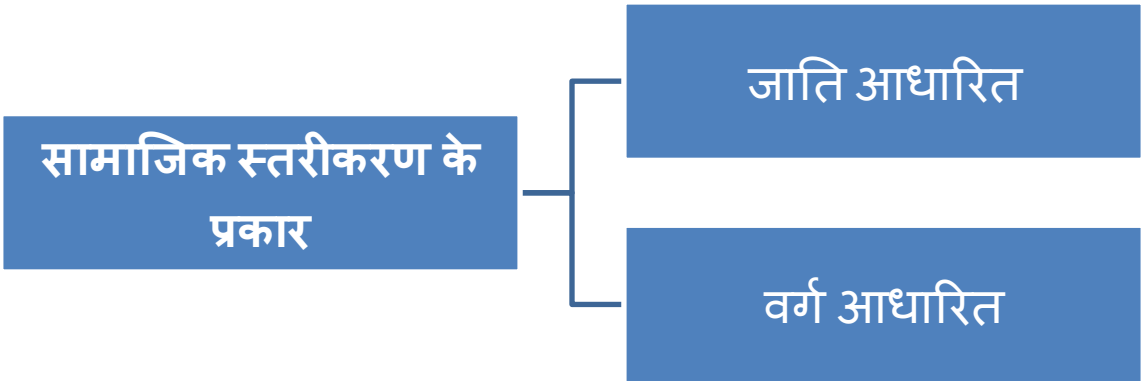

i) जाति आधारित और

ii) वर्ग आधारित

i) जाति आधारित (Caste based)

जाति के आधार पर किसी व्यक्ति या समूह की सामाजिक स्थिति का निर्धारण करना जाति आधारित स्तरीकरण कहलाता है। जाति एक वंशानुगत एंडोगामस सामाजिक समूह है जिसमें किसी व्यक्ति के पद और उसके अधिकारों और दायित्वों को एक विशेष समूह में उसके जन्म के आधार पर अंकित किया जाता है। उदाहरण के लिए- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जाति आदि ।

ii) वर्ग आधारित (Class based)

दूसरी ओर, जब लोगों को उनकी क्षमताओं, कौशल, पद, अधिकारों और कर्तव्यों आदि के आधार पर उच्च और निम्न स्थिति में विभेदित किया जाता है, तो इसे वर्ग-

आधारित स्तरीकरण कहा जाता है। आधुनिक समाज में वर्ग के आधार पर वर्ग-स्तरीकरण प्रमुख है। इसमें, व्यक्ति की स्थिति उपलब्धि पर बहुत हद तक निर्भर करती है और जन्मजात विशेषताओं और धन के लाभ के लिए उपयोग करने की उसकी क्षमता जो उसके पास हो सकती है। उदाहरण के लिए, IPS अधिकारी उच्च स्थिति से संबंधित हैं, जबकि पुलिसकर्मी निम्न स्थिति का निर्माण करते हैं।

3.2.5 सामाजिक स्तरीकरण के लक्षण (Characteristics of Social Stratification)

प्रख्यात विद्वानों / समाजशास्त्रीयों द्वारा दी गई विभिन्न परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर, सामाजिक स्तरीकरण की निम्नलिखित विशेषताएं हो सकती हैं:--

(a) सामाजिक स्तरीकरण सार्वभौमिक है (It is universal)

इस दुनिया का कोई भी समाज ऐसा नहीं है जो स्तरीकरण से मुक्त हो। आधुनिक स्तरीकरण आदिम समाजों के स्तरीकरण से अलग है। यह एक विश्वव्यापी घटना है। समाजशास्त्री सोरोकिन के अनुसार "सभी स्थायी रूप से संगठित समूह स्तरीकृत हैं।"

(b) स्तरीकरण सामाजिक है (It is Social)

यह सच है कि जैविक गुण किसी की श्रेष्ठता और हीनता का निर्धारण नहीं करते हैं। आयु, लिंग, बुद्धि के साथ-साथ ताकत जैसे कारक अक्सर उस आधार के रूप में योगदान करते हैं, जिसके आधार पर मूर्तियों को प्रतिष्ठित किया जाता है। लेकिन किसी की शिक्षा, संपत्ति, शक्ति, अनुभव, चरित्र, व्यक्तित्व आदि जैविक गुणों से अधिक महत्वपूर्ण पाए जाते हैं। इसलिए, स्तरीकरण स्वभाव से सामाजिक है।

(c) यह प्राचीन है (Ancient Practice)

स्तरीकरण प्रणाली बहुत पुरानी है। यह छोटे सोच वाले बांड में भी मौजूद था। लगभग सभी प्राचीन सभ्यताओं में, अमीर और गरीब, विनम्र और शक्तिशाली के बीच अंतर मौजूद थे। समाजशास्त्री प्लेटो और कौटिल्य की अवधि के दौरान, यहां

तक कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक असमानताओं पर भी जोर दिया गया था।

(d) यह विविध रूपों में है (It is in diverse forms)

स्तरीकरण का रूप सभी समाजों में समान नहीं है। आधुनिक विश्व स्तर में, जाति और संपत्ति स्तरीकरण के सामान्य रूप हैं। भारत में जाति के रूप में एक विशेष प्रकार का स्तरीकरण पाया जाता है। प्राचीन आर्य चार वर्णों में विभाजित थे: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और सुद्र। प्राचीन यूनानियों को फ्रीमैन और दासों में विभाजित किया गया था और प्राचीन रोमियों को पाटीदारों और प्लेबायों में विभाजित किया गया था। इसलिए प्रत्येक समाज, अतीत या वर्तमान, बड़ा या छोटा सामाजिक स्तरीकरण के विविध रूपों की विशेषता है।

(e) सामाजिक स्तरीकरण अंतःक्रिया को नियंत्रित करता है(Social stratification tends to control interaction)

दिए गए सॉर्ट की वजह से, स्ट्रैट (strata) के बीच स्ट्रैट(**strata**) के भीतर एक की अधिक इंटरैक्शन होती है। किसी दिए गए स्तरीकरण प्रणाली में, कुछ प्रकार की बातचीत दूसरों की तुलना में अधिक प्रतिबंधित हो सकती है। दोस्त बनाने में, पेशे को चुनने में, एक विवाह के रूप में साथी की तलाश में, ऑटोमोबाइल यातायात के प्रवाह की तुलना में अधिक प्रतिबंध मौजूद हो सकते हैं। एक मोटर चालक कुछ नियमों के अनुसार या जिस सामाजिक स्थिति के अनुसार वह और अन्य हो सकता है, उसके अनुसार रास्ते का अधिकार लेता है या पैदावार लेता है।

(f) स्थिति की असमानता (Inequality of status)

व्यक्तियों को मिलने वाले लाभ और अवसर समाज के समान सदस्य के रूप में सभी के लिए समान नहीं हैं। अलग-अलग पुरस्कार और पारिश्रमिक में अंतर होता है कि कौन क्या और कैसे आसानी से प्राप्त करता है। स्थिति और प्रतिष्ठा किसी भी

स्तरीकृत समाज के दो पहलू हैं जो इसके सदस्यों के बीच असमानता स्थापित करते हैं। अमीर और अमीर कई भत्तों और विशेषाधिकारों का आनंद लेते हैं। बुद्धिजीवी अपनी प्रतिभा के कारण श्रद्धा अर्जित करते हैं। पदानुक्रम में उच्च सामाजिक स्थिति (निष्पक्ष या अनुचित साधनों द्वारा प्राप्त) व्यक्तियों को असमान उपचार देती है।

(g) गरीबी और स्तरीकरण (Poverty and Stratification)

व्यक्तियों के पास बचे हुए अधिशेष धन या संसाधन किसी भी आगे के आर्थिक व्यवस्था या स्तरीकरण के स्रोत बन जाते हैं। पिरामिड का निचला आधार गरीबी और अधिकतम संख्या से जुड़ा है। सामूहिकता को वर्गीकृत करने के लिए कई आधारों के बावजूद, एकमात्र समुदाय की संपत्ति या आय एकमात्र मापदंड है जो वस्तु विनिमय के समय से लेकर अब तक कागजी मुद्रा के वर्तमान समय तक जीवित रहा है। हालाँकि, आय किसी राष्ट्र की उत्पादकता को मापने का सबसे अच्छा तरीका है। इस प्रकार, यह एक उद्देश्य स्तरीकरण बनाता है जो संपूर्ण आबादी के बारे में आंकड़े उत्पन्न करता है।

(h) सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility)

सामाजिक गतिशीलता सामाजिक संरचना के भीतर आंदोलन को संदर्भित करती है। इसका अर्थ है समाज एक सामाजिक स्थिति से दूसरे सामाजिक स्थिति में बदलाव सभी सामाजिक गतिशीलता के लिए कुछ अवसर प्रदान करते हैं। लेकिन समाज एक दूसरे से उस हद तक भिन्न होते हैं जिसमें व्यक्ति एक वर्ग या स्थिति स्तर से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

3.2.6 सामाजिक स्तरीकरण के उदाहरण (Examples of Social Stratification)

विकसित अर्थव्यवस्थाओं में, समाजों को तीन व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है।

- **निम्न वर्ग (Lower class)**: यह उन लोगों को संदर्भित करता है जो अशिक्षित हैं, या तो बेरोजगार हैं, या आय के निम्न स्तर के साथ हैं। गरीबी रेखा से नीचे के लोग भोजन और आश्रय जैसी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए भी संघर्ष करते हैं।
- **मध्यम वर्ग (Middle class)**: सफेदपोश श्रमिकों के रूप में जानी जाने वाली आबादी का व्यापक रूप से मध्यम वर्ग का गठन होता है। वे अमीर और गरीब के बीच में रहते हैं। यह वर्ग आमतौर पर देश की अधिकांश आबादी का गठन करता है। उन्होंने नौकरियों और एक मानक, सम्माननीय जीवन शैली को प्रतिष्ठित किया है।
- **उच्च वर्ग (High class)**: समृद्ध या उच्च आय वर्ग और व्यक्तियों को उच्च वर्ग की असभ्यता के रूप में जाना जाता है। कभी-कभी प्रतिष्ठा, स्थिति और शक्ति भी, सभी कारक इस स्तर के साथ मेल खाते हैं।

"व्यापक-मध्यम वर्ग" और "निम्न-मध्यम वर्ग" जैसे इन व्यापक श्रेणियों के आगे उप-विभाजन भी हैं। ये मुख्य रूप से प्रतिष्ठा, स्थिति, अर्जित आय या धन में से किसी एक गुण में अंतर के कारण होते हैं। एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में एक प्रोफेसर की नौकरी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक की तुलना में अधिक प्रतिष्ठित है। दोनों व्यक्ति शिक्षक होने के कारण, एक रोजगार प्रकार उनके वर्ग और संबद्ध स्थिति में अंतर के कारण होता है।

सामाजिक-आर्थिक शब्द का अर्थ है, सामाजिक और आर्थिक कारकों का मिश्रण, जो आधुनिक समाजों में स्तरीकरण को एक व्यक्ति की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के बीच परस्पर जुड़ा हुआ दर्शाता है। एक व्यक्ति का सामाजिक ताना-बाना इस प्रकार होता है कि वह अपने व्यवसाय, धन, आय, संपत्ति, निवास, जीवन शैली, प्रतिष्ठा आदि से प्राप्त होता है। यदि किसी अमीर आदमी की कुछ राजनैतिक संबद्धता या राजनीतिक पृष्ठभूमि है, तो यह उसकी स्थिति में एक अलग पहलू बनाता है। ।

3.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

3.3.1 सामाजिक संपर्क के तत्व (Elements of Social Interaction)

हमारे समाज में सामाजिक संपर्क के विभिन्न तत्व होते हैं जैसे सामाजिक स्थिति, सामाजिक भूमिका, संस्कृति, सामाजिक समूह, सामाजिक वर्ग, सामाजिक संस्थान और डिजिटल दुनिया में सामाजिक नेटवर्किंग। आइए इन सभी तत्वों पर विस्तार से चर्चा करें।

(ए) सामाजिक स्थिति (Social Status)

सामाजिक स्थिति का अर्थ है सामाजिक रूप से परिभाषित स्थिति जो कुछ उम्मीदों, अधिकारों और कर्तव्यों की विशेषता है। किसी की सामाजिक स्थिति विविध तरीकों से निर्धारित होती है। कोई अपनी उपलब्धियों से अपनी सामाजिक स्थिति अर्जित कर सकता है; इसे प्राप्त स्थिति के रूप में जाना जाता है। दूसरी ओर, कोई व्यक्ति सामाजिक पदानुक्रम पर अपनी स्थिति का वारिस कर सकता है; इसको स्थिति के रूप में जाना जाता है। एक निर्धारित स्थिति को एक व्यक्ति के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है, जो जन्म के समय किसी व्यक्ति के लिए तय किया जाता है, जैसे कि सेक्स, जाति और सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि। हमारे सभी स्टेटस मिला कर हमारे स्टेटस सेट को कहते हैं। हम अक्सर मास्टर की स्थिति की ओर बढ़ते हैं। मास्टर स्थिति वह हो सकती है जो हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण है या जो दूसरों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। कई विचलित स्थितियां मास्टर स्टेटस बन जाती हैं। स्थिति संकेत या स्थिति चिह्न किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति के संकेतक हैं। जब लोग बातचीत करते हैं, तो उनकी स्थिति अक्सर एक पदानुक्रम में व्यवस्थित होती है। उदाहरण के लिए, मध्ययुगीन काल में, रईसों ने अन्य रईसों, किसानों के साथ अन्य किसानों के साथ बातचीत, सहानुभूति, प्रेम और स्नेह की स्थिति की ओर बढ़ते हैं। रईसों और किसानों के लिए किसी भी तरह की बातचीत का अनुभव करना दुर्लभ था। मैक्स वेबर सहित प्रमुख समाजशास्त्रियों द्वारा सामाजिक स्थिति को वर्गीकृत किया गया है। उन्होंने सामाजिक स्तरीकरण के लिए तीन प्राथमिक घटक संपत्ति, प्रतिष्ठा और शक्ति प्रस्तावित किए । प्रॉपर्टी/ संपत्ति से तात्पर्य किसी की भौतिक संपत्ति और उसके बाद के जीवन के अवसरों से

है। प्रतिष्ठा का तात्पर्य किसी की सामाजिक स्थिति से जुड़ी प्रतिष्ठा या सम्मान से है। शक्ति का अर्थ है वह करने की क्षमता, जो किसी की इच्छा की परवाह किए बिना, इन "तीन पी"(power,property,pratishtha) को सामाजिक स्तरीकरण बनाने के लिए संयुक्त किया जाता है। एक और फ्रांसीसी समाजशास्त्री पियरे बॉरडियू ने सामाजिक स्थिति को निरंतर बनाना जारी रखा। बोर्डीओ के 1313 के कार्य भेद के अनुसार, सामाजिक पूंजी आर्थिक पूंजी के रूप में सामाजिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण कारक है।

(b) सामाजिक भूमिकाएँ (Social Roles)

सामाजिक भूमिका विशिष्ट स्थिति के आधार पर संभावनाओं का समुच्चय है। भूमिका प्रदर्शन से तात्पर्य है कि कोई व्यक्ति वास्तव में कैसे भूमिका निभाता है। जब यह भूमिका अपेक्षा से बहुत दूर है, तो हम इसे विचलन कहते हैं। समाज में कई तरह की भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ होती हैं जैसे कि एक महिला की एक प्रोफेसर, शोधकर्ता, माँ और पत्नी के रूप में अलग-अलग भूमिकाएँ होती हैं। भूमिका संघर्ष तब होता है जब दो या अधिक भूमिकाओं के बीच प्रतिस्पर्धा की मांग होती है। भूमिका तनाव तब होता है जब एक भूमिका की मांग और अपेक्षाएं हमें संतुष्ट करना असंभव होती है। भूमिका संघर्ष के प्रभाव, जैसा कि केस स्टडी और देशव्यापी सर्वेक्षणों के माध्यम से पाया जाता है, व्यक्तिगत व्यक्तित्व विशेषताओं और पारस्परिक संबंधों से संबंधित हैं। जब किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के पहलू उसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं के साथ संघर्ष करते हैं, तो मनुष्य के व्यक्तित्व संबंधी चारित्रिक संघर्ष उत्पन्न हो सकते हैं। '

c) संस्कृति(Culture) समाजशास्त्री ई. बी. टेलर के अनुसार "संस्कृति वह जटिल है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा और समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित की गई कोई अन्य क्षमताएं और आदतें शामिल हैं"। समाजशास्त्री भी संस्कृति को सीखे हुए व्यवहार के रूप में स्वीकार करते हैं। उनके विचार में, बच्चे किसी विशेष संस्कृति में बड़े होने के दौरान उन्हें सीखते हैं क्योंकि पुराने सदस्य उन्हें सिखाते हैं कि कैसे जीना है। जैसे,

संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक नीचे जाती है। सीखने की संस्कृति की इस प्रक्रिया को उच्चारण कहा जाता है। 'क्योंकि संस्कृति सीखी जाती है, यह आवश्यक रूप से सामाजिक जीवन का एक पहलू है और इसलिए, एक समाज या ऐसे लोगों के समूह की आवश्यकता होती है जो एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं और उनसे जुड़ते हैं। लेकिन समाजशास्त्री संस्कृति के मूल तत्व के बारे में सहमति में नहीं हैं। अमेरिकी समाजशास्त्री ओगबर्न ने सभी मानव उपलब्धियों को संस्कृति माना है और इसे दो वर्गों-**भौतिक संस्कृति** और **गैर-भौतिक संस्कृति** में विभाजित किया है।

भौतिक संस्कृति में, उन्होंने मनुष्य द्वारा बनाई गई सभी वस्तुओं जैसे मिट्टी के बर्तन, कपड़े, गहने, घर, मशीन, उपकरण, हथियार, परिवहन और संचार के साधन को शामिल किया है,। जबकि, गैर-भौतिक संस्कृति में उन्होंने वैचारिक उपलब्धियों जैसे कि जीवन शैली, खान-पान, व्यवहार के मानदंड, रीति-रिवाज, परंपरा, कला, कौशल, भाषा, साहित्य, धर्म, दर्शन, आदर्श, विश्वास और मूल्य आदि को शामिल किया है। और पेज ने संस्कृति को हमारे जीवन जीने के तरीके और कला में, कला में, साहित्य में, धर्म में, मनोरंजन और आनंद में, हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति के रूप में लिया है।

(d) **सोशल क्लास**: सोशल क्लास वह परत या सामाजिक स्ट्रेटम है जो सामाजिक आर्थिक शक्ति को दर्शाता है। समाजशास्त्री ओगबर्न और नीमकोफ ने सामाजिक वर्ग को "किसी दिए गए समाज में अनिवार्य रूप से समान सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों के समुच्चय" के रूप में परिभाषित किया है । कुछ सामाजिक समूहों का गठन सामाजिक वर्ग की तीन श्रेणियों के आधार पर किया जाता है, जिनके द्वारा व्यक्तियों को ऊपरी, मध्य और निम्न वर्ग में विभाजित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, सामाजिक वर्ग का वर्णन है कि कैसे लोगों को उनकी संपत्ति या शक्ति के आधार पर विभेदित किया जाता है। इन सामाजिक समूहों में प्रमुख वर्ग चेतना है। इस वर्ग की चेतना में सुरक्षा, साथी भावना, सामाजिक भागीदारी, सहयोग, मदद और सहानुभूति है, जिसमें वर्ग शामिल है। दूसरी ओर, इस वर्ग की चेतना, अक्सर, घबराहट,

श्रेष्ठता की झूठी भावना, प्रतिद्वंद्विता (competition), तनाव और संघर्ष के परिणामस्वरूप होती है जिसके परिणामस्वरूप जीवन और संपत्ति का बहुत विनाश होता है। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, वर्ग को श्रेणी, रैंक, और आदेश जैसी श्रेणियों को प्रतिस्थापित करने के लिए समाज को श्रेणीबद्ध विभाजन में प्राथमिक साधन के रूप में लाया गया। यह वंशानुगत विशेषताओं और सामाजिक पदानुक्रम में स्थिति के संकेतक के रूप में धन और आय के महत्व में वृद्धि के महत्व में एक सामान्य कमी के अनुरूप है। जबकि वंशानुगत विशेषताएं, जैसे कि एक धनी परिवार में पैदा होना, उस सहजता को प्रभावित करना जारी रखता है जिसके साथ कोई वयस्क सामाजिक प्रतिष्ठा स्थापित करता है, वह मॉडल जो वर्ग पर जोर देता है और प्राप्त स्थिति पूंजीवादी समाजों में यथास्थिति बनाए रखता है।

(e) **सामाजिक समूह (Social Groups)**: मानव समाज का आधार सामाजिक समूह है। सामाजिक समूह एक बच्चे की शिक्षा की जवाबदेही तय करता है। एक सामाजिक समूह उन लोगों का एक संग्रह है जो एक दूसरे के साथ पहचान और बातचीत करते हैं। उन्हें किसी तरह से एकीकृत किया जाता है, जिसका अर्थ है कि वे हितों, मूल्यों, भाषा, पृष्ठभूमि, सामाजिक भूमिका या पारिवारिक संबंधों को साझा कर सकते हैं। सामाजिक समूह दो प्रकार के हैं, जो निम्नलिखित हैं –

a. स्थायी (Permanent) और
b. अस्थायी (Temporary)। परिवार, स्कूल, क्लब, व्यायामशाला खेल और खेल, व्यावसायिक संगठन के साथ समूह स्थायी समूह हैं। इसी तरह, दोस्त, दर्शक, दर्शक और दर्शक आदि अस्थायी समूहों के उदाहरण हैं। ये समूह और बच्चे एक दूसरे को बहुत शक्तिशाली रूप से प्रभावित करते हैं। संक्षेप में, इन सामाजिक समूहों के साथ जुड़ाव बच्चे को सामाजिक शिक्षा प्रदान करता है और सामाजिक रूप से वांछनीय गुणों, दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित

करता है। इसके द्वारा, सामाजिक समूह बड़े पैमाने पर एक व्यक्ति और समाज के बीच एक इंटरफेस के रूप में काम कर सकते हैं।

(f) **सामाजिक संस्थाएँ (Social Institutions):** संस्थागतकरण किसी चीज़ को एम्बेड करने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है, जैसे कि एक अवधारणा, एक सामाजिक भूमिका, एक संगठन के भीतर एक मूल्य, या तर्क, सामाजिक प्रणाली या एक पूरे के रूप में समाज। संस्थागतकरण की प्रक्रिया इस बात को स्पष्ट करती है कि मूल्यों, मानदंडों और संस्थानों को कितनी बारीकी से परस्पर जोड़ा जाता है। एक संस्था सामाजिक व्यवस्था और सहयोग का कोई ढांचा या तंत्र है जो किसी दिए गए समुदाय के भीतर व्यक्तियों के समूह के व्यवहार को नियंत्रित करती है। संस्थानों की पहचान एक सामाजिक उद्देश्य और स्थायित्व के साथ की जाती है, जो सहकारी व्यवहार को नियंत्रित करने वाले नियमों को लागू करके व्यक्तिगत जीवन और इरादे को पार करता है। जबकि संस्थानों में स्पष्ट रूप से व्यक्तियों को शामिल किया जाता है और इन व्यक्तियों के आक्रामक कार्यों के माध्यम से नियम बनाए जाते हैं, संस्थाएं समाजीकरण की शक्तियों के रूप में कार्य करती हैं और वे व्यक्तियों को उनके मानदंडों के अनुरूप शिक्षा देती हैं। संस्थाएँ औपचारिक या अनौपचारिक हो सकती हैं। औपचारिक संस्थान वे होते हैं जिन्हें बुद्धि के अनुसार बनाया जाता है

3.3.2 सामाजिक स्तरीकरण का मानदंड (Criteria of Social Stratification)

सामाजिक स्तरीकरण के कई मानदंड हैं: जैसे कि जन्म, जाति, आयु, लिंग, पेशा, आर्थिक स्थिति, पद, अधिकार और कर्तव्य, योग्यता, कौशल, दक्षता, शिक्षा आदि। प्रत्येक समुदाय कुछ आधारों पर सामाजिक स्तरीकरण की प्रक्रिया करता है। अपने सामाजिक मूल्यों, परिस्थितियों और जरूरतों के अनुसार। उदाहरण के लिए, बंद या रूढ़िवादी समाजों में, किसी व्यक्ति की स्थिति अक्सर उसकी जाति / जन्म, लिंग और पेशे के आधार पर निर्धारित की जाती है; खुले समाज में रहते हुए, यह शिक्षा, योग्यता, कौशल, पद, अधिकारों और कर्तव्यों

आदि के आधार पर निर्धारित किया जाता है, यहाँ हम सामाजिक स्तरीकरण के मुख्य मानदंडों पर संक्षेप में निम्नलिखित चर्चा करेंगे:-

- **जन्म का मानदंड** (**Criterion of birth**)

सामंती और प्रारंभिक मध्यकाल में, स्थिति जन्म से तय की गई थी। इस प्रकार, दास और दास गुरु, कुलीन और सर्फ़, जेंट्री थे और आमतौर पर, जब स्थिति जन्म से निर्धारित होती है, तो वर्ग संरचना कठोर हो जाती है और एकीकृत गतिशीलता असंभव होती है।

- **धन का मानदंड** (**Criterion of wealth**)

यह मध्य वर्ग था जो सामंती वर्ग प्रणाली में क्रांति के लिए ऐतिहासिक रूप से जिम्मेदार था और धन के मामले में सामाजिक स्थिति की एक नई परिभाषा हासिल की। संघीय संबंधों की पूरी प्रणाली भूमि के स्वामित्व पर आधारित थी जो संघीय ढांचे में मुख्य तथ्य था।

- **नौकरशाही (Bureaucracy)**

क्रांति और वाणिज्यिक, वित्तीय और कारखाने के उत्पादन उद्यम की वृद्धि के साथ, धन को फिर से परिभाषित किया गया था। इसके अलावा भूमि अब पैसे के नए रूपों के अधीनस्थ थी और एक स्वतंत्र सामाजिक मूल्य के रूप में धन के विकास की स्थिति को नियंत्रित करने वाले कारक के रूप में जन्म को कमजोर कर दिया। धन के मामले में अब स्थिति परिभाषित होने लगी है। एक वर्ग प्रणाली अस्तित्व में आई जो कठोर नहीं थी, लेकिन पहल और उद्यम के व्यक्तियों को उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों के आधार पर बढ़ने की अनुमति दी। आधुनिक समाज में नए मोबाइल पूंजीवादी समाज धन में भी एक अधिक निर्धारक भूमिका पर आर्थिक और सामाजिक स्थिति के बीच कुछ वर्ग संबंध हैं।

- **प्रेस्टीज (Prestige)**

एक व्यवसाय का प्रेस्टीज भी कुछ हद तक उन लोगों की औसत आय से प्रभावित होता है जो इसका पालन करते हैं। हालांकि यह ध्यान दिया जा सकता है कि एक स्वतंत्र कारक के रूप में आय एक व्यवसाय की प्रतिष्ठा का एक मोटा सूचकांक है। उदाहरण के लिए, एक बड़े

सार्वजनिक उद्यमों के प्रबंध निदेशक को अधिक महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता है कि राष्ट्रपति इस तथ्य के बावजूद कि निदेशकों का उच्च वेतन हो सकता है। जिन लोगों की प्रतिष्ठा उस समय से जुड़ी हुई है, उनकी कमी व्यक्तिगत स्वतंत्रता की मात्रा को महत्व देती है, जो वे अपने साथ लाते हैं और कई तर्कहीन कारकों पर कोई संदेह नहीं करते हैं, जो विभिन्न प्रकार के काम के लोगों के मूल्यांकन में प्रवेश करते हैं जो अंतर समाजों और अलग-अलग समय पर एक ही समाज में बहुत अधिक प्रतीत होते हैं ।

- **राजनीति और सत्ता का मापदंड (Criterion of politics and power)**

आधुनिक समाज में, राजनीतिक प्रणाली सामाजिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। इस तरह की व्यवस्था समाज को शासक और शासित के विभिन्न वर्गों में विभाजित करती है। हर समाज में, नियम बुक वाले एक उच्च स्थिति का आनंद लेते थे। लोकतंत्र में विधायकों और मंत्रियों ने भी उच्च प्रतिष्ठा का आनंद लिया, हालांकि उनमें से कुछ अनपढ़ भी हो सकते हैं ।

3.3.3 सामाजिक स्तरीकरण पर कार्यात्मक परिप्रेक्ष्य (Functional Perspective on Social Stratification)

समाजशास्त्र में, कार्यात्मक दृष्टिकोण (संरचनात्मक कार्यात्मकता) का श्रेय हर्बर्ट स्पेंसर को दिया जाता है। यह बताता है कि समाज व्यवस्था के विभिन्न हिस्सों का योग है, जो पूरी प्रणाली को चलाने का काम करता है। यह मानव शरीर की जैविक अवधारणा से संपूर्ण और अंगों के अंगों के रूप में समानताएं खींचता है। कार्यात्मकवादियों का मानना है कि समाज के कामकाज और स्थिरता के लिए सामाजिक स्तरीकरण आवश्यक है। 1345 डेविस और मूर द्वारा डेविस-मूर परिकल्पना को सामने रखा गया, ने दावा किया कि पुरस्कारों का असमान वितरण समाज में एक उद्देश्य की पूर्ति करता है। वास्तव में, असमानता और पदानुक्रम फायदेमंद है। कार्यात्मकवादियों का मानना है कि सफाई और रखरखाव कार्यों जैसे कुछ कार्य

हैं, जो किसी या कई लोगों द्वारा किए जा सकते हैं। हालाँकि, कुछ कार्य ऐसे होते हैं जो समाज के कुछ ही सदस्यों द्वारा किए जा सकते हैं, और इस प्रकार उन कुछ के लिए एक प्रेरक कारक के रूप में अत्यधिक भुगतान किया जाता है। प्रतिभाशाली और सर्वश्रेष्ठ योग्य व्यक्तियों का योगदान समाज के लिए बहुत आवश्यक है, और इस प्रकार, उन्हें बेहतर पुरस्कार और उच्च वेतन द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। इस परिप्रेक्ष्य के खिलाफ कई तर्क हैं, क्योंकि असमानता या पदानुक्रम को हमेशा समाज के लिए फायदेमंद नहीं माना जाता है, न ही यह कारण पर आधारित है।

3.3.4 शिक्षा और सामाजिक स्तरीकरण (Education and Social Stratification)

शिक्षा में वे सभी अनुभव होते हैं, जो व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं। उचित शिक्षा एक व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने और अधिकारों से पहले जिम्मेदारियों को रखने के लिए तर्क का संकाय बनाती है। कुछ समाजशास्त्री कहते हैं कि जहां शिक्षा की कमी है, लोग कई विषमताओं और स्तरीकरण से पीड़ित हैं जो समाज में गंभीर समस्याएं पैदा करते हैं लेकिन कुछ अन्य समाजशास्त्री सोचते हैं कि कई संदर्भों में शिक्षा समाज में सामाजिक स्तरीकरण पैदा करती है। आमतौर पर समाज दो प्रकार के होते हैं:-

i)निकट/घनिष्ठ समाज (Closed Society)

ii)खुले समाज (Open Society)

घनिष्ठ समाजों में, सामाजिक स्तरीकरण के मुख्य आधार जाति, आयु, लिंग और पेशे हैं; जबकि खुले समाजों में शिक्षा, योग्यता, दक्षता, पद और अधिकार मुख्य आधार हैं। शिक्षा खुले समाजों में सामाजिक स्तरीकरण का मुख्य आधार है। इस संदर्भ में, शिक्षा का कार्य घनिष्ठ समाजों को समाप्त करना और खुले समाजों का निर्माण करना है जैसा कि नीचे समझाया गया है l

- **शिक्षा द्वारा करीबी समाजों का उन्मूलन** (**Eradication of close societies by Education**)

जैसे-जैसे इस समाज में शिक्षा का विस्तार हो रहा है, करीबी समाज समाप्त होते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय समाज कुछ समय पहले तक जाति और धर्म पर आधारित था, लेकिन जन शिक्षा के विस्तार के साथ, अंधविश्वासों को खत्म किया जा रहा है, और शिक्षा उस व्यवस्था को खत्म करने में सहायता कर रही है जिसे हम प्रकृति के साथ परमात्मा मानते थे। जन्म पर आधारित भेद समाप्त हो रहा है। जाति और धर्म आज दुनिया को अधिक नियंत्रित नहीं करते हैं, और लोगों की योग्यता, कौशल, दक्षता को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

- **शिक्षा द्वारा प्रगतिशील समाजों का निर्माण** **(Construction of progressive societies by Education)**

एक प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि जन शिक्षा पेशेवर, वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक शिक्षा के साथ संयुक्त हो। आज, लगभग सभी समाज इस प्रकार की शिक्षा प्रदान करने के लिए गंभीर प्रयास कर रहे हैं, और वे धीरे-धीरे शिक्षा की उन्नति के साथ प्रगतिशील होते जा रहे हैं। अब, इन समाजों में लोगों को उनकी क्षमताओं और पदों के आधार पर स्तरीकृत किया जा रहा है।

3.3.5 सामाजिक गतिशीलता की परिभाषा (Definition of Social Mobility)

व्यक्तियों, परिवारों या अन्य श्रेणी के लोगों का समाज के एक वर्ग (strata) से दूसरे वर्ग में गति सामाजिक गतिशीलता (Social mobility) कहलाती है। इस गति के परिणामस्वरूप उस समाज में उस व्यक्ति या परिवार की दूसरों के सापेक्ष सामाजिक स्थिति (स्टैटस) बदल जाता है। समाजशास्त्रीयों के अनुसार सामाजिक गतिशीलता की परिभाषा निम्नलिखित हैं:--

i. बोगार्डस- "सामाजिक पद में कोई भी परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता है ।"

ii. फिचर के अनुसार, "सामाजिक गतिशीलता व्यक्ति, समूह या श्रेणी के एक सामाजिक पद या स्तृत से दूसरे में गति करने को कहते हैं ।"

iii. हार्टन तथा हण्ट के अनुसार, "सामाजिक गतिशीलता का तात्पर्य उच्च या निम्न सामाजिक प्रस्थितियों में गमन करना है"

सोरोकिन के अनुसार,"सामाजिक गतिशीलता से हमारा तात्पर्य सामाजिक समूहों तथा स्तरों के झुण्ड में एक सामाजिक पद से दूसरे सामाजिक पद में परिवर्तन होना है ।"

एस. एम. दुबे-"सामाजिक गतिशीलता एक बहुत ही विस्तृत शब्द है जिसके अन्तर्गत या तो व्यक्ति या सम्पूर्ण समूह की आर्थिक, राजनीतिक या व्यावसायिक प्रस्थिति में ऊपर या नीचे की ओर परिवर्तन को सम्मिलित किया जाता है।"

3.3.6 सामाजिक गतिशीलता का सम्बन्ध व्यक्ति या समूह के पद या प्रस्थिति से है ।

(i) सामाजिक गतिशीलता में व्यक्ति या समूह की सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन होता है ।

(ii) यह परिवर्तन एक समूह या समाज की संरचना के अन्तर्गत ही होता है ।

(iii) सामाजिक गतिशीलता की कोई निश्चित दिशा नहीं है, यह ऊपर व नीचे की ओर समानान्तर भी हो सकती है ।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि जब किसी व्यक्ति या समूह की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होता है तो उसे सामाजिक गतिशीलता कहते हैं ।

3.3.7 सामाजिक गतिशीलता के प्रकार (Types of Social Mobility)

समाजशास्त्री सोरोकिन ने सामाजिक गतिशीलता के चार प्रमुख प्रकारों का उल्लेख किया है:--

i. क्षैतिज या समरैखिक सामाजिक गतिशीलता (Horizontal Social Mobility)

ii. उदग्र या रैखिक गतिशीलता (Vertical Social Mobility)

iii. अन्त: तथा अन्तर पीढ़ी गतिशीलाता (Inter-intra generational Mobility)

iv. मुक्त (खुली) एवं बंद गतिशीलता (Open and Closed Mobility)

i) क्षैतिज या समरैखिक सामाजिक गतिशीलता (Horizontal Social Mobility)

क्षैतिज गतिशीलता का अर्थ एक ही सामाजिक पर के एक ही प्रकार के सामाजिक समूह या स्थिति से दूसरे में आगे या पीछे गमन करना है ।

ii) उदग्र या रैखिक गतिशीलता (Vertical Social Mobility)

एक सामाजिक स्तर से दूसरे में ऊपर या नीचे की ओर गमन की उदग्र सामाजिक गतिशीलता कहते हैं ।

iii) अन्त: तथा अन्तर पीढ़ी गतिशीलाता (Inter-intra generational Mobility)।

अन्तर पीढ़ी गतिशीलता का तात्पर्य है एक पीढ़ी में धारण किये गये पद को त्यागकर दूसरी पीढ़ी के पदों को ग्रहण करना । यह प्राकृतिक एवं स्वाभाविक है । अनार पीढ़ी गतिशीलता का एक उदाहरण आश्रम व्यवस्था है । जिसमें एक व्यक्ति ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम से गुजरता है । यह गतिशीलता व्यवस्थित, सरल तथा जटिलताओं से मुक्त है । विवाह करके व्यक्ति द्वारा पति व पिता का तथा स्त्री द्वारा पत्नी व माँ का पद ग्रहण करना भी अन्तर पीढ़ी गतिशीलता ही है । विवाह या तलाक के बाद स्त्री का एवं गोद लेने पर लड़के का एक परिवार एवं नातेदारी समूह में प्रवेश इस प्रकार की गतिशीलता के उदाहरण हैं ।

iv)मुक्त (खुली) एवं बंद गतिशीलता (Open and Closed Mobility)।

(i) मुक्त (Open) एवं

(ii) बन्द गतिशीलता (Closed) ।

गतिशीलता के ये दोनों ही प्रमुख स्वरूप एक-दूसरे के विपरीत हैं ।

(i) मुक्त (खुली) गतिशीलता (Open Mobility)

इस प्रकार की गतिशीलता वाले समाजों में विभिन्न स्तर समूहों की सदस्यता का आधार जन्म या आनुवंशिकता न होकर व्यक्ति के गुण, योग्यता एवं उपलब्धियाँ होती हैं । व्यक्ति की किसी भी सार समूह की सदस्यता का निर्धारण जीवन भर के लिए नहीं होता है । वह एक स्तर एवं पद से दूसरे स्तर एवं पद में गमन कर सकता है । आज जो व्यक्ति एक स्थिति समूह का सदस्य है, वह आगे आने वाले समय में अपनी योग्यता, गुणों एवं परिश्रम के आधार पर उपलब्धियों को बढ़ाकर किसी उच्च स्तर, पद या समूह की सदस्यता ग्रहण कर सकता है । मुक्त व्यवस्था वाले समाजों में गतिशीलता को स्वीकार किया जाता है, और बढ़ावा दिया जाता है । एक व्यक्ति अपनी प्रस्थिति और पद में वृद्धि और प्रगति के लिए स्वतन्त्र होता है । इसलिए ही इसे खुली या मुक्त गतिशीलता के नाम से पुकारा जाता है ।

मुक्त गतिशीलता वर्ग व्यवस्था पर आधारित संस्तरण की व्यवस्था वाले समाजों में देखने को मिलती है । यूरोप के अधिकतर समाजों एवं अमेरिका में मुक्त गतिशीलता अधिक पायी जाती है क्योंकि वहाँ सामाजिक संस्तरण वर्ग के आधार पर निर्मित है ।वहाँ वर्ग की सदस्यता का निर्धारण प्रमुखत: व्यक्ति की आर्थिक स्थिति के आधार पर होता है । राजनीतिक सत्ता या शक्ति तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में प्राप्त विशिष्ट उपलब्धियाँ भी व्यक्ति में गतिशीलता उत्पन्न करने में योगदान देते हैं ।

(ii) बन्द गतिशीलता (Closed Mobility)

इस प्रकार की गतिशीलता बन्द स्तरीकरण वाली समाज व्यवस्था की विशेषता है जिन में व्यक्ति के पद एवं स्तर समूह का निर्धारण जन्म या आनुवंशिकता के आधार पर होता है जिसे वह अपने जीवनकाल में नहीं बदल सकता है । अत: एक समूह को त्यागकर दूसरे समूह की सदस्यता ग्रहण करने का प्रश्न ही नहीं उठता है ।

बन्द स्तरीकरण वाली व्यवस्था का उदाहरण भारत की जाति प्रथा है । इसके अन्तर्गत व्यक्ति की जाति का निर्धारण जन्म के समय ही हो जाता है । व्यक्ति आजीवन उसी जाति का सदस्य बना रहता है जिसमें उसका जन्म हुआ है । प्रत्येक जाति की समाज में स्थिति, अधिकार, दायित्व एवं कार्य निश्चित होते हैं । व्यक्ति की गतिशीलता के अवसर नगण्य होते हैं ।

3.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

अधिगम सम्बंधित क्रियाकलाप

रिक्त स्थान भरो:

i) .....वर्ग की सदस्यता का निर्धारण प्रमुखत: व्यक्ति की आर्थिक स्थिति के आधार पर होता है ।

ii) किसी भी सार समूह की सदस्यता का निर्धारण जीवन भर के लिए .....होता है ।

iii) सोरोकिन ने सामाजिक गतिशीलता के .....प्रकारों का उल्लेख किया

है ।

iv) व्यक्तियों, परिवारों या अन्य श्रेणी के लोगों का समाज के एक वर्ग (strata) से दूसरे वर्ग में गति .....कहलाती है।

v) एक प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए शिक्षा आवश्यक है ।

vi) .....द्वारा एक समाज एक पदानुक्रम में लोगों की श्रेणियों को रैंक करता है।

कृपया उत्तर की पड़ताल पाठ के अंतिम हिस्से 3.2 में करें।

3.5 सारांश (Summary)

आप जान गए हैं कि एक सामाजिक संपर्क दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच एक सामाजिक आदान-प्रदान है। यह सभी सामाजिक प्रक्रियाओं, संरचना, सामाजिक समूहों और कार्यों का वास्तविक आधार है। समाजशास्त्र में बातचीत/व्यक्तिगत संपर्क अपने ज्ञान का द्वार है। सामाजिक स्थिति, जाति, भूमिका, संस्कृति, पेशे, सामाजिक समूह, वर्ग, सामाजिक संस्थानों और सामाजिक नेटवर्किंग पर आधारित सामाजिक संपर्क के विभिन्न प्रकार, तत्वों और रूपों पर विस्तार से चर्चा की गई है। समाज में एक और महत्वपूर्ण घटना होती है यानी सामाजिक स्तरीकरण, जो समाज के अपने लोगों को धन, आय, दौड़, शिक्षा और शक्ति जैसे कारकों के आधार पर सामाजिक-आर्थिक स्तरों की रैंकिंग में वर्गीकृत करता है। इसलिए, हम समाज में जाति आधारित और वर्ग आधारित स्तरीकरण पाते हैं। सामाजिक स्तरीकरण

विभिन्न सिद्धांतों और विशेषताओं पर आधारित है। डेविस और मूर परिकल्पना पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण के कार्यात्मक परिप्रेक्ष्य को समझाया गया है। सामाजिक स्तरीकरण के कई मापदंड जैसे जन्म, जाति, आयु, लिंग, पेशा, आर्थिक स्थिति, पद, अधिकार और कर्तव्य, योग्यता, कौशल, दक्षता, शिक्षा हैं । शिक्षा खुले समाजों में सामाजिक स्तरीकरण का मुख्य आधार है। इस संदर्भ में, शिक्षा का कार्य घनिष्ठ समाजों को समाप्त करना और खुले समाजों का निर्माण करना है।

3.6 सूचक शब्द (Keywords)

- **सामाजिक स्तरीकरण**: प्रक्रिया है जिसमे व्यक्तियों के समूहों को उनकी प्रतिष्ठा, संपत्ति और शक्ति की मात्रा के सापेक्ष पदानुक्रम में विभिन्न श्रेणियों में उच्च से निम्न रूप में स्तरीकृत किया जाता है।
- **संरचनात्मक कार्यात्मकता**: अवरोध और अवसरों को अधिक स्पष्ट तौर पर देखा जाये यह सांस्कृतिक मानदंडों या अन्य व्यक्तिपरक चीज़ों की तुलना में मानव व्यवहार पर अधिक प्रभाव डालता है।, या विकसित एक चेतना सिद्धान्त
- **सामाजिक संघर्ष**: विकट और विपरीत परिस्थितियों से निकलकर आगे बढ़ने के लिए होने वाला प्रयत्न या प्रयास;
- **प्रतीकात्मक**: जो प्रतीक से संबद्ध हो, प्रतीक संबंधी।
- **सामाजिक प्रक्रिया**: जिस विधि से व्यक्ति सामाजिक जीवन का अंग बनता है उसे सामाजिक प्रक्रिया कहते हैं।
- **गेसलशाफ्ट**:परिणामस्वरूप हर व्यक्ति अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए समाज को जेमिन्शाफ्ट से गेसलशाफ्ट में स्थानांतरित करना चाहता है।
- **सामाजिक संरचना**: वह व्यवस्था जो समाज से संबंधित हो ।

- **सामाजिक समूह**: समूह शब्द का प्रयोग हम व्यक्तियों के संग्रह के लिए करते हैं,

3.7 स्व-मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

- सामाजिक स्तरीकरण क्यों मौजूद है और कुछ देश दूसरों की तुलना में अधिक स्तरीकृत क्यों हैं? इस प्रश्न का विस्तृत उत्तर उदहारण सहित दीजिए ।
- सामाजिक संपर्क और सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणा लिखें ।
- सामाजिक स्तरीकरण के प्रकारों में अंतर कौन-कौन से हैं, सूचि बनाये ।
- सामाजिक स्तरीकरण के विभिन्न मानदंडों की व्याख्या करें ।
- शिक्षा और सामाजिक स्तरीकरण के बीच संबंध का वर्णन करें ।

3.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

रिक्त स्थान भरो:

उत्तर: i) मुक्त गतिशीलता, ii) नहीं, iii) चार प्रमुख, iv) सामाजिक गतिशीलता, v) शिक्षा, vi) सामाजिक स्तरीकरण

3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

- Basic Concepts of Education by Arung, Fernades , www.linkedin.com

- Indian Political System (4th Ed.) By Roy, H and Singh, M.P. , Pearson India Education Services

- History of Social thought by K.Singh, Prakashan Kendra, Lucknow.

- Principles of Political Science by Anup C, Kanpur, S. Chand and Company.

- Sociology: An Introduction by Smelser, Neil, J.,Wiley Eastern Private Limited

- Sociology: Principles of sociology with an introduction to social thought by Shanker Rao C.N., S. Chand and Company.

Subject : Sociology(Society, Culture and Social Change)	
Course Code **: SOCL 102**	Author **: Dr. Shakuntla Devi**
Lesson No. **: 04**	Updated by: **Self**
समाजीकरण: महत्व, प्रक्रिया, अवस्था, सामाजिक नियंत्रण, इसके प्रकार और साधन (Socialization: Importance, Process, Stages, Social- Control, Its types and means)	

<u>अध्याय की संरचना</u>

4.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

4.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

4.2.1 समाजीकरण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Socialisation)

4.2.2 समाजीकरण के उद्देश्य (Aims and Objectives of Socialisation)

4.2.3 समाजीकरण की प्रक्रिया (Process of Socialization)

4.2.4 समाजीकरण की एजेंसियां (Agencies of Socialisation)

4.2.5 समाजीकरण के चरण (Stages of Socialisation)

a.मौखिक चरण (Oral phase)

b.गुदा चरण (anal phase)

c.ओडिपल चरण (Oedipal phase)

d.किशोरावस्था (adolescence phase)

4.2.6 समाजीकरण के महत्व (Importance of Socialisation)

4.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

4.3.1 सामाजिक नियंत्रण (Social Control)

4.3.2 सामाजिक नियंत्रण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Social Control)

4.3.3 सामाजिक नियंत्रण की विशेषताएं (Characteristics of Social Control)

4.3.4 सामाजिक नियंत्रण के प्रकार / एजेंसियां (Agencies of Social Control)

4.3.5 सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता (Importance of Social Control)

4.3.6 सामाजिक नियंत्रण प्राप्त करने के लिए कदम (Steps/Means to attain social control)

4.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

4.5 सारांश (Summary)

4.6 सूचक शब्द (Keywords)

4.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

4.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

4.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद आपको निम्न पता होना चाहिए व आप कर सकेंगे ।

- समाजीकरण के अर्थ, परिभाषा और सामाजिक नियंत्रण, आत्म नियंत्रण तथा कुप्रबंधन को जानेंगे ।
- सामाजिक सामंजस्य की सामाजिक नियंत्रण के अर्थ, परिभाषा को जानेंगे ।
- समाजीकरण की आवश्यकता और महत्व समझेंगे ।
- सामाजिक नियंत्रण के रूप, साधन और एजेंसियां का वर्णन कर सकेंगे ।

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

मानव शिशु बिना किसी संस्कृति के पैदा होते हैं। उन्हें अपने माता-पिता, शिक्षकों और अन्य लोगों द्वारा सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से अनुकूल प्राणिओं में बदलना चाहिए। संस्कृति प्राप्त करने की सामान्य प्रक्रिया को समाजीकरण के रूप में संदर्भित किया जाता है। समाजीकरण के दौरान, हम उस संस्कृति की भाषा सीखते हैं जिस योनि का हम जन्म लेते हैं और साथ ही वे भूमिकाएँ भी निभाते हैं जिन्हें हम जीवन में निभाते हैं। उदाहरण के लिए, लड़कियां सीखती हैं कि बेटियां, बहनें, दोस्त, पत्नियां और मां कैसे बनें। इसके अलावा, वे उन व्यावसायिक भूमिकाओं के बारे में सीखते हैं जो उनके समाज में उनके लिए हैं। हम सीखते भी हैं और आमतौर पर अपनी संस्कृति के मानदंडों को अपनाते हैं ताकि समाजीकरण प्रक्रिया के माध्यम से सुना जा सके। मानदंड उचित और अपेक्षित व्यवहार की अवधारणाएं हैं जो समाज के अधिकांश सदस्यों द्वारा आयोजित की जाती हैं। जबकि समाजीकरण संस्कृति को प्राप्त करने की सामान्य प्रक्रिया को संदर्भित करता है, मानवविज्ञानी समाजीकरण शब्द का उपयोग करते हैं, एक विशेष संस्कृति के लिए सामाजिक होने की प्रक्रिया के लिए माता-पिता अन्य लोगों द्वारा और विशिष्ट संस्कृति के लिए अपनाते हैं ।

समाज के अस्तित्व के लिए सामाजिक एकजुटता आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति अपने भोलेपन, विचारों, दृष्टिकोणों और रुचियों में एक जैसा नहीं होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक अलग व्यक्तित्व है। व्यक्तियों के बीच कार्य-स्तर के अंतर हैं। तथ्य के रूप में समाज विषम है। यदि प्रत्येक व्यक्ति को कार्य करने और व्यवहार करने के लिए अप्रतिबंधित स्वतंत्रता की अनुमति है, तो यह सामाजिक विकार को खा जाता है। एक व्यवस्थित सामाजिक जीवन के लिए सामाजिक नियंत्रण आवश्यक है। सामाजिक नियंत्रण का उद्देश्य किसी विशेष समूह या समाज की अनुरूपता, एकजुटता और निरंतरता को सामने लाना है।

समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए सामाजिक नियंत्रण आवश्यक है। प्रत्येक समाज-व्यक्ति या समूह के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी सामाजिक व्यवस्था बनाए रखे और यह तभी संभव है

जब उसके सदस्य इस सामाजिक व्यवस्था के अनुसार व्यवहार करें। सामाजिक नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य पुराने व्यवस्था को बनाए रखना है। हालांकि बदलते समाज में पुराने आदेश को लागू करने से सियासी प्रगति में बाधा पड़ सकती है, फिर भी समाज में निरंतरता और एकरूपता बनाए रखना आवश्यक है।

4.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

4.2.1 समाजीकरण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Culture)

समाजीकरण एक आजीवन प्रक्रिया है जिसके दौरान हम सामाजिक अपेक्षाओं और कैसे करें के बारे में सीखते हैं अन्य लोगों के साथ बातचीत करें। समाजीकरण के दौरान, हम व्यवहार सहित अपनी संस्कृति के बारे में सीखते हैं मानदंड और मूल्य जो हमें सिखाते हैं कि हमें अपने समाज में कैसे फिट होना है। हम चलना और बात करना, अपने आप को और हमारे आसपास के लोगों से सही और गलत के बीच अंतर भी बच्चों के रूप में सीखते हैं । समाजीकरण के माध्यम से, हम एक व्यक्तिगत पहचान प्राप्त करते हैं और दूसरों के साथ अपने संबंधों को महत्व देते हैं। पूरे जीवनकाल तक समाजीकरण प्रक्रिया जारी रहती है। लगभग सभी व्यवहार जिसे हम 'मानव स्वभाव' मानते हैं, वास्तव में इसके माध्यम से सीखा जाता है

फिर भी ऐसी संस्कृतियाँ हैं जिनमें महिलाएँ कठोर उपायों को करने जाती हैंउनकी गर्दन को लम्बा करें और उनके पैरों को सिकोड़ें ताकि उनकी सुंदरता के सांस्कृतिक मानकों (सांस्कृतिक मानक स्पष्ट रूप से हमारे समान नहीं हैं) को प्राप्त किया जा सके । इसलिए सांस्कृतिक रूप से दूसरों से परिभाषित और सीखा हुआ सौंदर्य सभी के बीच सहज नहीं हो सकता है ।

- समाजीकरण विकास की एक प्रक्रिया है, व्यक्तित्व में एक व्यक्ति को विकसित करना, व्यक्तित्व में विकास की प्रक्रिया, किसी व्यक्ति को समाज में शामिल करना समाजीकरण कहलाता है। यह समाज में मनुष्य को समायोजित करने के लिए प्रशिक्षण की एक प्रक्रिया है।
- मनुष्य को विभिन्न सामाजिक समूहों और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में समय देना है और जीवन की नई विधाओं में समायोजित होने के लिए जीवन की तकनीकों को सीखना है।

सामाजिक जीवन की सीखने की तकनीक को समाजीकरण कहा जाता है। विभिन्न सामाजिक स्थितियों का सीखना समाजीकरण की प्रक्रिया है। व्यक्ति का समाजीकरण जन्म से शुरू होता है। एक दर्शन के अनुसार जब बच्चा होता है जो सिखाया जाता है वह उस पर अंकित हो जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि "बच्चा मनुष्य का पिता है"। समाजशास्त्रीयों के अनुसार समाजीकरण के विभिन्न परिभाषाएँ जो निम्नलिखित हैं:--

- **समाजशास्त्री वुजलेय के अनुसार,**

"संस्कृति के संचरण की प्रक्रिया, वह प्रक्रिया जिससे मनुष्य सामाजिक समूह के नियमों और प्रथाओं को सीखता है"।

- **समाजशास्त्री जोलन, जे. मैककॉनिस के अनुसार,**

"यह एक लंबा जीवन सामाजिक अनुभव है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी मानवीय क्षमता को विकसित करते हैं और संस्कृति सीखते हैं"।

- **समाजशास्त्री होस्टन और हर्ट के अनुसार,**

"समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत व्यक्ति उन समूहों के मानदंडों को आंतरिक करता है ताकि जिनके बीच कोई रुचिकर अद्वितीय" अनुभव स्वयं उभरता है।

4.2.2 समाजीकरण के उद्देश्य (Aims and Objectives of Socialisation)

- **समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया है (Socialization is a process of learning)**

समाजीकरण केवल शब्द नहीं है, बल्कि व्यक्तियों के सीखने की एक पूरी प्रक्रिया है कि उनके जीवन, नैतिकता और मूल्यों का संचालन कैसे किया जाए। समाजीकरण व्यक्ति को जैव-तार्किक होने से लेकर सामाजिक होने तक में परिवर्तित करता है । समाजीकरण व्यक्ति

को एक जैविक अस्तित्व से सामाजिक अस्तित्व और सामाजिक इकाई में परिवर्तित करता है।

- **व्यक्तित्व विकास (Personality Development)**

समाजीकरण व्यक्तित्व और आत्म-विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि स्वयं को विरासत में नहीं मिला है, लेकिन व्यक्ति द्वारा समाज से प्राप्त किया गया है।

- **शिक्षक अनुशासन (Disciplined Teachers)**

समाजीकरण शिक्षक व्यक्तियों के लिए अनुशासन और आचरण करते हैं और समाज में रहने का रास्ता दिखाते हैं। समाजीकरण के माध्यम से शिक्षक कर्तव्यों और जिम्मेदारियों (Duties and Responsibilities of Teachers) पुरुष और महिला कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की भावना का निर्वहन करते हैं।

- **ज्ञान और कौशल स्थापित करता है (Establishment of Knowledge and Skills)**

समाजीकरण, व्यक्ति में ज्ञान और कौशल स्थापित करता है। यह एकमात्र प्रक्रिया है जो अर्जित कौशल के साथ प्राकृतिक प्रतिभा को चमका देती है।

- **सामाजिक व्यवस्था की स्थिरता (Stability of social organisation)**

सामाजिक नियंत्रण द्वारा सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक स्थिरता और सामाजिक व्यवस्था लाई जाती है।

- **एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संस्कृति का संचरण** (**Transmission of culture from one generation to other)**

समाजीकरण हमारी पीढ़ी से दूसरे प्रसंस्करण के लिए संस्कृति के संचरण के लिए एक पुल है।

- **सामाजिक योग्यता का विकास (Development of Social Qualities)**

समाजीकरण के माध्यम से बच्चा समाज के स्वीकृत मूल्यों और विचारों के अनुसार कार्य करने पर सामाजिक योग्यता का विकास होता है ।

4.2.3समाजीकरण की प्रक्रिया (Process of Socialization)

बच्चे के जन्म से समाजीकरण की प्रक्रिया शुरू होती है। लेकिन उसके पास सामाजिक जीवन के आवश्यक तत्वों की कमी है। जैसे-जैसे वह बढ़ता है, वह समाज की जरूरतों के अनुसार खुद को ढालता है।

व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में समाजीकरण महत्वपूर्ण है। जबकि मानव व्यक्तित्व का अधिकांश भाग हमारे मानव जीनों (Human genes-genetic material) का परिणाम है, समाजीकरण प्रक्रिया विशिष्ट विश्वासों और दृष्टिकोणों के साथ-साथ चुनिंदा अनुभव प्रदान करके इसे विशेष दिशाओं में ढाल सकती है। संभावना कुछ अधिक है कि एक समाज में दूसरे की तुलना में सामान्य व्यक्तित्व के प्रकारों में बहुत अंतर होता है। उदाहरण के लिए, कुछ ट्राइब्स (Tribes) आमतौर पर सज्जन लोग हैं जो हिंसक, आक्रामक व्यक्ति पसंद नहीं करते हैं। वास्तव में, जब भी संभव हो वे उनसे बचते हैं। इसके विपरीत, आमतौर पर यनोमामो वेनेज़ुएला और ब्राजील के बीच सीमा क्षेत्र पर भारतीयों द्वारा अपने लड़कों को कठिन और आक्रामक होने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। आदर्श यानोमाम् आदमी हिंसा और मजबूत भावनाओं से नहीं हटता है। वास्तव में, वह उन्हें ढूंढता है। इसी तरह ईरान के पुरुष शिया मुस्लिम हैं ।

सफल समाजीकरण से समाज में एकरूपता आ सकती है। यदि सभी बच्चे समान समाजीकरण प्राप्त करते हैं, तो यह संभावना है कि वे समान विश्वासों और अपेक्षाओं को साझा करेंगे। यह तथ्य दुनिया भर की राष्ट्रीय सरकारों के लिए शिक्षा के मानकीकरण और सभी बच्चों के लिए इसे अनिवार्य बनाने के लिए एक मजबूत प्रेरणा है। यह तय करना कि किन चीजों को सिखाया जाएगा और उन्हें कैसे सिखाया जाएगा, लोगों को नियंत्रित करने के लिए एक शक्तिशाली राजनीतिक उपकरण है। जो लोग समाज के मानदंडों को अपनाते हैं , वे कानून को तोड़ने या कट्टरपंथी सामाजिक परिवर्तन चाहते हैं। हालांकि,

सभी समाजों में, ऐसे व्यक्ति हैं जो सामान्य रूप से सांस्कृतिक रूप से परिभाषित मानकों के अनुरूप नहीं हैं क्योंकि वे "असामान्य रूप से" सामाजिक थे, यह कहना है कि उन्होंने समाज के मानदंडों को आंतरिक नहीं किया है। इन लोगों को आमतौर पर उनके समाज द्वारा मानसिक रूप से बीमार करार दिया जाता है।

बड़े पैमाने पर समाज, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, आमतौर पर कई जातीय समूहों से बने होते हैं। परिणामस्वरूप, विभिन्न परिवारों में प्रारंभिक समाजीकरण अक्सर तकनीकों, लक्ष्यों और अपेक्षाओं में भिन्न होता है। चूँकि ये जटिल समाज सांस्कृतिक रूप से समरूप नहीं हैं, इसलिए इनका साझा समझौता नहीं होना चाहिए। आश्चर्य की बात नहीं, इस राष्ट्रीय अस्पष्टता का परिणाम आम तौर पर सामाजिक विचलन के प्रति अधिक सहिष्णुता के रूप में होता है - ऐसे बड़े पैमाने के समाजों में उपस्थिति, व्यक्तित्व और कार्यों में भिन्न होना अधिक स्वीकार्य है ।

अतः में कहा जा सकता है कि जन्म के समय बच्चे के पास केवल "प्राकृतिक प्रवृत्ति" होती है, लेकिन बाद में समाज की जरूरतों के अनुसार विकास करते हैं। निम्नलिखित बिंदुओं पर समाजीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन किया जा सकता है;-

a) **लालन पालन (Bringing up)**

माता-पिता अपने बच्चे में सामाजिक गुण विकसित करते हैं, जिस तरह से वह बढ़ेगा और गुणों और लक्षणों को प्राप्त करेगा, जो पालन-पोषण के तरीके के परिणामस्वरूप होते हैं।

b) **पहचान (Identification)**

बच्चा परिवार से पहचान की भावना विकसित करता है जो कि उसके साथ भाषा के विकास, जीवन-यापन के मूल्यों आदि को बनाए रखता है।

c) **सामाजिक शिक्षण (Social Teaching)**

परिवार से लेकर स्कूल तक के बच्चे सामाजिक शिक्षा के साथ विकसित हुए। मिलर डोलार्ड के अनुसार, यह सामाजिक शिक्षण निम्नलिखित चार तत्वों का अनुसरण करने पर आधारित है:

i. इच्छा (Derive)

ii. संकेत (Clues,Gestures)

iii. प्रतिक्रिया(Reaction /Response)

iv. अभिलेख(Records)

v. स्थिति को देखते हुए(Perceiving the situation)

किसी भी उम्र में व्यक्ति को स्थिति के अनुसार अपने व्यवहार पैटर्न को बदलना होगा। विचार करने की यह प्रक्रिया सामाजिक विचारों को प्राप्त करने में सहायक है।

d) **आपसी व्यवहार और सहयोग (Mutual Behavior and Cooperation)**

जब एक व्यक्ति दूसरे के संपर्क में आता है, तो परस्पर सहयोग द्वारा प्रभाव पड़ता है, व्यक्ति में सामाजिक गुणों का भी विकास होता है। यह सामाजिक गुणों को विकसित करने और सामाजिक व्यक्तित्व को व्यवस्थित करने का एक और तरीका है।

e) **सुझाव (Suggestions)**

बच्चा दूसरों से मिले सुझावों के अनुसार खुद को सामाजिक जरूरतों के अनुसार ढालने की कोशिश करता है। आमतौर पर ये सुझाव परिवार, सहकर्मी समूह, स्कूल और समाजीकरण की अन्य एजेंसियों से प्राप्त किए जाते हैं।

f) **इनाम या सजा (Awards and Punishments)**

यदि सामाजिक मूल्यों और आदर्शों के अनुसार कार्य किया जाता है, तो समाज के हित के विरुद्ध कार्य करने पर इनाम और दंड मिलता है।

4.2.4 समाजीकरण की एजेंसियां (Agencies of Socialisation):

समाजीकरण की एजेंसियां , जो इस प्रक्रिया को लाती हैं। समाजीकरण की एजेंसियां निम्नलिखित पर चर्चा करते हैं।

i) परिवार (Family)

समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान परिवार को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। बच्चा न केवल सदस्य लाता है और न केवल परिवार, बल्कि समाज के संबंध में भी कई समय सीखता है। परिवार एक बुनियादी मूल्य सिखाता है।

ii) हम उम्र के साथी (Peer Groups)

"सहकर्मी समूह" का अर्थ उन समूहों से है जो स्कूल में, खेल के मैदान और सड़क पर बने हैं।

एक मित्र, चेहरे और संस्कृति के पहलुओं से सीखते हैं जो उन्होंने पहले अलग-अलग समय पर और अपने माता-पिता से सीखे हैं। जैसे ही समय बीतता है यह मित्र / सहकर्मी समूह सतहों परिवार एक "सहकर्मी संस्कृति" अधिक महत्वपूर्ण और प्रभावी हो जाता है और कई बार प्रति अनुरूप उच्चतम उपायों को लागू करता है।

iii) सामाजिक संस्थाएं

परिवार, बाजार, मस्जिद, मदरसे, मेले सामाजिकरण की सामाजिक संस्थाएं हैं। एक स्कूल समाजीकरण के शैक्षणिक संस्थान में से एक है। स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और कार्यालय औपचारिक संस्थान हैं और शिक्षक सांस्कृतिक समाचार, विश्वास और मूल्यों को सिखाने के साथ आजीविका कमाने की तकनीक और कौशल हैं।

साक्षर समाजों में साहित्य पाया जाता है और समाजीकरण पर प्रभाव डालता है। लिखा गया साहित्य और समाज एक दूसरे के दर्पण और छाया के दो पहलू हैं। साहित्य व्यक्ति को समाज का पहलू सिखाता है और उसके समाजीकरण में योगदान देता है। होर्डिंग, अखबार, पत्रिका और पाठ्य पुस्तक पर शब्द और रेडियो और टेलीविजन में उनके संदेश के रूप में जो जगह देता है। साहित्य और समाज समाजीकरण के सभी तरीकों विचारों, दृष्टिकोण और संस्कृति में योगदान देता है।

iv) समुदाय (The Community)

समाजीकरण की सबसे बड़ी एजेंसी, समुदाय में एजेंसियों के बड़े सदस्य उपलब्ध हैं जो अपने सदस्य को अनौपचारिक रूप से शिक्षित करते हैं। व्यक्ति इन एजेंसियों में भाग लेकर समाज के जीवन और मानदंडों को सीखता है और जानकारी में जोड़ता है। यह समुदाय में समाजीकरण है।

v) शारीरिक तथ्य या भौतिक तथ्य (Physiological Facts or Physical Factors)

सामाजिककरण की प्रक्रिया में शारीरिक कारकों में एक भौतिक तथ्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विकृत व्यक्ति या विकृत शरीर वाला बच्चा तेज गति से समाजीकरण प्राप्त करने में सक्षम नहीं होता है।

vi) मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological Factors)

मनोवैज्ञानिक के अनुसार, समाजीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। व्यक्ति केवल उन सामाजिक मानदंडों को प्राप्त करता है जो एक के लिए उपयोगी होते हैं और समाजीकरण की प्रक्रिया पर प्रभाव डालते हैं।

vii) जैविक आवश्यकताएं (Biological needs)

इसमें समाजीकरण की सहायता से व्यक्ति की सुरक्षा के लिए जैविक आवश्यकताओं की आवश्यकता है। जन्मजात प्रवृत्ति के लिए सामाजिक रीति-रिवाजों, परंपराओं और व्यवहार के पैटर्न की जरूरत है

4.2.5 समाजीकरण के चरण (Stages of Socialisation)

समाजीकरण सीखने की एक क्रमिक प्रक्रिया है। नवजात बच्चे को एक बार में सामाजिक जीवन के बारे में सभी चीजें नहीं सिखाई जाती हैं। यह सादगी से जटिलता तक बढ़ता है। जीवन के प्रारंभिक चरण (शैशवावस्था और बचपन) के दौरान समाजीकरण सरल व 'सीमित सामाजिकरण दुनिया के भीतर होता है। धीरे-धीरे यह सामाजिकरण की प्रक्रिया और व्यापक हो जाती है और बच्चे को सीखने और समायोजित करने के लिए कई चीजों का सामना करना पड़ता है।

समाजीकरण का अर्थ है बच्चे की सामाजिक भूमिकाओं में भाग लेना। इसलिए, बच्चे द्वारा आंतरिक / मनन की जाने वाली मुख्य वस्तुएं स्वयं सामाजिक भूमिकाएं हैं। किसी भी सामाजिक भूमिका को पर्याप्त रूप से करने के लिए, एक ही सामाजिक व्यवस्था में अन्य सामाजिक भूमिकाओं को जानना चाहिए। इसलिए बच्चे को उन भूमिकाओं को आंतरिक रूप देना चाहिए, जिनसे वह खुद के प्रदर्शन की अपेक्षा करता है और अन्य व्यक्तियों की भूमिकाएं भी जिनके साथ वह बातचीत /व्यक्तिगत संपर्क

करता है। वास्तव में, भूमिकाओं का आंतरिककरण लगभग वैसा ही है जैसा व्यक्तित्व का विकास। समाजीकरण के प्रत्येक चरण में, बच्चा भूमिकाओं की एक प्रणाली को आंतरिक करता है l समाजीकरण में शैशवावस्था से वयस्कता तक चार चरण होते हैं। जो निम्नलिखित हैं:--

a. मौखिक चरण
b. गुदा चरण
c. ओडिपल चरण
d. किशोरावस्था

a) मौखिक चरण (Oral Stage)

मौखिक चरण बच्चे के जन्म के साथ शुरू होता है और एक वर्ष पूरा होने तक जारी रहता है। जन्म से पहले, बच्चा माताओं के गर्भ में रहता है जो भ्रूण के रूप में होता है और गर्भ में बच्चा गर्म और आरामदायक होता है। जन्म के समय, छोटे शिशु को खुद से सांस लेना चाहिए, और उसे ठंड, गीला और अन्य असुविधाओं से बचाना चाहिए। सब कुछ के होने के लिए, बच्चा एक रोने के माध्यम से, बच्चा अपनी मौखिक निर्भरता स्थापित करता है। बच्चा समय के बारे में कुछ निश्चित अपेक्षाएं

विकसित करता है। बच्चा अपनी महसूस की गई जरूरतों के लिए संकेत देना भी सीखता है। इस अवस्था में, बच्चा स्वयं और उसकी माँ शामिल है। परिवार के अन्य सदस्यों के लिए, बच्चा अधिक महत्वपूर्ण है। यदि पिता या कोई अन्य व्यक्ति बच्चे की उचित देखभाल कर रहा है, तो वह व्यक्ति भी माँ की भूमिका ही निभाएगा।

यह कहना मुश्किल है कि क्या बच्चा इस स्तर पर मां की भूमिका और उसकी अपनी भूमिका को दो भूमिकाओं में बदल देता है। फ्रायड ने इस अवस्था को — प्राथमिक पहचान का चरण कहा। इसका मतलब है कि बच्चा अपनी पहचान मां से मिलाता है। बच्चा केवल भूख ड्राइव पर कुछ नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश करता है।

b) गुदा चरण (Anal Stage)

दूसरा चरण सामान्य रूप से पहले वर्ष के बाद शुरू होता है और तीसरे वर्ष के दौरान पूरा होता है। बच्चा यहाँ सीखता है कि वह पूरी तरह से माँ पर निर्भर नहीं हो सकता है और उसे अपने लिए कुछ हद तक देखभाल करनी होगी। टॉयलेट प्रशिक्षण नई चिंता का मुख्य केंद्र है। बच्चे को कुछ काम करना जैसे कि टॉयलेट करना, कपड़े साफ रखना आदि सिखाया जाता है।

इस अवस्था में बच्चा दो अलग-अलग भूमिकाएँ निभाता है-अपनी भूमिका और अपनी माँ की। बच्चा देखभाल करता है और माँ से भी प्यार करता है और बदले में प्यार देना सीखता है। बच्चे को सही और गलत कार्यों के बीच अंतर करने में सक्षम किया जाता है। सही कार्रवाई को पुरस्कृत किया जाता है और गलत कार्रवाई को पुरस्कृत या दंडित नहीं किया जाता है।

इस दूसरे चरण में सोशलाइजिंग एजेंट, जो कि मां की दोहरी भूमिका है। वह एक सीमित संदर्भ में बच्चे के साथ बातचीत प्रणाली में भाग लेती है और वह उस बड़ी प्रणाली में भी भाग लेती है जो परिवार है। माँ की दोहरी भूमिका बच्चे को एक अधिक जटिल सामाजिक प्रणाली में भाग लेने में मदद करती है। इस प्रकार, माँ छोटे के संबंध में बड़ी सामाजिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। इसके अलावा, एक सामाजिक एजेंट के रूप में माँ उप-प्रणाली और बड़ी प्रणाली के बीच मध्यस्थता करती है। कभी-कभी बच्चे की माँग करना और कुछ बार इसकी प्रवृत्ति का विरोध करना।

c) ओडिपल स्टेज (Oedipal Stage)

तीसरा चरण ज्यादातर बच्चे के चौथे वर्ष से शुरू होता है और युवावस्था (12 या 13 वर्ष की आयु) तक फैलता है। यह इस अवस्था में है कि बच्चा समग्र रूप से परिवार का सदस्य बन जाता है। यह यहां तक कि बच्चे को अपने लिंग के आधार पर उसे बताई गई सामाजिक भूमिका के साथ खुद को पहचानना है। फ्रायड के अनुसार, लड़का ओडिपस कॉम्प्लेक्स विकसित करता है--पिता के प्रति ईर्ष्या की भावना और मां के प्रति प्रेम। उसी तरह, लड़की 'इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स" विकसित करती है - माँ के प्रति ईर्ष्या की भावना और पिता के प्रति प्रेम। फ्रायड का मानना था कि भावनाएं यौन को लक्षित कर रही हैं। लेकिन ज्यादातर लेखक इस राय की सदस्यता नहीं लेते हैं। वे कहते हैं कि चार, पांच या छह वर्ष के बच्चे को शायद ही कभी सेक्स या यौन क्रिया का स्पष्ट ज्ञान हो।

इस चरण में, बच्चे पर सही सेक्स के साथ पहचान करने के लिए पर्याप्त सामाजिक दबाव लाया जाता है। लड़कों को लड़कों की तरह व्यवहार करने के लिए पुरस्कृत किया जाने लगता है और लड़कियों को लड़कियों की तरह काम करने के लिए पुरस्कृत किया जाता है। सेक्स की उम्र के बाद, बच्चा यौन अंतर को समझने में सक्षम है। लड़का माँ के साथ और पिता लड़की के साथ अपनी पहचान बनाने की कोशिश करता है। जब बच्चे स्कूल जाते हैं या अन्य बच्चों के साथ घुलते मिलते हैं तो वे अपने संबंधित खेल के मैदानों में शामिल होना पसंद करते हैं। इस अवधि में विभिन्न सीखने के कौशल के लिए रुचि से शुरू होता है।

इस अवस्था में लड़का तीन तरह की पहचान बनाता है-

i. वह अपने पिता और भाइयों (लिंग-भूमिका पहचान) के साथ की पहचान करता है,
ii. वह अपने सभी भाई-बहनों (परिवार में बच्चे की भूमिका) और
iii. परिवार के साथ पहचान करता है वह पूरे परिवार के साथ एक सदस्य के रूप में पहचान करता है।

इस प्रकार, इस अवस्था में बच्चा (प्रत्येक सेक्स के भाई और बहन), पिता, माँ ,भाई-बहनों की भूमिका और अपनी भूमिका को स्पष्ट करता है, उसे यह भी पता चलता है कि परिवार में माँ की तुलना में अधिक प्रभावी पिता की प्रमुख भूमिका होती है, । माता-पिता बच्चों को उचित सेक्स पहचान बनाने में मदद करते हैं। पिता उसे कैसे काम करना है, यह दिखा कर बेटे की मदद करता है। उदाहरण के लिए, एस्किमो पिता लड़के को दिखाता है कि कैसे शूट किया जाए। उदहारण के लिए -बेली द्वीप में, पिता लड़के को नृत्य की कला सीखने में मदद करता है। जब एक बार लड़के ने पुरुषों की तरह होने का लक्षण सीख लिया है, तो वह पुरुषों की विशेष रूप से लत (habits) की नकल करने की प्रवृत्ति करेगा और ऐसा ही उस लड़की के साथ जो माँ की नकल करने के लिए होगा ।

d). किशोरावस्था की अवस्था (Adolescence phase)

यह चरण किशोरावस्था की अवधि से शुरू होता है। शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन के कारण, जो व्यक्तियों के भीतर होता है, यह अवस्था महत्व मानती है। इस चरण के दौरान, लड़के और लड़कियां माता-पिता के नियंत्रण से मुक्त होने की कोशिश करते हैं। इसी समय, वे अपने माता-पिता पर निर्भरता से पूरी तरह से बच नहीं सकते हैं। इसलिए, वे अपने आप में एक प्रकार का तनाव या संघर्ष का अनुभव कर सकते हैं। वे विभिन्न गतिविधियों को करने में स्वतंत्र होना चाहते हैं। लेकिन माता-पिता अपनी कई गतिविधियों को नियंत्रित करना जारी रखते हैं। यह विशेष रूप से यौन गतिविधि के बारे में सच है।

आधुनिक समाज में, माता-पिता अपनी कुछ गतिविधियों को स्वतंत्र रूप से करने के लिए लड़के और लड़कियों को अधिक स्वतंत्रता देने का इरादा रखते हैं। माता-पिता किशोरों के बच्चों के प्रति उनके भावनात्मक लगाव की खुली अभिव्यक्ति को कम करने की कोशिश करते हैं। वे उन्हें अपनी शिक्षा, उनके व्यवसाय और अपने जीवन-साथी का चयन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उन्हें उम्मीद है कि किशोर बच्चे जिम्मेदारी स्वीकार करेंगे और उन्हें सौंपी गई नई भूमिकाएं सीखेंगे। इस प्रकार किशोर नई भूमिकाएँ और नए व्यवहार पैटर्न सीखते हैं और उनसे जुड़े नए सामाजिक मानदंडों को आंतरिक करते हैं। इसलिए, आधुनिक समाज में किशोर अवस्था से वयस्क अवस्था तक संक्रमण

पारंपरिक समाजों की तुलना में अधिक कठिन है। पारंपरिक समाजों में ऐसे सभी जीवन के निर्णय ज्यादातर माता-पिता द्वारा किए जाते हैं।

4.2.6 समाजीकरण के महत्व (Importance of Socialisation)

समाजीकरण के दौरान, एक व्यक्ति एक समूह, समुदाय या समाज का सदस्य बनना सीखता है। यह प्रक्रिया न केवल लोगों को सामाजिक समूहों के आदी बनाती है, बल्कि ऐसे समूहों को भी परिणाम देती है जो खुद को बनाए रखते हैं। उदाहरण के लिए, एक नए जादूगरनी सदस्य को एक यूनानी संगठन के रीति-रिवाजों और परंपराओं पर एक अंदरूनी सूत्र देखने को मिलता है। जब समूह अपनी परंपराओं को पूरा करने की अनुमति देता है। जैसे-जैसे वर्ष बीतते हैं, सदस्य उस जानकारी को लागू कर सकता है जो उसने नए लोगों के साथ जुड़ने के बारे में सीखी है l

वृहद स्तर पर, समाजीकरण यह सुनिश्चित करता है कि हमारे पास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज के मानदंडों और रीति-रिवाजों को प्रसारित किया जाता है। समाजीकरण लोगों को सिखाता है कि किसी विशेष समूह या स्थिति में उनसे क्या अपेक्षा की जाती है; यह सामाजिक नियंत्रण का एक रूप है।

समाजीकरण में युवाओं और वयस्कों के लिए समान लक्ष्य हैं। यह बच्चों को अपने जैविक आवेगों को नियंत्रित करना सिखाता है, जैसे कि उनकी पैंट या बिस्तर गीला करने के बजाय शौचालय का उपयोग करना। समाजीकरण की प्रक्रिया भी व्यक्तियों को सामाजिक मानदंडों के साथ एक विवेक विकसित करने में मदद करती है और उन्हें विभिन्न भूमिकाएं निभाने के लिए तैयार करती है।

4.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

4.3.1 सामाजिक नियंत्रण (Social Control)

आप जान गए हैं कि सामाजिक नियंत्रण के बिना सामाजिक एकता एक मात्र सपना होगा। सामाजिक नियंत्रण व्यवहार को स्थापित मानदंडों के अनुसार नियंत्रित करता है जो व्यवहार की एकरूपता लाता है और व्यक्तियों के बीच एकता की ओर जाता है। परिवार अपनी एकता बनाए रखता है क्योंकि इसके सदस्य पारिवारिक मानदंडों के अनुसार एक जैसा व्यवहार करते हैं।

कोई भी दो व्यक्ति अपने दृष्टिकोण, विचारों, रुचियों और आदतों में एक जैसे नहीं होते हैं। यहां तक कि एक ही माता-पिता के बच्चों में भी समान दृष्टिकोण, आदतें या रुचियां नहीं होती हैं। पुरुष अलग-अलग धर्मों को मानते हैं, अलग-अलग कपड़े पहनते हैं, अलग तरह से खाते हैं और अलग-अलग विचारधारा रखते हैं। लोगों के रहन-सहन के तरीकों में इतने अंतर होते हैं कि हर पल उनमें टकराव की आशंका बनी रहती है। आधुनिक समय में यह संभावना और अधिक बढ़ गई है क्योंकि मनुष्य बहुत अधिक आत्मनिर्भर हो गया है। सामाजिक हितों की रक्षा और अन्य जरूरतों को पूरा करने के लिए नियंत्रण आवश्यक है। यदि सामाजिक नियंत्रण हटा दिया जाता है और प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से व्यवहार करने के लिए छोड़ दिया जाता है, तो देश में अराजकता कम हो जाएगी।

किसी भी समाज में सामंजस्य और व्यवस्था होनी चाहिए। जहाँ कोई सामंजस्य या व्यवस्था नहीं है, समाज वास्तव में मौजूद नहीं है क्योंकि समाज मानवीय रिश्तों का सामंजस्यपूर्ण संगठन है। जब तक व्यक्ति आचरण के निर्धारित मानदंडों पर खरा नहीं उतरते हैं और जब तक कि उनके स्वयं के चाहने वाले आवेग सब के कल्याण के लिए नहीं होते हैं, तब तक सामाजिक संगठन को प्रभावी ढंग से बनाए रखना काफी मुश्किल होगा।

अस्तित्व और प्रगति के लिए समाज को अपने सदस्यों पर एक निश्चित नियंत्रण रखना होगा क्योंकि स्थापित तरीकों से किसी भी चिह्नित विचलन को इसके कल्याण के लिए खतरा माना जाता है। इस तरह के नियंत्रण को समाजशास्त्रियों ने सामाजिक नियंत्रण की संज्ञा दी है।

डीवियनस/ विचलन (Deviance from norms)

डीवियनस/ विचलन मानदंडों का उल्लंघन है। यह समाज के मानदंडों को तोड़ रहा है। इसी तरह, विचलनपूर्ण व्यवहार सामाजिक शिष्टाचार को तोड़ रहा है l व्यापार, परिवार, विवाह, वादे को आदि में सामाजिक आचार संहिता को भी तोड़ रहा है, वादे को तोड़ रहा है, राज्य के कानून को तोड़ना सब कुछ है और व्यवहार को विचलित व्यवहार के रूप में जाना जाता है। मनुष्य का भटकना स्वाभाविक है।

4.3.2 सामाजिक नियंत्रण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Social Control)

डेवियंट बेहेवियर (Deviant Behaviour) को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना है और इसे सामाजिक नियंत्रण की मदद से हासिल किया जा सकता है, सामाजिक व्यवस्था का लक्ष्य प्राप्त करने का मतलब है। सामाजिक नियंत्रण सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करता है। समाजशास्त्रीयों के अनुसार सामाजिक नियंत्रण के विभिन्न परिभाषाएं जो निम्नलिखित हैं:--

- **समाजशास्त्री होस्टन एंड हंट के अनुसार,** "प्रथागत मानदंडों के अनुरूप कोई भी विफलता विचलन कहलाती है"।
- **समाजशास्त्री होरेस वास्टन के अनुसार,'**व्यवहार जो कि दिए गए समूहों या समाज के आचरण या सामाजिक अपेक्षाओं के मानकों के विपरीत है, विचलित व्यवहार कहलाता है।"
- **समाजशास्त्री गिलिन और गिलिन के अनुसार,**"सामाजिक नियंत्रण उपायों, सुझावों, अनुनय की प्रणाली है।"
- **ओग्बोन और निमकोफ के अनुसार,** "दबाव के पैटर्न जो समाज को बनाए रखने के लिए आदेश देता है और सामाजिक नियंत्रण की अपनी प्रणाली के रूप में ज्ञात नियमों में स्थापित करता है"।

4.3.3 सामाजिक नियंत्रण की विशेषताएं (Characteristics of Social Control)

सामाजिक नियंत्रण की विशेषताएं निम्नलिखित हैं:--

i. सामाजिक नियंत्रण एक प्रभाव है (Social Control is an effect)

जनमत, ज़बरदस्ती, सामाजिक सुझाव, धर्म, किसी भी अन्य पद्धति से कारणों के लिए अपील के माध्यम से कई को प्रभावित किया जा सकता है।

ii. प्रभाव समाज द्वारा प्रयोग किया जाता है (Effect is used by the society)

इसका मतलब है कि समूह बेहतर व्यक्ति पर प्रभाव का अभ्यास करने में सक्षम है। सामाजिक नियंत्रण की प्रणाली एजेंसियों में है और प्रत्येक एजेंसी की प्रभावशीलता काफी हद तक परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

iii. प्रभाव कल्याण के लिए प्रयोग किया जाता है (Effect is used for the welfare of the)

देखने में विशिष्ट ऐंड (End) के लिए सामाजिक नियंत्रण का प्रयोग किया जाता है। ऐंड (End) हमेशा पूरे का कल्याण है। व्यक्ति को अन्य के अस्तित्व के प्रति जागरूक किया जाता है और उनकी रुचि के लिए उन्हें अनुमति देना आवश्यक होता है।

4.3.4 सामाजिक नियंत्रण के प्रकार / एजेंसियां (Agencies of Social Control)

सामाजिक नियंत्रण को नियोजित सामाजिक नियंत्रण के साधनों के आधार पर दो प्रमुख प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

a. औपचारिक नियंत्रण
b. अनौपचारिक नियंत्रण

a) औपचारिक नियंत्रण / बाहरी नियंत्रण

सामाजिक नियंत्रण के उद्देश्य से कानून, कानून, सैन्य बल, पुलिस बल, प्रशासनिक उपकरणों आदि का उपयोग करते हैं। इसी तरह विभिन्न राजनीतिक, धर्म, शैक्षणिक संस्थान भी औपचारिक संस्थानों के रूप में कार्य करते हैं।

औपचारिक नियंत्रण जानबूझकर बनाया गया है। औपचारिक नियम मानने की आवश्यकता है। और आवश्यकताएं संस्थानों द्वारा स्पष्ट रूप से बताई गई हैं।

आधुनिक जटिल समाजों में औपचारिक नियंत्रण आवश्यक हो गया है क्योंकि प्रकृति में अंतःक्रिया लगभग अवैयक्तिक है।

b) अनौपचारिक नियंत्रण / आंतरिक नियंत्रण

अनौपचारिक नियंत्रण में समूह, निंदा, आक्रोश जनमत, लोकमार्ग, किनारे आदि शामिल हैं, जो उद्देश्यपूर्ण तरीके से नहीं बनाए गए हैं। उनकी उत्पत्ति के संबंध में कुछ भी निश्चित नहीं कहा जा सकता है। औपचारिक नियंत्रण में कोई सजा नहीं है फिर भी औपचारिक नियंत्रण से अधिक शक्तिशाली है। उन्हें लागू करने के लिए अतिरिक्त स्टाफ या शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है।

अनौपचारिक नियंत्रण प्राथमिक सामाजिक समूह जैसे परिवार, पड़ोस, जनजाति, ग्रामीण समुदाय में प्रभावी है।

"व्यवहार जो महत्वपूर्ण सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन करता है, कहा जाता है कि परिणाम के रूप में बड़ी संख्या में लोगों द्वारा अस्वीकृत किया जाता है"।

4.3.5 सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता (Importance of Social Control)

किसी भी समाज की प्रगति उसके प्रभावी कामकाज पर निर्भर करती है विभिन्न समूहों, संगठनों और संस्थानों, जो अक्सर अपने सदस्यों के हितों का टकराव खतरे में पड़ जाते हैं । व्यक्तियों के साथ-साथ समूह भी चाहते हैं दूसरों की परवाह किए बिना उनके हितों की सेवा करें। अवसरों की कमी सभी के लिए समस्या को और बढ़ा देता है । अन्य समूह और प्रमुख सदस्य समूह सीमित सामाजिक संसाधनों पर अपना आधिपत्य जमाने और बनाए रखने के लिए चाहते हैं । साथ ही, समाज में प्रचलित विभिन्न प्रकार के वाद 'सुचारू सामाजिक में बाधा डालते हैं प्रणाली, और इसलिए, समाज के हिस्से पर नियंत्रण के कुछ प्रकार के कोशिशें मनुष्य की फिजूलखर्ची और स्वार्थी प्रवृत्ति सीमित हो जाती है। उचित समायोजन के बिना सामाजिक संतुलन बनाए रखना मुश्किल होगा विभिन्न सामाजिक

इकाइयों के बीच और इसलिए, विचलन को नियंत्रित करने की आवश्यकता उत्पन्न होती है लोगों का व्यवहार और दूसरों के सामाजिक रूप से वांछनीय कार्यों को बढ़ावा देना। सामाजिक नियंत्रण हमें सामाजिक संगठन में, व्यक्तियों के रूप में स्थिरता प्राप्त करने में मदद करता है समाज के मानदंडों के विपरीत कार्य करने की अनुमति नहीं देता है। स्थापित सामाजिक मानदंडों के अनुसार व्यवहार करने के लिए उन्हें मना लिया और प्रेरित किया जाता है और नतीजतन, अस्थिरता और अनिश्चितता समाज में नियमितता और निरंतरता के लिए जगह बनाते हैं हमारे समाज की स्वस्थ परंपराओं को बनाए रखने के लिए सामाजिक नियंत्रण भी आवश्यक है और हमारे उत्तराधिकार और संस्कृति के संरक्षक उन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित करना चाहते हैं, परंपराएं सुरक्षित करना चाहते हैं । सामाजिक नियंत्रण के माध्यम से लोग प्रेरित और परंपराओं का पालन करने के लिए मजबूर हैं। समूह में एकता केवल सामाजिक प्रणाली द्वारा प्रभावी और नियंत्रण बनाए रखने के लिए की जा सकती है । समूह के सदस्य विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के हैं और विभिन्न व्यक्तिगत उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते हैं। सभी सदस्यों को एकजुट रखने के लिए समूह लक्ष्यों की दिशा में एकजुट होकर सामाजिक नियंत्रण द्वारा संभव बनाया जा सकता है लक्ष्य व्यक्तियों के स्वार्थों को समूह के रास्ते में आने की अनुमति नहीं देता है । विचारों, , व्यवहार पैटर्न, दृष्टिकोण और व्यक्तियों की धारणाएं, लाने के लिए सामाजिक नियंत्रण भी आवश्यक है, क्योंकि समाज विचारों में अनुकूलता रहित होने पर, प्रभावी रूप से कार्य नहीं कर सकता है।

सभी सफलता की कुंजी सहयोग है। अगर समाज को जीवित रखना है, तो सभी लोगों के वांछित सहयोग की आवश्यकता है। इस सहयोग की कमी के मामले में, इकाई या समूह कार्य नहीं कर सकते हैं। यह वास्तव में मानव समूहों की ताकत है। सामाजिक नियंत्रण सभी के सहयोग को प्राप्त करने में हमारी मदद करता है। सामाजिक नियंत्रण लोगों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है। इंसान तो इंसान हैं असहाय और कमजोर है कि उनके अस्तित्व की मदद के बिना अन्य संभव नहीं है सामाजिक नियंत्रण सुरक्षा को खतरे में डालने वाली ताकतों पर नियंत्रण रखता है और लोगों की सुरक्षा और उन्हें दुनिया की वास्तविकताओं का सामना करने के लिए तैयार करना। मनुष्य के स्वार्थी स्वभाव को नीचे

लाने के लिए सामाजिक नियंत्रण की बहुत आवश्यकता है क्योंकि आम तौर पर, दूसरों द्वारा निर्देशित नियंत्रण कोई भी नियंत्रित, अधीनस्थ होने पर खुश महसूस नहीं करता है और हर कोई दूसरों पर, अधीनस्थ और संभव के रूप में कई व्यक्तियों को निर्देशित करना चाहता है लेकिन तथ्य और हैं। समाज ऐसे व्यक्तियों का मिश्रण है जो प्रत्यक्ष होते हैं और जो निर्देशित होते हैं, जो मार्गदर्शन करते हैं और जो निर्देशित होते हैं। वास्तव में, सामाजिक नियंत्रण, द्वारा सुधारात्मक संयम के तहत लोगों की 'स्वतंत्र इच्छा' रखते हुए, सुविधा प्रदान करता है समाज का सुचारू संचालन ही सामाजिक नियंत्रण है । यह स्पष्ट है कि सामाजिक नियंत्रण के कारण सोसाइटी अस्तित्व में आती है, सामाजिक व्यवस्था बनी रहती है और लोगों की आकांक्षाएं पूरी होती हैं।

संक्षेप में, सामाजिक नियंत्रण की बहुत आवश्यकता है क्योंकि:--

- यह उन पुराने आदेशों को बनाए रखने के लिए स्थापित किया गया है जो पहले से ही समाज में मौजूद हैं।
- सामाजिक नियंत्रण सामाजिक एकता स्थापित करता है।
- यह व्यक्तिगत व्यवहार को नियंत्रित करता है।
- यह सामाजिक प्रतिबंध प्रदान करता है।
- यह सांस्कृतिक मिस समायोजन की जाँच करता है।

4.3.6 सामाजिक नियंत्रण प्राप्त करने के लिए कदम (Steps/Means to attain social control)

सामाजिक नियंत्रण प्राप्त करने के लिए कदम निम्नलिखित है :--

- माता-पिता का समाजीकरण बहुत आवश्यक है, इसलिए वे बच्चों को अधिक प्रभावी ढंग से समाजीकरण मानदंडों को लागू कर सकते हैं।
- अनाथ बच्चों के आवास के लिए मॉडल अनाथालय होना चाहिए ताकि उन्हें विचलन की परिवर्तनशीलता से बचाया जा सके।

- भिखारियों और बेरोजगारों को कंफर्म तरीके से तकनीकी शिक्षा और शिक्षण दिया जाना चाहिए।
- मनोरंजक गतिविधियाँ बढ़नी चाहिए।
- सभी स्तरों पर शिक्षा को धार्मिक, तकनीकी और पेशेवर प्रदान किया जाना चाहिए।
- मीडिया को सामाजिक विचलन कम करने और सामाजिक नियंत्रण को बढ़ाने के लिए प्रभावी अभियान का उपयोग करना चाहिए।

4.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

अधिगम सम्बंधित क्रियाकलाप

दिए हुये शब्दों की मदद से रिक्त स्थान भरो

i. समाजीकरण एक .....प्रक्रिया है जिसके दौरान हम सामाजिक अपेक्षाओं और कैसे करें के बारे में सीखते हैं (आजीवन, जीवन)

ii. किसी भी समाज की .....उसके प्रभावी कामकाज पर निर्भर करती है (नियंत्रण, प्रगति)

iii. सामाजिक नियंत्रण सुरक्षा को खतरे में डालने वाली ताकतों पर .....रखता है।(नियंत्रण, समाजीकरण)

iv. सामाजिक नियंत्रण.....स्थापित करता है।(अनौपचारिक एकता, सामाजिक एकता)

v. .....नियंत्रण जानबूझकर बनाया गया है। (अनौपचारिक , औपचारिक)

vi. समाजीकरण, व्यक्ति में .....और कौशल स्थापित करता है।(औपचारिक ज्ञान, ज्ञान)

कृपया उत्तर की पड़ताल पाठ के अंतिम हिस्से 4.2 में करें ।

4.5 सारांश (Summary)

सामाजिक नियंत्रण और समाजीकरण एक-दूसरे के साथ निकटता से संबंधित हैं। सामाजिक नियंत्रण समाजीकरण का एक हिस्सा है। समाजीकरण की प्रक्रिया के दौरान सामाजिक नियंत्रण की प्रक्रिया भी प्रचलन में है। समाजीकरण के माध्यम से सामाजिक नियंत्रण प्रभावी हो जाता है। सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए समाज में निश्चित प्रक्रियाएँ हैं। ये रीति-रिवाज़ और प्रक्रियाएँ मनुष्य के जीवन का एक हिस्सा बन जाती हैं और मनुष्य समाज में समायोजित हो जाता है। समाज तथ्य के रूप में, सामाजिक मानदंड और मूल्यों को अलग-अलग करने के लिए प्रभावी मार्गदर्शक और कार्रवाई करने के इरादे के रूप में प्रभावी समाजीकरण पर निर्भर करते हैं। समाजीकरण के माध्यम से समाजों का उद्देश्य अवचेतन रूप से अपने सदस्यों के व्यवहार को नियंत्रित करना है। समाजीकरण की विभिन्न एजेंसियां जैसे परिवार, राज्य, स्कूल, क्लब आदि भी सामाजिक नियंत्रण की एजेंसियां हैं। वे व्यक्ति के व्यवहार पर नियामक प्रभाव डालते हैं।

सामाजिक नियंत्रण और समाजीकरण में अंतर करते हुए आप जान गए हैं कि समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से लोगों को एक समाज के कुशल सदस्य बनने के लिए सिखाया जाता है। यह उन तरीकों का वर्णन करता है जो लोगों को सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं को समझने, समाज की मान्यताओं को स्वीकार करने और सामाजिक मूल्यों के बारे में जागरूक होने के लिए आते हैं। समाजीकरण, सामाजिक-करण (दूसरों के साथ बातचीत करना, जैसे परिवार, दोस्तों, और सहकर्मियों) के समान नहीं है;, यह एक सामाजिक प्रक्रिया का सटीक होना है जो सामाजिकरण के माध्यम से होती है।

4.6 सूचक शब्द (Keywords)

- **सामाजिक मूल्य**: सामाजिक मूल्य वे मानक है जिनके द्वारा हम किसी वस्तु, व्यवहार, लक्ष्य, साधन, गुण आदि को अच्छा या बुरा, उचित या अनुचित, वांछित या अवांछित ठहराते हैं।
- **सामाजिक नियंत्रण**: सामाजिक नियंत्रण सामाजिक व्यवस्था एवं स्थिरता का अनुरक्षण है। अनुरक्षण का कार्य दो माध्यमों से होता है-समाजीकरण एवं बाह्य दबाव। जेएच फिक्टर ने सामाजिक नियंत्रण को तीन भागों में बांटा है
- **सामाजिक एकता**: सामाजिक एकता महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सामाजिक न्याय के लिए एक आवश्यक शर्त है ।
- **व्यक्तिगत व्यवहार:** वैयक्तिक व्यवहार कर्मचारियों का स्वंय का व्यवहार होता है जो उनके व्यक्तित्व, प्रवृत्तियों, अवबोध, अभिप्रेरणा, अपेक्षा तथा आन्तरिक भावनाओं के फलस्वरूप प्रकट होता है।
- **अनौपचारिक**: व्यक्तियों की अतः व्यैक्तिक क्रियाओं से स्वतः उत्पन्न ।
- **औपचारिक**: नियमों एवं सिद्धांतों के आधार पर जान बूझकर उत्पन्न
- **सामाजिक मानदंड**: मानदंडों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। मानदंडों के निर्माण में व्यक्ति की भूमिका गौण होती है
- **सामाजिक अपेक्षा**: सामाजिक प्रणाली में सामूहिक लक्ष्योन्मुखता होती है। (d) मानदंडों तथा संज्ञानात्मक अर्थों में अपेक्षाओं में सर्वसम्मति नहीं होती है।'या'

  समाजीकरण के अंतर्गत व्यक्ति समाज की संस्कृति के बारे में सीखता है और उसी के अनुरूप व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है।
- **समाज की मान्यता**: समाज में मान्यता प्राप्त अथवा स्वीकृत व्यवहार की प्रणालियां हैं। यह दैनिक जीवन के व्यवहार के वे प्रतिमान है जो नियोजित अथवा बिना किसी तार्किक विचार के ही सामान्यतः समूह में अचेतन रूप में उत्पन्न हो जाते हैं।

जनरीतियां या लोकरीतियां हमें सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण में रहने की कला सिखलाती है।

- **सामाजिक विचलन**: अनुरूपता की विपरीत दशा है इसका अर्थ यह है कि जो नियम और व्यवहार के तरीके समाज में लोगों के बीच एकरूपता बनाए रखने के लिए निर्धारित किए जाते हैं
- **समायोजन**: सुव्यवस्था अथवा अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूलन बनाने की प्रक्रिया
- **मानदंड:** मानदंड जिसके द्वारा कुछ तय किया जाता है, वह कारक जिसके द्वारा कोई निर्णय लेता है या कुछ तय करता है।
- **सामाजिक प्रतिबंध**: सामाजिक प्रतिबंधों से आशय सामाजिक बंधन एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर सकारात्मक नियंत्रण से है। यह नियंत्रण कानून, रिति-रिवाज़, धर्म तथा न्यायिक निर्णयों के आधार पर लागू किए जाते हैं, ताकि समाज में सुख-शांति मौजूद रहें।
- **परिवर्तनशीलता**: अदला-बदली, परिवर्तनशीलता, विनिमेयता, परिवर्तनशील होने की अवस्था
- **समाजीकरण**: समाजीकरण सीखने की प्रक्रिया है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिकाओं को निभाने योग्य बनाती है।

4.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

समाजीकरण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Socialisation)

i. समाजीकरण की परिभाषा लिखें , समाजीकरण के उद्देश्य बताएं ।

ii. समाजीकरण की प्रक्रिया क्या हैं?

iii. समाजीकरण की एजेंसियां क्या हैं? उन के विभिन्न कार्यों का वर्णन करें ।

iv. समाजीकरण के चरण के बीच के संबंध की व्याख्या करें ।

v. सामाजिक नियंत्रण की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये ।

vi. सामाजिक नियंत्रण प्राप्त करने के लिए कदम कौन -कौन से हैं, अपने शब्दों में उदहारण सहित उत्तर दीजिए ।

vii. सामाजिक नियंत्रण के महत्व लिखें ।

4.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

दिए हुये शब्दों की मदद से रिक्त स्थान भरो:

उत्तर: i) आजीवन, ii) प्रगति iii) नियंत्रण, iv) सामाजिक एकता, v) औपचारिक

vi) ज्ञान

4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

- Basic Concepts of Education by Arung, Fernades , www.linkedin.com
- Indian Political System (4th Ed.) By Roy, H and Singh, M.P. , Pearson India Education Services
- History of Social thought by K.Singh, Prakashan Kendra, Lucknow.
- Principles of Political Science by Anup C, Kanpur, S. Chand and Company.
- Sociology: An Introduction by Smelser, Neil, J.,Wiley Eastern Private Limited
- Sociology: Principles of sociology with an introduction to social thought by Shanker Rao C.N., S. Chand and Company

Subject : Sociology(Society, Culture and Social Change)	
Course Code : **SOCL 102**	Author : **Dr. Shakuntla Devi**
Lesson No. : **5**	Updated by: **self**
Processes of Social Change, its Forms and Features	

<u>अध्याय की संरचना</u>

5.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

5.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

5.2.1 सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा (Concept of Social Change)

5.2.2 सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Social Change)

5.2.3 सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत (Principles of Social Change)

5.2.4 सामाजिक परिवर्तन के कारक (Factors of Social Change)

5.2.5 सामाजिक परिवर्तन का प्रकार (Types of Social Change)

5.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further Main Body of the Text)

5.3.1 शहरीकरण (Urbanisation)

5.3.2 भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन (Social Change in Indian Society)

5.3.3 मार्क्सवाद (Marxism)

5.3.4 मार्क्सवाद के मुख्य बिंदु (Main Point of Marxism)

5.3.5 समाजशास्त्री कार्ल मार्क्स के अनुसार वर्ग संघर्ष (Class conflict) के माध्यम से परिवर्तन (Social Change through Class-Conflict)

5.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

5.5 सारांश (Summary)

5.6 सूचक शब्द (Keywords)

5.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

5.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

5.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के अंत तक पढ़ने के बाद, आप निम्न बारे में जानेंगे:

- सामाजिक परिवर्तन का अर्थ , सामाजिक परिवर्तन का प्रकार , विशेषताएँ , प्रभावित करने वाले कारक आदि बारे में जानेंगे ।
- समझ पाएंगे कि कैसे प्रौद्योगिकी, सामाजिक संस्थाएँ, जनसंख्या और पर्यावरण सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं
- सामाजिक परिवर्तन के संबंध में आधुनिकीकरण , शहरीकरण और मार्क्सवाद के महत्व / भूमिका पर चर्चा कर सकेंगे ।

5.1 प्रस्तावना (Introduction)

सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा बहुत व्यापक है। इसमें स्थान, समय और मानव संदर्भ में मानव समाज में परिवर्तन की प्रक्रियाओं का एक तारामंडल शामिल है। चूंकि यह इतना व्यापक है, इसलिए यह कुछ हद तक अभेद्य, अस्थायी और मूल्य-तटस्थ होने के लिए बाध्य है।

आप जानते हैं कि 21 वीं सदी में शिक्षा और समाज के बीच का संबंध बहुत जटिल है। बदलते समाज को आज एक अलग शैक्षिक प्रणाली की आवश्यकता है। शिक्षा के कार्यों और संरचना का पुनर्गठन करने की आवश्यकता है ताकि 21 वीं शताब्दी के अनुरूप समाज में वांछित सामाजिक परिवर्तन लाया जा सके। इस प्रकार, शैक्षिक प्रणाली और समाज के बीच

का संबंध आपसी है। कभी समाज शैक्षणिक व्यवस्था में परिवर्तन को प्रभावित करता है और कभी शैक्षिक प्रणाली समाज में परिवर्तन को प्रभावित करती है। शिक्षा और समाज के बीच यह जटिल और दो-तरफ़ा संबंध कभी-कभी विश्वविद्यालयों में छात्रों के हड़तालों और दंगों या शैक्षिक व्यवस्था में कुछ बदलाव लाने के लिए विभिन्न स्तरों पर शिक्षकों के संगठित विरोध में प्रकट होता है। विभिन्न स्तरों पर राष्ट्रीय मामलों में छात्रों और शिक्षकों की भागीदारी आम तौर पर मीडिया में बताई जाती है। शैक्षिक संस्थान का कार्य प्रशिक्षण प्रदान करना है और जो सांस्कृतिक विरासत में स्थायी रूप से सार्थक है उसे प्रसारित करना है। शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन के लिए एक 'स्टार्टर 'का कार्य करती है। सामाजिक परिवर्तन सार्वभौमिक है और यह अनिवार्य रूप से सभी समाजों में होता है। वर्तमान पाठ भारतीय समाज में बुनियादी बदलाव, शहरीकरण, पश्चिमीकरण और संस्कृतिकरण और उनके शैक्षिक निहितार्थों से संबंधित है। सामूहिक व्यवहार और सामाजिक आंदोलन सामाजिक परिवर्तन को चलाने वाली शक्तियों में से केवल दो हैं, जो सामाजिक आंदोलनों के साथ-साथ पर्यावरणीय बदलाव या तकनीकी नवाचार जैसे बाहरी कारकों के माध्यम से निर्मित समाज में परिवर्तन आता है। अनिवार्य रूप से, यथास्थिति में किसी भी विघटनकारी बदलाव, जानबूझकर या ऐच्छिक, मानव-कारण या प्राकृतिक, सामाजिक परिवर्तन का कारण बन सकता है। नीचे कुछ संभावित कारण दिए गए हैं।

5.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

5.2.1 सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा (Concept of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन 'शब्द का उपयोग मानव संपर्क और अंतर्संबंधों में होने वाले परिवर्तनों को इंगित करने के लिए किया जाता है। समाज एक "सामाजिक संबंधों का जाल" है। सामाजिक प्रक्रियाओं, अंतरंग और व्यक्तिगत संपर्कों, सामाजिक बातचीत और सामाजिक संगठन के संदर्भ में सामाजिक संबंधों को समझा जाता है। इस प्रकार 'सामाजिक परिवर्तन' शब्द का

उपयोग सामाजिक संपर्क, सामाजिक प्रक्रियाओं और सामाजिक संगठन में वांछनीय बदलाव के लिए किया जाता है।

5.2.2 सामाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definitions of Social Change)

i) सामाजिक परिवर्तन का अर्थ (Meaning of Social Change)

- जब सामाजिक संरचना, सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक मूल्यों, कुछ रीति-रिवाजों और परंपराओं, सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों, आचार संहिता, समाज में अपने आप को संचालित करने का तरीका, मानकों, दृष्टिकोणों, रीति-रिवाजों और परंपराओं और सामाजिक कारकों से संबंधित परिवर्तन होते हैं। यह कहा जाता है कि सामाजिक परिवर्तन है।
- जब सामाजिक परिवर्तन होता है, तो उसके अनुसार समाजीकरण की प्रक्रिया भी बदल जाती है। जो व्यक्ति समाज का सक्रिय सदस्य होता है, वह सामाजिक परिवर्तन का एजेंट और लक्ष्य बन जाता है। वह सामाजिक परिवर्तन लाता है और ऐसे परिवर्तनों से प्रभावित भी होता है।

ii) सामाजिक परिवर्तन की परिभाषा (Definitions of Social Change)

समाजशास्त्रीयों के अनुसार नीचे कुछ परिभाषाएँ दी गई हैं जो इस प्रकार हैं:

- समाजशास्त्री मैकिवेर और पेज के अनुसार, “सामाजिक परिवर्तन कई प्रकार के परिवर्तनों के लिए 'प्रक्रिया' के लिए; जीवन की मानव निर्मित स्थितियों में परिवर्तन; पुरुषों के दृष्टिकोण और विश्वासों में और मानव नियंत्रण से परे जैविक और चीजों की भौतिक प्रकृति में परिवर्तन करने के लिए उत्तरदायी है”।
- समाजशास्त्री मजूमदार, एच. टी. के अनुसार, ‘सामाजिक परिवर्तन को एक नए फैशन या विधा के रूप में या तो पुराने को बदलना या बदलना, लोगों के जीवन में या समाज के संचालन में परिभाषित किया जा सकता है”,।

- समाजशास्त्री किंग्सले डेविस के अनुसार “सामाजिक परिवर्तन से अभिप्राय केवल ऐसे परिवर्तनों से है अर्थात समाज की संरचना और कार्य जो सामाजिक संगठन में होते हैं,”।
- समाजशास्त्री एम. ई. जोन्स के अनुसार, “सामाजिक परिवर्तन एक शब्द है जिसका उपयोग सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक मेलजोल या सामाजिक संगठन के किसी भी पहलू में बदलाव या संशोधन के लिए किया जाता है”।

5.2.3 सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत (Principles of Social Change)

समाजशास्त्रियों, इतिहासकारों और सामाजिक नृविज्ञानियों ने सामाजिक परिवर्तन के कई सामान्य सिद्धांतों का प्रस्ताव किया है।

इन सिद्धांतों को निम्नलिखित चार मुख्य श्रेणियों में बांटा जा सकता है:

- विकासवादी (Evolutionary)
- चक्रीय(Cyclical)
- संघर्ष सिद्धांत (Conflict theories)
- कार्यात्मक सिद्धांत (Functional theories)

5.2.4 सामाजिक परिवर्तन के कारक (Factors of Social Change)

- **सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन/ बदलाव का होना (Happening of Changes in Social Institutions)**

एकल सामाजिक संस्था में प्रत्येक परिवर्तन से सभी सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए, समाज के औद्योगिकीकरण का मतलब था कि खेत चलाने के लिए पर्याप्त मैनुअल श्रम का उत्पादन करने के लिए बड़े परिवारों की आवश्यकता नहीं थी। इसके अलावा, नए रोजगार के अवसर शहरी केंद्रों के नजदीक थे जहां रहने की जगह एक प्रीमियम पर थी। नतीजा यह है कि औसत परिवार का आकार काफी कम हो जाता है।

औद्योगिक कॉरपोरेट संस्थाओं के प्रति इसी बदलाव ने निजी क्षेत्र में सरकार की भागीदारी को देखने के तरीके को भी बदल दिया, वैश्विक अर्थव्यवस्था का निर्माण किया, नए राजनीतिक मंच प्रदान किए, और यहां तक कि नए धर्मों और साइंटोलॉजी जैसे धार्मिक पूजा के नए रूपों को भी प्रेरित किया। इसने हमारे बच्चों को शिक्षित करने के तरीके को भी सूचित किया है: मूल रूप से एक कृषि कैलेंडर को समायोजित करने के लिए स्कूलों की स्थापना की गई थी ताकि बच्चों को गर्मियों में खेतों में काम करने के लिए घर दिया जा सके, और आज भी, शिक्षण मॉडल बड़े पैमाने पर औद्योगिक नौकरियों के लिए छात्रों को तैयार करने पर आधारित हैं, इसके बावजूद एक पुरानी जरूरत है। एक क्षेत्र में बदलाव, जैसे कि औद्योगिकीकरण का अर्थ सामाजिक संस्थाओं में परस्पर प्रभाव का होना है । सामाजिक परिवर्तन के सबसे महत्वपूर्ण कारक निम्नानुसार इस प्रकार हैं:--

i. **भौतिक पर्यावरण (Physical / Environmental Factors)**

कुछ भौगोलिक परिवर्तन कभी-कभी महान सामाजिक-परिवर्तन उत्पन्न करते हैं। जलवायु, तूफान, सामाजिक क्षरण, भूकंप, बाढ़, सूखा आदि निश्चित रूप से सामाजिक जीवन को प्रभावित करते हैं और सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करते हैं। मानव जीवन पृथ्वी की भौगोलिक परिस्थितियों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है।

मानव इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है जो समृद्ध सभ्यताएँ प्राकृतिक आपदाओं की शिकार हुईं। विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या का वितरण, जनसंख्या घनत्व में भिन्नता, कृषि उत्पादन, वनस्पति और जीव, खुशियाँ और कठिनाइयाँ-ये सभी भौतिक पर्यावरण में परिवर्तन होने पर परिवर्तन का संकेत देते हैं।

सभ्यताओं के उत्थान और पतन की बात, यहां तक कि हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन-हमारे कपड़े, खाने की सामग्री और आदतों, आश्रय डिजाइन आदि सभी भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित हैं। आमतौर पर, भौतिक पर्यावरण में परिवर्तन बड़ी संख्या में लोगों के प्रवासन को प्रभावित करता है और इससे सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक मूल्यों में भी बड़े बदलाव आते हैं। प्रवासन स्वयं परिवर्तन को प्रोत्साहित करता है, क्योंकि यह एक समूह को एक नए

वातावरण में लाता है, अपने नए सामाजिक संपर्कों के अधीन होता है, और नई समस्याओं से सामना करता है।

यद्यपि भौतिक वातावरण एक महत्वपूर्ण कारक है जो सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित करता है, फिर भी इसे मानव समाज के विकास के लिए जिम्मेदार एकमात्र कारक नहीं माना जा सकता है। यह चरम दृष्टिकोण कुछ भौगोलिक निर्धारकों (बकले, हंटिंगटन, मिस सैंपल, जे. हक्सले आदि) द्वारा रखा गया था, जिन्होंने यह माना कि भौगोलिक सेटिंग अंततः समाज (परिवार, विवाह, अर्थव्यवस्था, धर्म, सरकार) के रूप को नियंत्रित करती है और सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करती है । लेकिन यह आज सच नहीं है।

अब मनुष्य अपने भौतिक वातावरण में परिवर्तन को प्रभावित करने की स्थिति में है। मानव अपने परिवेश के अनुरूप खुद को ढाल लेते हैं, लेकिन वे अपनी जरूरतों और आवश्यकताओं के अनुसार अपने भौतिक वातावरण को बदलने की क्षमता रखते हैं। बेनेट और टमिन (1949) ने उपयुक्त टिप्पणी की: "यह शायद उतना ही उचित है, अगर इससे अधिक यह आग्रह न किया जाए कि मनुष्य अपने भौतिक वातावरण को संशोधित करता है बजाय पर्यावरण मनुष्य को संशोधित करता है।"

ii) **जनसांख्यिकी (जैविक) कारक (Biological Factors)**

मोटे तौर पर, जनसांख्यिकी मानव आबादी के आकार और संरचना से संबंधित है। एक समाज की सामाजिक संरचना जनसंख्या के आकार, संरचना और वितरण में परिवर्तन के साथ निकटता से संबंधित है। जनसंख्या का आकार मुख्य रूप से तीन कारकों पर आधारित है-

- जन्म दर (Birth rate)
- मृत्यु दर (Death rate)
- प्रवास (Migration) (immigration and emigration आव्रजन और उत्प्रवास).

जनसंख्या की संरचना आयु, लिंग, वैवाहिक स्थिति, साक्षरता आदि जैसे चर पर निर्भर करती है, जनसांख्यिकीय संरचना में परिवर्तन, जो मृत्यु दर में परिवर्तन के कारण हो सकता है, आश्रितों को ब्रेडविनर्स (कमानेवाले) के अनुपात में बढ़ने/ घटने का परिवर्तन करेगा।

इस तरह के बदलाव से परिवार, रिश्तेदारी, राजनीतिक और अन्य संस्थानों की संरचना के परिणाम में हो सकते हैं। जनसंख्या का आकार हम में से प्रत्येक को व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करता है। चाहे हम बढ़ती या सिकुड़ती आबादी में पैदा हुए हों, जिस उम्र में हम शादी करते हैं, नौकरी पाने की हमारी क्षमता, कई अन्य कारक और जो कर हम अदा करते हैं, हमारी शिक्षा पर असर पड़ता है ।

जनसंख्या विश्लेषण से पता चलता है कि जनसंख्या परिवर्तन और आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चर (Cultural Variables) जैसे गरीबी, अशिक्षा, अस्वस्थता, पारिवारिक संरचना, विवाह के रूप, कार्य आदि के बीच एक संबंध है। गरीबी जनसंख्या वृद्धि का सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

हर समाज की जनसंख्या हमेशा संख्या के साथ-साथ रचना में भी बदल रही है। प्रवासन, युद्ध, महामारी, बदलते ऐंडज आदि के कारण मानव इतिहास में जनसंख्या-परिवर्तन हुआ है। आधुनिक समय में, जनसंख्या वृद्धि के लिए दो कृत्रिम तरीकों को अपनाना, जन्म नियंत्रण और गर्भपात भी जनसंख्या की संख्या और संरचना को प्रभावित कर रहे हैं।

जन्म दर और मृत्यु दर दोनों में गिरावट सामाजिक परिवर्तन लाती है। आकार में परिवर्तन के साथ रचना में परिवर्तन होते हैं। जबकि जन्म दर गिर रही है, युवा लोगों के अनुपात में युवा लोगों की गिरावट और बुजुर्ग बढ़त-दर महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों को आगे बढ़ाते हैं।

iii) सांस्कृतिक कारक (Cultural Factors)

यह एक स्थापित तथ्य है कि हमारी मान्यताओं और सामाजिक संस्थाओं, हमारे मूल्यों और सामाजिक रिश्तों के बीच एक अंतरंग संबंध है। मूल्य, विश्वास, विचार, संस्थाएं एक संस्कृति के मूल तत्व हैं। निश्चित रूप से, सभी सांस्कृतिक परिवर्तनों में सामाजिक परिवर्तन शामिल हैं।

- सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू निकटता से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार, संस्कृति में कोई भी परिवर्तन (विचार, मूल्य, विश्वास आदि) पूरे सामाजिक क्रम में एक समान परिवर्तन लाता है। सामाजिक संस्थाएं जीवन के उन स्तरों पर नहीं रह सकतीं जिनके भीतर जीवन विलुप्त है।
- दुनिया भर में अन्य संस्कृतियों के लोगों द्वारा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन भी लाया जाता है। प्रसार समूह से समूह तक सांस्कृतिक लक्षणों या पैटर्न का प्रसार है। उधार लेने का तात्पर्य ऐसे लोगों द्वारा सांस्कृतिक विशेषता अपनाने से है जिनकी संस्कृति में वह सांस्कृतिक विशेषता नहीं थी। हमने पश्चिमी संस्कृति से कई सांस्कृतिक लक्षणों जैसे चाकू और खाने में कांटा का उपयोग उधार लिया है।
- संस्कृति न केवल परिवर्तन के स्रोत के रूप में, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से, उपयोगितावादी व्यवस्था पर इसके प्रभाव से संचालित होती है। यह विचार एक जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने धर्म के समाजशास्त्र के अपने अध्ययन में सबसे अच्छा माना था।

iv) आदर्श कारक (Ideational Factors)

आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक कारकों में, विज्ञान के विकास और विचार के धर्मनिरपेक्षता ने आधुनिक दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण और अभिनव चरित्र के विकास में बहुत योगदान दिया है। हम अब केवल कई रीति-रिवाजों या आदतों का पालन नहीं करते हैं क्योंकि उनके पास परंपरा का सदियों पुराना अधिकार है। इसके विपरीत, हमारे जीवन के तरीके तर्कसंगतता के आधार पर तेजी से बढ़ रहे हैं।

कुछ लेखकों ने सामाजिक परिवर्तन को वैचारिक स्तर पर व्याख्यायित किया है और कहा है कि सभी सामाजिक परिवर्तन वैचारिक हैं। उन्होंने तर्क दिया कि विचार सामाजिक परिवर्तन के

पाठ्यक्रम को प्रभावित कर सकते हैं। उनके लिए, कई या अधिकांश प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों के लिए सांकेतिक परिवर्तन महत्वपूर्ण योगदान कारक हैं। विचार और विचारधाराएँ सामाजिक परिवर्तन में शक्तिशाली प्रेरक बल हैं।

उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता के बाद, हमारे संविधान में निर्धारित सिद्धांतों-समानता, बंधुत्व, स्वतंत्रता और न्याय ने न केवल भारतीय समाज में क्रांति ला दी है, बल्कि इसने परिवार के सदस्यों के बीच संबंधों को भी प्रभावित किया है। सामाजिक दार्शनिक, जो विचारों के बल में विश्वास करते थे, ने तर्क दिया कि कोई भी सामग्री या सामाजिक कारक तब तक बदलाव नहीं ला सकते जब तक कि समाज के भीतर विचारों में परिवर्तन न हो, समाज और प्रकृति के बारे में विचारों में परिवर्तन न हो।

आधुनिक समय में, न केवल हमारे सोचने का तरीका, बल्कि विचारों की सामग्री भी बदल गई है। स्व-बेहतरी, स्वतंत्रता, समानता और लोकतांत्रिक भागीदारी के विचार मोटे तौर पर पिछली दो / तीन शताब्दियों की रचनाएँ हैं। इस तरह के आदर्शों ने सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को जुटाने के लिए कार्य किया है, जिसमें सुधार आंदोलनों और क्रांतियों को शामिल किया गया है।

v) आर्थिक कारक (Economic Factors)

आर्थिक प्रभावों में, सबसे दूरगामी औद्योगीकरण का प्रभाव है। इसने जीवन, संस्थानों, संगठनों और सामुदायिक जीवन के पूरे तरीके से क्रांति ला दी है। परंपरागत उत्पादन प्रणालियों में, उत्पादन का स्तर काफी स्थिर था क्योंकि वे आदतन, प्रथागत आवश्यकताओं के लिए तैयार थे। आधुनिक औद्योगिक पूंजीवाद उत्पादन की तकनीक एक प्रक्रिया जिसमें विज्ञान तेजी से आकर्षित होता है तकनीक के निरंतर संशोधन को बढ़ावा देता है, ।

औद्योगीकरण (विज्ञान और प्रौद्योगिकी) का प्रभाव हम भारतीय परिवार प्रणाली (संयुक्त परिवार) और जाति व्यवस्था पर आसानी से देख सकते हैं। (आर्थिक कारक के प्रभाव के विस्तृत

विश्लेषण के लिए, आर्थिक बदलाव के सामाजिक सिद्धांत में चर्चा किए गए मार्क्स के विचार 5.3.3 to 5.3.5 देखें)।

vi. राजनीतिक कारक (Political Factors)

राज्य सबसे शक्तिशाली संगठन है जो सामाजिक रिश्तों को नियंत्रित करता है। इसमें नए कानूनों को कानून बनाने, समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए पुराने लोगों को निरस्त करने की शक्ति है। बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह, तलाक, विरासत और उत्तराधिकार, अस्पृश्यता संबंधी कानून कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में कई बदलाव लाए हैं।

सत्ता में राजनीतिक नेतृत्व और व्यक्तियों का प्रकार भी सामाजिक परिवर्तन की दर और दिशा को प्रभावित करता है। कई समाजों में राजनीतिक नेतृत्व अर्थव्यवस्था को भी नियंत्रित करता है। वैज्ञानिक-तकनीकी और गैर-तकनीकी परिवर्तन भी राजनीतिक विकास पर निर्भर हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करता है।

राजनीतिक संगठन के प्रकार और सामाजिक परिवर्तन के बीच सीधा संबंध है। शिकारी तथा संग्राहक समाज में, कोई भी राजनीतिक संगठन नहीं था जो समुदाय को जुटाने में सक्षम हो, जैसे; समाजों में न्यूनतम परिवर्तन हुए। हालांकि, सभी अन्य प्रकार के समाज में, अलग-अलग राजनीतिक एजेंसियों, जैसे कि प्रमुख, स्वामी, राजा और सरकार का अस्तित्व समाज के विकास के पाठ्यक्रम को दृढ़ता से प्रभावित करता है। एक शासक अपने महल के निर्माण में चैनल संसाधनों का चयन कर सकता है, उदाहरण के लिए, तब भी जब यह अधिकांश आबादी को प्रभावित करता है।

5.2.5 सामाजिक परिवर्तन के प्रकार (Types of Social Changes)

आगामी चर्चा से यह प्रतीत होता है कि सामाजिक परिवर्तन को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है जो निम्नलिखित तथा निम्नचित्रित हैं:-

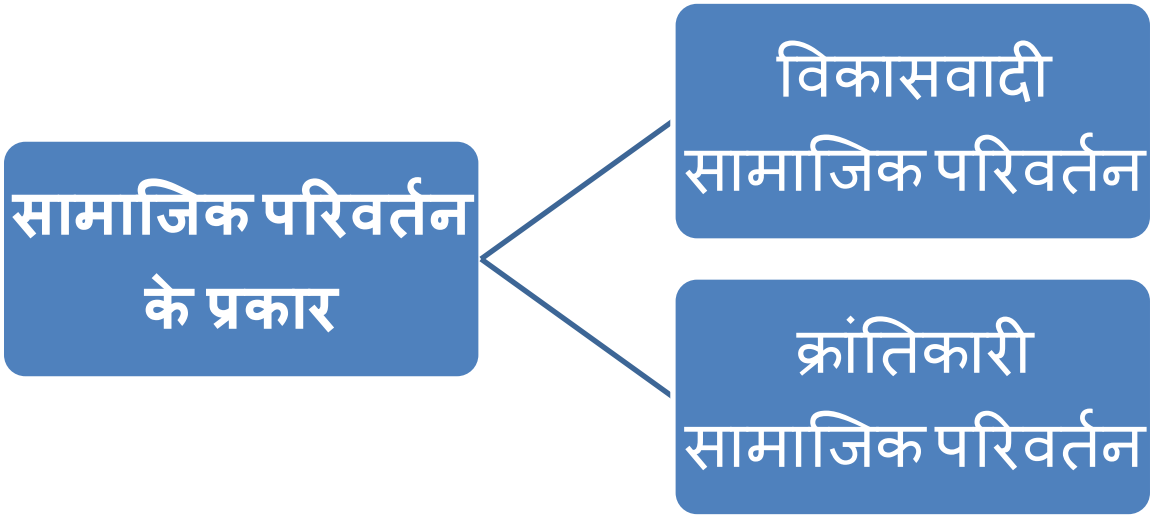

(i) विकासवादी सामाजिक परिवर्तन (Evolutionary Social Changes)

(ii) क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन (Revolutionary Social Changes)

(i) विकासवादी सामाजिक परिवर्तन (Evolutionary Social Changes)

विकासवादी परिवर्तन एक लंबी अवधि के दौरान धीरे-धीरे और धीरे-धीरे विकासवादी प्रक्रिया के माध्यम से होते हैं। इस तरह के परिवर्तन बहुत कठोर या उल्लेखनीय नहीं हैं। वे धीरे-धीरे कंडीशनिंग की प्रक्रिया की तरह आगे बढ़ते हैं और लोग धीरे-धीरे ऐसे बदलावों के साथ समायोजित करना सीखते हैं।

लोग विकासवादी सामाजिक परिवर्तनों के साथ बेहतर समायोजन करने में सक्षम हैं क्योंकि प्रक्रिया धीमी और क्रमिक है और इसलिए समायोजित करना आसान है। आज भी कई पुरुष सदस्यों को पूजा में बैठे हुए पैंट और शर्ट पहनते देखते हैं, जो कई साल पहले स्वीकार्य नहीं थे।

हाफ पैंट और शर्ट के स्थान पर जींस और टी- शर्ट का उपयोग स्कूलों और कॉलेजों में आम आकर्षण बन गया है, सार्वजनिक जीवन में और समाज के सदस्यों ने धीरे-धीरे इसका मुकाबला किया है।

(ii) क्रांतिकारी परिवर्तन (Revolutionary Social Changes)

यह विकासवादी परिवर्तन के विपरीत है। जब हमारी सामाजिक प्रणाली के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन अचानक, काफी और पर्याप्त रूप से होते हैं, ताकि इसे क्रमिक, धीमी गति से परिवर्तन से अलग किया जा सके, तो इसे क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। अन्य शब्दों में परिवर्तन, डिग्री में उल्लेखनीय है। परिवर्तन ऐसे हैं कि वे पूरे सामाजिक क्रम और पाठ्यक्रम और शैली को जीने, आचरण और अवधारणा को बदल देते हैं। वे एक तरह का मामला है जो सामाजिक आंदोलन में अचानक परिवर्तन के कारण कुछ आंदोलन, क्रांति युद्ध, तेजी से तकनीकी परिवर्तनों के कारण होता है। वे बहुत जल्दी और छोटी अवधि या छोटी अवधि के भीतर होते हैं।

5.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

5.3.1 शहरीकरण (Urbanisation)

शहरीकरण कस्बों और शहरों में रहने वाले लोगों के अनुपात में वृद्धि है। जैसा कि आप अग्र दिए गए डेटा से देख सकते हैं कि 1350 और 2014 के बीच 0.2 बिलियन से 3.25 बिलियन लोगों की उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

औद्योगिक क्रांति के दौरान पहली बार उच्च आय वाले देशों (HIC) में शहरीकरण हुआ। कारखानों में काम करने के लिए लोग ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों (खींचे) की ओर आकर्षित हुए। उन्हें खेतों में मशीनीकरण के कारण प्रौद्योगिकी के विकास के रूप में भी धकेल दिया गया।

आजकल, कम आय वाले देशों (LIC) में शहरीकरण की दर HICs से अधिक है। जैसे-जैसे एलआईसी विकसित हो रही है, अधिक लोग शहरी क्षेत्रों में पलायन कर रहे हैं। दुनिया के कोरोप्लेथ (संज्ञा, a symbol or marked and bounded area on a map) मानचित्र स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि कितने एलआईसी (कम आय वाले देश) अधिक शहरीकृत हो रहे हैं।

यद्यपि शहरी विकास के गरीब क्षेत्रों की तुलना में दुनिया के समृद्ध क्षेत्रों में शहरीकरण अधिक है (1950 और 2000 के बीच परिवर्तन) दुनिया के गरीब क्षेत्रों में अधिक हैं। जैसा

कि आप देख सकते हैं कि दुनिया के गरीब हिस्सों में शहरीकरण की दर से ऊपर का ग्राफ बहुत अधिक है। यह ग्रामीण-शहरी प्रवास के कारण है। कुछ गरीब देशों में औद्योगीकरण और आर्थिक विकास के कारण वर्तमान दरों में वृद्धि का अनुमान है। अधिक विकसित देशों में शहरी विकास दर कम है क्योंकि यह पहले से ही उच्च स्तर (20% से अधिक) हो चुका है।

5.3.2 भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन (Social Change in Indian Society)

हम भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन और गतिशीलता की प्रक्रियाओं और पैटर्न का विश्लेषण करेंगे। महात्मा गांधी के विचारों और भारतीय समाज में अहिंसक सामाजिक क्रांति लाने के उनके प्रयासों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। सामाजिक-आर्थिक विकास की तर्कसंगत समझ के लिए गुन्नार मायर्डल के दृष्टिकोण पर भी चर्चा की जाएगी।

समय के संदर्भ में संसाधनों, वितरण प्रक्रियाओं, संस्थागत उपकरणों, शैक्षिक प्रणाली, भूमि संबंध, मजदूरी और जीवन स्तर के बारे में एक अध्ययन, सामाजिक परिवर्तन की व्यापक समझ के लिए आवश्यक है। संरचनात्मक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ-साथ सामाजिक संबंधों के पारंपरिक तरीके भी कायम हैं।

भारतीय समाज में परंपरा और आधुनिकता के मिश्रण पर चर्चा

हम भारतीय समाज में परंपरा और आधुनिकता के मिश्रण के रूप में इस पर निम्न चर्चा करेंगे।

सन 1970-80 के दौरान हमारे स्कूल और कॉलेज के दिनों में हमने साड़ी पहनी हुई होती थी और कोई भी अपने परिवार की शादीशुदा किसी भी महिला को सलवार और कमीज पहने हुए नहीं देखा था । हम भी शादी के बाद अपने सिर पर पर्दा डाल लेते थे। मुझे याद है कि 1990 में मेरी शादी

के बाद, मैंने 25 साल तक नौकरी और घर पर भी अपने सिर पर पर्दा डाला था। जो अब धीरे-धीरे समाप्त सा ही हो गया है, मेरी नजर में यहीं तो सामाजिक परिवर्तन का सरल सा उदहारण ही है l लेकिन अब यह व्यवस्था धीरे-धीरे बदल गई है। अब लड़कियों के बारे में अन्य कहा जाता है, शादीशुदा महिलाएं भी सलवार कमीज पहनती हैं, विभिन्न पश्चिमी पोशाक और आम तौर पर सिर पर पर्दा नहीं डालती हैं। यह प्रथा क्रमिक रही है और इसे माता-पिता, कानूनों और समाज के अन्य सदस्यों द्वारा भी स्वीकार किया गया है।

कुछ दशकों पहले भारत की लड़किओं के लिए लिपस्टिक का उपयोग करना और ब्यूटी पार्लर जाना वर्जित माना जाता था। लेकिन अब भी कई महिला शिक्षकों सहित कॉलेज जाने वाली लड़कियां विभिन्न प्रकार के मेकअप का उपयोग करके स्कूल और कॉलेज जाती हैं। इसे अब निषेध नहीं माना जाता है।

धीरे-धीरे लोगों ने ऐसे विकासवादी परिवर्तनों को समायोजित किया है जो शहरीकरण और पश्चिमी प्रभाव के कारण हो सकते हैं। कुछ साल पहले जब मैं एक बैठक में भाग लेने के लिए दिल्ली जाना हुआ, मेरी एक महिला सहकर्मी जो उसी बैठक में भाग ले रही थी, होटल जाने के रास्ते में एक ब्यूटी पार्लर जाना चाहती थी। उसने मुझे उससे जुड़ने के लिए भी कहा। लेकिन मैं हैरान रह गई जब उसने बताया कि वह कभी भी ब्यूटी पार्लर नहीं गई थी जब वह छोटी थी और अब वह ऐसा नहीं करना चाहती। हालाँकि मैं समाज के एक सदस्य के रूप में कुछ सामाजिक परिवर्तनों को समायोजित करती हूं, जिन्हें मैं लाभकारी मानती हूं या हानिकारक नहीं हो सकता, लेकिन मैं उन परिवर्तनों के पक्ष में नहीं ठहरती, जो हमारे सामाजिक मूल्यों, संस्कृति के लिए हमारे समाज के लिए हानिकारक हैं और आखिरकार समाज में हमारा आचरण महत्वपूर्ण है । अभी भी बहुत से लोग हैं जो समाज का अनुसरण करते हैं।

भारत के पुराने और वृद्ध लोग भी अब बिना किसी संघर्ष या अपराध भावना के ऐसी पश्चिमी पोशाक पहने हुए पाए जाते हैं, क्योंकि समाज ने धीरे-धीरे इसे स्वीकार कर लिया है। इसी तरह उच्च शिक्षा के लिए जाने वाली महिलाएं, सहशिक्षा संस्थानों में पढ़ने वाली, सेना, नौसेना और

एयरफोर्स में शामिल होती हैं, पायलट बनने के लिए, राजनीति में शामिल होने के लिए अंतरिक्ष में जाती हैं, विभिन्न नौकरियां करती हैं, जो पहले केवल पुरुषों के लिए थीं।

घरेलू मोर्चे के बाहर विभिन्न कार्य करना, जो कई दशकों पहले महिलाओं के लिए स्वीकार्य नहीं थे, अब स्वीकार किए जाते हैं। भारतीय समाज में घरेलू काम करने वाले पति, जो सौ साल पहले स्वीकार्य नहीं थे, भारतीय समाजों में आम प्रचलन बन गए हैं। यह क्रमिक, विकासवादी सामाजिक परिवर्तन के कारण संभव हुआ है। यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ है।

पहले बहुत से लोग कर का भुगतान नहीं करते थे, लेकिन अब लोगों ने इसे कानूनी मानकर कर का भुगतान करने के लिए मन बना लिया है और स्वेच्छा से कर का भुगतान कर रहे हैं। ये महत्वपूर्ण विकासवादी परिवर्तनों के सरल उदाहरण हैं जो धीरे-धीरे पर्याप्त समय के परिप्रेक्ष्य में होते हैं।

5.3.3 मार्क्सवाद (Marxism)

मार्क्सवाद समाज को संगठित करने का एक राजनीतिक और आर्थिक तरीका है, जहाँ श्रमिक उत्पादन के साधन के मालिक हैं। समाजवाद एक ऐसे समाज को संगठित करने का एक तरीका है जिसमें उत्पादन के साधनों का स्वामित्व और नियंत्रण सर्वहारा वर्ग/ मजदूर वर्ग के पास होता है। मार्क्स ने प्रस्ताव दिया कि यह इतिहास की प्रगति में अगला आवश्यक कदम था।

5.3.4 मार्क्सवाद के मुख्य बिंदु (Main Point of Marxism)

1240 के दशक में, जर्मन दार्शनिक और समाजशास्त्री कार्ल मार्क्स, जो जर्मन राज्यों में अधिकारियों के भागने के बाद इंग्लैंड में रह रहे थे, जहां उन्हें एक राजनीतिक खतरा माना जाता था, ने उन पुस्तकों को प्रकाशित करना शुरू किया, जिनमें उन्होंने कई तरह के साम्यवाद के लिए अपने सिद्धांतों को रेखांकित किया। जो आजकल मार्क्सवाद के नाम से जाना जाता है ।

मार्क्सवाद का उद्देश्य समाज में मजदूरों को पूंजीपति वर्ग, प्रबंधक वर्ग द्वारा उनके शोषण के प्रति जागरुक करना है। एक बार जब लोग इस शोषण के बारे में जागरूक हो जाते हैं,

तो वे अत्याचारियों को उखाड़ फेंकने और समाज के एक नए प्रकार को लाने की स्थिति में होंगे।

मुख्य विचार यह है कि दुनिया को वर्गों में विभाजित किया गया है, श्रमिकों और अमीर पूंजीपति जो श्रमिकों का शोषण करते हैं, एक संघर्ष-वर्ग है जिसका परिणाम अंततः समाजवाद (श्रमिकों के उत्पादन के स्वयं के साधन) और फिर साम्यवाद (स्टेटलेस, वर्गहीन समाज) में होना चाहिए l

5.3.5 समाजशास्त्री कार्ल मार्क्स के अनुसार संघर्ष-वर्ग (Class conflict) के माध्यम से परिवर्तन (Social Change through Class-Conflict)

कार्ल मार्क्स, जो संघर्ष सिद्धांतों के सबसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली, एक प्रसिद्ध जर्मन सामाजिक विचारक और दार्शनिक हैं, ने आगे रखा, "सभी संघर्ष इतिहास वर्ग का इतिहास है" - मार्क्स और एंगेल्स को 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' (1242) में लिखा। "हिंसा इतिहास की दाई (mid-wife) है", मार्क्स ने घोषित किया। विरोधी हितों वाले व्यक्ति और समूह संघर्ष के लिए बाध्य हैं, मार्क्स ने जोर दिया। दो प्रमुख सामाजिक वर्गों के बाद से, अमीर और गरीब, या पूंजीवादी और मजदूरों में परस्पर शत्रुता है, वे संघर्ष में हैं। इतिहास दरअसल शोषक (अमीर) और शोषित (गरीब) वर्गों के बीच संघर्ष की कहानी है। यह संघर्ष खुद को दोहराता है और जब तक पूंजीवाद श्रमिकों द्वारा उखाड़ फेंका जाता है और एक समाजवादी राज्य बनाया जाता है। यहाँ पर जोर दिया जाना चाहिए कि मार्क्स और अन्य संघर्ष सिद्धांत समाज को मूल रूप से गतिशील मानते हैं और स्थिर नहीं। वे संघर्ष को एक सामान्य प्रक्रिया नहीं बल्कि एक सामान्य मानते हैं। उनका मानना है कि "किसी भी समाज में मौजूदा परिस्थितियों में भविष्य के सामाजिक परिवर्तनों के बीज होते हैं"।

कार्ल मार्क्स की तरह, एक और जर्मन समाजशास्त्री, जॉर्ज सिमेल ने भी सामाजिक परिवर्तन में संघर्ष के महत्व पर जोर दिया। उनके अनुसार, संघर्ष समाज की एक स्थायी विशेषता है, न कि केवल एक अस्थायी घटना। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो लोगों को आपस में बातचीत/ अंतरंग और व्यक्तिगत संपर्कों में बांधती है। इसके अलावा, संघर्ष समान हितों के लोगों को अपने उद्देश्यों को

प्राप्त करने के लिए एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस तरह लगातार संघर्ष समाज को कभी भी गतिशील बनाए रखता है और बदलता रहता है।

संघर्ष सिद्धांत काफी प्रभावी और प्रभावशाली है, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन यह सामाजिक परिवर्तन के सभी रूपों के लिए जिम्मेदार नहीं है। यह केवल हमें इतिहास और वर्तमान समाज में कुछ सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों का विश्लेषण करने का साधन देता है। फिर भी यह सामाजिक परिवर्तन का एक व्यापक सिद्धांत नहीं है। यह हमें सामाजिक परिवर्तन की दिशा के बारे में बहुत कुछ नहीं बता सकता है। यहां तक कि मार्क्स की भविष्यवाणियां (Predictions) भी गलत हुई हैं।

5.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

अधिगम सम्बंधित क्रियाकलाप

ऊपर दिए हुये शब्दों की मदद से रिक्त स्थान भरो:--

{संरचना, शहरीकरण, व्यापक, सिद्धांत, औद्योगीकरण, संख्या, और, संरचना, समाज, सार्वभौमिक, सामान्य प्रक्रिया, संघर्ष, मार्क्स}

i) दुनिया के गरीब हिस्सों में .....की दर से ऊपर का ग्राफ बहुत अधिक है।

ii) आर्थिक प्रभावों में, सबसे दूरगामी .....का प्रभाव है।

iii) कृत्रिम तरीकों को अपनाना, जन्म नियंत्रण और गर्भपात भी जनसंख्या की .....और .....को प्रभावित कर रहे हैं।

iv) शैक्षिक प्रणाली और .....के बीच का संबंध

आपसी है।

v) सामाजिक परिवर्तन .....है और यह अनिवार्य रूप से सभी समाजों में होता है।

vi) .....काफी प्रभावी और प्रभावशाली है

कृपया उत्तर की पड़ताल पाठ के अंतिम हिस्से 5.2 में करें ।

5.5 सारांश (Summary)

सामाजिक-परिवर्तन और शहरीकरण धीमा हो सकता है लेकिन इसे रोकना कुछ नहीं है इसलिए, शहरीकरण के कारण होने वाली समस्याओं को कम करने का प्राथमिक तरीका ऐसा जिस से परिवर्तन जल्द आएगा। समाज और पर्यावरण पर अधिक दबाव डाले बिना जनता के आराम के लिए उपलब्ध सभी सुविधाओं और संसाधनों की योजना बनाना है।

शहरों को कार्डिनल नियम का उपयोग करना चाहिए, जहां उनकी वृद्धि की योजना बनाई जाती है, बजाय कि उन्हें अपने दम पर बढ़ने देने के जैसा कि शहर के लिए स्थानीय सरकार की योजना है, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बढ़ती आबादी का समर्थन करने के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचा है और सेवा प्रावधान में सुधार करने के लिए नागरिक निकायों के पास आवासीय क्षेत्र स्थित होने चाहिए।

ग्रामीण-शहरी प्रवास को कम करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा किए जा सकते हैं। इससे लोगों की बढ़ती संख्या से शहरों पर तनाव कम होगा। शहरों में जाने के लिए लोगों को प्रतिबंधित करने का उपयोग शहरीकरण से जुड़ी समस्याओं को हल करने के लिए नहीं किया जा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रत्येक नागरिक को तब तक कहीं भी जाने और बसने का

अधिकार है, जब तक कि वह अन्य लोगों के अधिकारों का उल्लंघन नहीं करता है। समाजशास्त्रियों, इतिहासकारों और सामाजिक नृविज्ञानियों ने सामाजिक परिवर्तन के कई सामान्य सिद्धांतों का प्रस्ताव किया है।

5.6 सूचक शब्द (Keywords)

- **भौतिक वातावरण**: भौतिक पर्यावरण में उच्चावच, संरचना, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति तथा जीव-जंतु सम्मलित होते हैं।
- **अस्थायी घटना**: स्थाई रूप से नहीं होना है
- **कार्डिनल नियम**:मौलिक महत्व का; पूर्वप्रतिष्ठित; बेहतर;
- **सार्वभौमिक**: वैश्विक व्यापकता या व्यावहरिकता होना
- **शहरीकरण:** शहरीकरण ग्रामीण क्षेत्र से शहरी निवास की ओर, जनसंख्या पलायन को संदर्भित करता है।
- **स्टेटलेस**: किसी भी देश का नागरिक न होना; नागरिकताहीन; राज्यविहीन.
- **वर्गहीन समाज**: किसी भी वर्ग का न होना
- **कृत्रिम तरीकों को अपनाना**: कृत्रिम बुदधिमता को विकसित करना ।
- **औद्योगीकरण**: अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु उद्योगों की स्थापना एवं उनका विकास, औद्योगीकरण एक सामाजिक तथा आर्थिक प्रक्रिया है, जिसमें उद्योग-धन्धों की बहुलता होती है ।

5.7 स्व-मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

- सामाजिक-परिवर्तन की परिभाषा लिखें ।
- शहरीकरण के विषय पर उदहारण सहित उत्तर दीजिए।
- वर्गहीन समाज किसे कहते हैं? विस्तृत विवरण लिखें ।
- सामाजिक परिवर्तन के कारक की सूचि बनाये और उदहारण सहित वर्णन करें ।

- मार्क्सवाद पर एक संक्षिप्त नोट लिखें ।

5.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

ऊपर दिए हुये शब्दों की मदद से रिक्त स्थान भरो:

उत्तर: i) शहरीकरण ii) औद्योगीकरण iii) संख्या और संरचना iv) समाज

v) सार्वभौमिक, vi) संघर्ष

5.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

- Basic Concepts of Education by Arung, Fernades , www.linkedin.com
- Indian Political System (4th Ed.) By Roy, H and Singh, M.P. , Pearson India Education Services
- History of Social thought by K.Singh, Prakashan Kendra, Lucknow.
- Principles of Political Science by Anup C, Kanpur, S. Chand and Company.
- Sociology: An Introduction by Smelser, Neil, J.,Wiley Eastern Private Limited
- Sociology: Principles of sociology with an introduction to social thought by Shanker Rao C.N., S. Chand and Company.

Subject : Sociology(Society, Culture and Social Change)	
Course Code **: SOCL-102**	Author **: Dr. Shakuntla Devi**
Lesson No. **: 06**	Editor: **Self**
Processes of Social Change: Characteristic Features of Industrialization	

<u>अध्याय की संरचना</u>

6.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

6.1 प्रस्तावना (Introduction)

6.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

6.2.1 औद्योगीकरण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Industrialization)

6.2.2 औद्योगीकरण की मुख्य विशेषताएं (Nature and Features of Industrialization)

6.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

6.3.1 औद्योगीकरण के महत्व (Importance of Industrialization)

6.3.2 औद्योगीकरण का प्रभाव (Impact of Industrialization)

6.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

6.5 सारांश (Summary)

6.6 सूचक शब्द (Keywords)

6.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

6.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

6.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

6.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के माध्यम से जाने के बाद, आप निम्न कर सकेंगे:

इस अध्याय के माध्यम से जाने के बाद, आप निम्न कर सकेंगे:

- औद्योगीकरण के अर्थ और परिभाषा को जानेंगे l
- औद्योगीकरण निर्धारकों की प्रकृति को समझेंगे l

- औद्योगीकरण के महत्व का वर्णन करेंगे l
- औद्योगीकरण की प्रकृति और मुख्य विशेषताएं जानेंगे l

6.1 परिचय/ प्रस्तावना (Introduction)

औद्योगीकरण वह **प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि उत्पादन से बड़े पैमाने पर उत्पादित और तकनीकी रूप से उन्नत वस्तुओं और सेवाओं की ओर बढ़ती है** । यह चरण उत्पादकता में छलांग, ग्रामीण से शहरी श्रम में बदलाव और जीवन स्तर में वृद्धि की विशेषता है।

औद्योगिक क्रांति उस नाम की हकदार है जिसके साथ इतिहासकारों ने इसे ' **लेबल** ' किया है। औद्योगीकरण से पहले न केवल व्यापार और अर्थशास्त्र में बल्कि समाज की बुनियादी संरचनाओं में भी व्यापक और स्थायी परिवर्तन लाए, जब अधिकांश यूरोपीय देशों में सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियाँ छोटे पैमाने की खेती और कारीगर हस्तशिल्प थीं, सामाजिक संरचना अनिवार्य रूप से वैसी ही बनी रही जैसी वे मध्य युग के दौरान थीं। औद्योगिक विकास के आगमन ने मानव बस्ती, श्रम और पारिवारिक जीवन के पैटर्न को नया रूप दिया। औद्योगीकरण द्वारा गति में आए परिवर्तनों ने यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका और दुनिया के अधिकांश भाग को आधुनिक युग में प्रवेश कराया।

अधिकांश इतिहासकार 18वीं शताब्दी के मध्य दशकों में ग्रेट ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति की उत्पत्ति मानते हैं। इस समय ब्रिटिश द्वीपों और अधिकांश यूरोप में, अधिकांश सामाजिक गतिविधियाँ छोटे और मध्यम आकार के गाँवों में होती थीं। लोग शायद ही कभी अपने गृह गाँव से बहुत दूर जाते थे। 18वीं शताब्दी के दौरान, ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देशों की जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होने लगी। आर्थिक परिवर्तन के पहले संकेतों में कृषि उत्पादकता में वृद्धि थी, जिससे इस बढ़ती आबादी को खिलाना संभव हो गया। इन कारकों के संयोजन से ग्रामीण लोगों के जीवन में गहरा बदलाव आया। धीरे-धीरे, बाजार की सेवा के लिए बड़े पैमाने पर मशीनीकृत कृषि ने निर्वाह खेती के प्रकारों को पार

करना शुरू कर दिया, जो कि अधिकांश किसानों ने पीढ़ियों से अभ्यास किया था। घेराव आंदोलन, जिसने आम तौर पर आयोजित चरागाह भूमि को बंद निजी संपत्ति में परिवर्तित कर दिया, ने गरीबों, ग्रामीण बहुसंख्यकों के सामने आने वाले नए दबावों को जोड़ा।

जनसंख्या वृद्धि ने भूमि पर जीवन यापन करने में कठिनाइयों का सामना करने वाले लोगों की संख्या में इजाफा किया। कई लोगों ने अपने कृषि जीवन को पीछे छोड़ दिया और रोजगार खोजने के लिए कस्बों और शहरों की ओर चल पड़े। उद्योग में प्रगति और कारखाने के उत्पादन में वृद्धि ने ब्रिटेन में शहरीकरण की प्रवृत्ति को तेज कर दिया। मैनचेस्टर और लीड्स जैसे औद्योगिक शहरों का कुछ ही दशकों में नाटकीय रूप से विकास हुआ। 1800 में, लगभग 20 प्रतिशत ब्रिटिश आबादी शहरी क्षेत्रों में रहती थी। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक, यह अनुपात 50 प्रतिशत तक बढ़ गया था। फ़्रांस, नीदरलैंड और जर्मनी जैसे अन्य पश्चिमी यूरोपीय देशों में भी शहरी आबादी में वृद्धि हुई है, हालांकि, धीरे-धीरे। इन परिवर्तनों ने मध्ययुगीन काल से चले आ रहे सामाजिक संबंधों में लंबे समय से चले आ रहे प्रतिमानों को पूरी तरह से बाधित कर दिया।

नए शहरी उद्योगों में काम की प्रकृति का भी महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव पड़ा। औद्योगिक क्रांति से पहले, विशेष कौशल वाले कारीगरों ने यूरोप के अधिकांश निर्मित सामानों का उत्पादन किया। उनका काम उनके शिल्प की परंपराओं और उपलब्ध संसाधनों की सीमाओं से संचालित होता था। मानव और पशु पेशी और जलचक्र युग के मुख्य ऊर्जा स्रोत थे। फैक्ट्री-आधारित उद्योग के आगमन के साथ, कोयले से चलने वाले भाप के इंजन और अन्य मशीनरी ने श्रम के लिए एक नई, तेज गति निर्धारित की। कारखानों, कोयला खदानों और अन्य कार्यस्थलों में, घंटे बहुत लंबे थे, और स्थितियाँ आमतौर पर निराशाजनक और खतरनाक थीं। 19वीं शताब्दी के दौरान यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका और दुनिया के अन्य हिस्सों के औद्योगीकरण के साथ विनिर्माण उद्यमों का आकार और दायरा बढ़ता रहा। बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं को प्राप्त करने वाली बड़ी फर्मों ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रतिस्पर्धी क्षेत्र में

लाभ प्राप्त किया। औद्योगीकरण की दुनिया में, उत्पादन के नए साधनों का मतलब श्रम और जीवन के पुराने, धीमे तरीकों का अंत था।

नई परिस्थितियों के सबसे घातक परिणाम वे हो सकते हैं जो सबसे बुनियादी सामाजिक इकाई: परिवार को प्रभावित करते हैं। पूर्व-औद्योगिक परिवार मूल रूप से एक सामाजिक और आर्थिक इकाई दोनों था। विवाहित जोड़े और उनके बच्चे अक्सर परिवार के खेत में या दुकान में कंधे से कंधा मिलाकर काम करते थे, या अन्यथा परिवार के समग्र लाभ के लिए अपने श्रम को विभाजित करते थे। 18वीं सदी के ग्रेट ब्रिटेन में महिलाओं और पुरुषों के लिए अपने ग्रामीण घरों में काम करना भी आम था, जैसे कपड़ा कताई और व्यापारी मालिकों के लिए टुकड़ा-टुकड़ा आधार पर बुनाई। रोजगार के इस विकेंद्रीकृत रूप को "पुटिंग-आउट" या घरेलू प्रणाली कहा जाता था। हालांकि, कारखाने के उत्पादन और औद्योगिक शहरों के उदय का मतलब ज्यादातर पुरुष श्रमिकों के लिए घर को कार्यस्थल से अलग करना था। बहुत बार, आय की आवश्यकता ने पुरुषों को शहर में नौकरियों के लिए अपने परिवारों को पीछे छोड़ने के लिए प्रेरित किया। भौगोलिक अलगाव के बिना भी, कई प्रकार की औद्योगिक नौकरियां इतनी मांग कर रही थीं कि श्रमिकों के लिए पारिवारिक जीवन से जुड़े संबंधपरक बंधनों को संरक्षित करने के लिए बहुत कम समय बचा।

महिलाएं भी घर से बाहर काम करती थीं। अविवाहित महिलाएं, विशेष रूप से, अक्सर घरेलू नौकरों के रूप में काम करती थीं। माताओं सहित कई ब्रिटिश महिलाओं को कपड़ा मिलों में अपने परिवार की जीविका चलाने में मदद करने के लिए नियुक्त किया गया था। औद्योगीकरण की पहली शताब्दी के दौरान कपड़ा उद्योग में बाल श्रम भी व्याप्त था। कारखाने के मालिकों ने उन श्रमिकों की सराहना की जिनकी उंगलियां इतनी छोटी थीं कि नाजुक ढंग से पिरोई गई मशीनरी में हेरफेर कर सकें। उद्योग के उत्पादन में उनके महत्व के बावजूद, इन महिलाओं और बच्चों को बहुत कम भुगतान किया जाता था और उन्हें नियमित रूप से प्रति दिन 16 घंटे या उससे अधिक समय तक काम करने के लिए मजबूर

किया जाता था। उनकी नौकरियों को उनके पुरुष सहकर्मियों की तुलना में कम कुशल माना जाता था, हालांकि काम करने की स्थिति कभी-कभी समान रूप से खतरनाक होती थी।

संयुक्त राज्य अमेरिका औद्योगीकरण से उत्पन्न होने वाले कई समान सामाजिक परिवर्तनों से गुज़रा। 1770 के दशक में देश के इंग्लैंड से अलग होने के बाद अमेरिका में निर्माण की शुरुआत हुई। थॉमस जेफरसन की अध्यक्षता के दौरान विदेशी आयात पर प्रतिबंध और 1812 के युद्ध के दौरान अटलांटिक समुद्री तट पर ब्रिटिश नाकेबंदी ने घरेलू उत्पादन को बढ़ावा दिया। संयुक्त राज्य अमेरिका 1830 के दशक तक दुनिया की प्रमुख आर्थिक शक्तियों में से एक बन गया।

अमेरिकी स्वतंत्रता के बाद पहली छमाही में, देश की श्रम शक्ति का एक बड़ा हिस्सा कृषि से विनिर्माण क्षेत्र में स्थानांतरित हो गया। ग्रेट ब्रिटेन की तरह, कपड़ा उद्योग ने मशीनीकरण की ओर अग्रसर किया। हालांकि, कई उद्योगों में, घर-आधारित उत्पादन और कारीगर शिल्प परंपराओं ने बड़े, मशीन-संचालित संचालनों में श्रम का स्थान ले लिया। औद्योगीकरण, परिवहन में बड़ी प्रगति के साथ, अमेरिकी शहरों के विकास और तेजी से बढ़ती बाजार अर्थव्यवस्था को गति दी। इसने अमेरिकी समाज में एक बड़े श्रमिक वर्ग के विकास को भी आकार दिया, जो अंततः कामकाजी पुरुषों और महिलाओं के नेतृत्व में श्रम संघर्षों और हड़तालों का कारण बना।

19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में, ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य औद्योगिक राष्ट्र फ़ैक्टरी प्रणाली के कुछ सबसे खराब दुरुपयोग को सीमित करने के लिए सुधार कानूनों पर बहस कर रहे थे और कानून बना रहे थे। हालांकि, 20वीं और 21वीं सदी में जब उनकी अर्थव्यवस्थाओं का औद्योगीकरण हुआ तो दुनिया के कई हिस्सों में समान रूप से दमनकारी श्रमिक स्थितियां पैदा हुईं। औद्योगीकरण द्वारा किए गए दैनिक जीवन के पुनर्गठन के ऐसे प्रभाव थे जिन्होंने परिवार और समुदाय की संस्थाओं के लिए भौतिक आधार को कमजोर कर दिया। ये प्रभाव

इतने स्थायी थे कि उन्हें आज भी महसूस किया जा सकता है - भले ही विकसित समाज एक ऐसे युग में स्थानांतरित हो गए हैं जिसे विद्वान "उत्तर-औद्योगिक" के रूप में वर्णित करते हैं।

6.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

6.2.1 औद्योगीकरण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Industrialization)

Industrialization is **the process of transforming the economy of a nation or region from a focus on agriculture to a reliance on manufacturing**. Mechanized methods of mass production are an essential component of this transition.

औद्योगीकरण एक मानव श्रम आधारित अर्थव्यवस्था को एक मशीन श्रम संचालित औद्योगिक समाज में बदलने को संदर्भित करता है। इसमें कृषि आर्थिक प्रणाली का एक जटिल यंत्रीकृत जन निर्माण प्रक्रिया में एक व्यवस्थित परिवर्तन शामिल है। मशीन-आधारित उत्पादन विधियों को धीरे-धीरे अपनाने से नौकरी के अवसर पैदा होते हैं, उत्पादकता बढ़ती है, आर्थिक विकास में तेजी आती है और जीवन स्तर में वृद्धि होती है।

6.2.2 औद्योगीकरण की विशेषताएं (Charactristics of Industrialisation)

उपलब्ध सामान अधिक प्रचुर मात्रा में और अधिक विविध हैं। औद्योगीकरण हमें सस्ती कीमतों पर अधिक चीजें खरीदने की अनुमति देता है। मैन्युफैक्चरिंग ने इसके उत्पादन में काफी वृद्धि की। मशीनें श्रमिकों को अधिक उत्पादक बनने में मदद करती हैं, पहले से कहीं अधिक माल का उत्पादन करती हैं।

बड़े पैमाने पर उत्पादन के यंत्रीकृत तरीके इस संक्रमण का एक अनिवार्य घटक हैं। औद्योगीकरण की सकारात्मक विशेषताओं में **आर्थिक विकास, श्रम का अधिक कुशल विभाजन और तकनीकी नवाचार में वृद्धि** शामिल है।

औद्योगीकरण की विशेषताएं हैं:

- आर्थिक विकास बहुत अधिक है।

- श्रम का अधिक कुशल और जटिल विभाजन।
- समस्याओं को हल करने के लिए तकनीकी नवाचार का उपयोग।
- मानव नियंत्रण से बाहर की स्थितियों पर निर्भरता सीमित थी।
- उद्योग के लिए विज्ञान का बढ़ता उपयोग।

भारत में औद्योगीकरण की विशेषताएं (Charactristics of Industrialisation in India)

- भारत में कई महत्वपूर्ण शहरी केंद्र थे, हालांकि यह मुख्य रूप से ग्रामीण थाI
- कई कला और शिल्प सहित गैर-कृषि व्यवसायों की व्यापक विविधता थी।
- औद्योगिक क्रांति का चरम गरीबी और धन का लगातार सह-अस्तित्व रहा है।
- औद्योगिक श्रमिकों में मुख्य रूप से निम्न जाति और अछूत शामिल थे-जाति, परिवार और गांव समुदाय के साथ संघर्ष: स्थायी निवासी, अर्ध-स्थायी निवासी, अस्थायी प्रवासी, गांव आधारित कार्यकर्ता-औपचारिक और अनौपचारिक संबंध-ट्रेड यूनियन की सदस्यता और भागीदारी

6.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

6.3.1 औद्योगीकरण के महत्व (Importance of Industrialization)

औद्योगीकरण छोटे और बड़े पैमाने के उद्योगों में रोजगार के अधिक अवसर प्रदान करता है। एक औद्योगिक अर्थव्यवस्था में, उद्योग अल्प-रोज़गार और बेरोज़गार कृषि श्रमिकों को अवशोषित करता है, इस प्रकार सामुदायिक आय में वृद्धि करता है।

औद्योगीकरण एक देश या क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर उद्योगों का विकास है। इस विकास के कई फायदे हैं। मुख्य लाभ इस तथ्य से आता है कि औद्योगीकरण हमें अधिक सामान देता है जिसे सस्ती कीमतों पर खरीदा जा सकता है। जब एक अर्थव्यवस्था का औद्योगीकरण होता है, तो चीजें अधिक तेजी से और अधिक मात्रा में बनती हैं। इसका मतलब है कि कीमतें नीचे

जा सकती हैं और कई अन्य सामान बनाए जा सकते हैं। इस विशेष विकास से असंख्य आर्थिक लाभ उत्पन्न होते हैं।

जैसा कि उल्लेख किया गया है, औद्योगीकरण का पहला लाभ उद्योगों का विकास है जिसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन होता है जो उपभोक्ताओं को बहुत सस्ती दरों पर बेचा जाता है। औद्योगीकरण के माध्यम से, मशीनें लोगों को अपना काम अधिक तेज़ी से करने में मदद करती हैं। जैसा कि उत्पादकता को अनुकूलित किया जाता है, अधिक उत्पाद बनाए जाते हैं, और इसलिए, अधिशेष का परिणाम सस्ती कीमतों में होता है। कुछ लोग तर्क दे सकते हैं कि यह लाभ सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आर्थिक विकास को अत्यधिक प्रभावित करता है। सस्ते सामान उपभोक्ताओं के लिए बहुत सुविधाजनक होते हैं, और अधिक सामान्य लोग उनका लाभ उठा सकते हैं।

औद्योगीकरण का एक अन्य लाभ समय का संरक्षण है। आश्चर्य की बात नहीं है, व्यापार जगत बेंजामिन फ्रैंकलिन की प्रसिद्ध कहावत "टाइम इज मनी" से चलता है क्योंकि समय सीमित है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम इसे कैसे काटते हैं, एक दिन में केवल 24 घंटे होते हैं। कृषि श्रमिकों के विपरीत, कारखाने का काम समय की पाबंदी की मांग करता है। लोगों को घड़ी के हिसाब से जीना सीखना होगा। समय की पाबंदी और उत्पादकता प्रमुख लक्ष्य हैं। जब फिलीपींस के साइंस पार्क जैसे औद्योगिक एस्टेट में औद्योगिक कंपनियां अपने समय पर नियंत्रण करना सीखती हैं, तो वे ध्यान केंद्रित करने की अपनी क्षमता में सुधार करती हैं, और इस बढ़े हुए फोकस से दक्षता में वृद्धि होती है। आम तौर पर, यह व्यवसाय में एक बहुत ही वांछनीय चीज है क्योंकि अच्छा समय प्रबंधन माना जाता है कि नीचे की रेखा में सुधार होता है।

इसके अतिरिक्त, औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप लोगों के जीवन स्तर में पर्याप्त वृद्धि हुई है। विभिन्न उद्योगों की उपस्थिति के कारण, लोगों को नए प्रकार के उत्पाद जैसे ऑटोमोबाइल, फर्नीचर, उपकरण, कपड़े आदि मिल रहे हैं, जिससे आम लोगों के जीवन स्तर

में सुधार होता है। हालाँकि, इस संदर्भ में "जीवन स्तर" का क्या अर्थ है? आर्थिक इतिहासकार इसकी तुलना खुशी से करेंगे लेकिन खुशी को मापने की असंभवता उन्हें वास्तविक मजदूरी या वास्तविक आय जैसे मौद्रिक उपायों के साथ जीवन स्तर की बराबरी करने के लिए मजबूर करती है। औद्योगीकरण के तकनीकी परिवर्तनों के बिना, बाजार में केवल महंगे सामान उपलब्ध होने के साथ ही खराब जीवन स्तर के कारण जनसंख्या वृद्धि को काफी हद तक कम किया जा सकता था।

इसके अतिरिक्त, औद्योगीकरण मानव ऊर्जा के विशाल अपव्यय को नियंत्रित करने और जांचने के साधन प्रदान करता है जिसका उपयोग कहीं और किया जा सकता है। श्रम भी अनुकूलन की सख्त जरूरत है। गलत स्थान पर रखे गए श्रम की लागत न केवल अधिक होती है, बल्कि तेज-तर्रार और महत्वपूर्ण उद्योगों में आवश्यक इष्टतम स्तर पर प्रदर्शन करने के लिए उत्पादन में भी बाधा उत्पन्न होती है। प्रत्येक औद्योगिक कंपनी लाभ को अधिकतम करके या उत्पादन प्रक्रिया में होने वाली लागत को कम करके इष्टतम स्थिति प्राप्त करने का प्रयास करेगी। इसे क्रियान्वित करने के लिए मानव ऊर्जा का संरक्षण एक महत्वपूर्ण घटक है। औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप परिवहन के नए साधनों का विस्तार हुआ है जिससे तेजी से आयात और निर्यात प्रक्रिया संभव हो गई है। कई व्यवसायों ने अब वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करना शुरू कर दिया है। माल का निर्यात और आयात करना किसी भी बड़े, सफल व्यवसाय का केंद्र नहीं है; यह अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ने और विस्तार करने में भी मदद करता है। दुनिया एक छोटी और अधिक जुड़ी हुई जगह बन गई है। इस विकास के साथ, उपभोक्ता वस्तुओं में अनेक विकल्प उपलब्ध हो गए हैं। ग्राहकों को विविध प्रकार के विकल्प मिलते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एक बार फिर जीवन स्तर में सुधार होता है।

अंत में, औद्योगीकरण नए रोजगार के अवसर पैदा करता है, जिसके परिणामस्वरूप गरीबी काफी हद तक कम हो जाती है। यह लोगों के लिए उद्योगों का विकास कर रोजगार के अवसर सृजित करता है। साथ ही, जिन सामान्य क्षेत्रों पर आप व्यवसाय बढ़ाने के लिए भरोसा कर

सकते हैं, वे अक्सर कठिन आर्थिक वातावरण में कम हो जाते हैं। उपभोक्ता कम सामान खरीदते हैं। व्यवसाय कम कर्मचारियों को नियुक्त करते हैं जिन्हें बीमा की आवश्यकता होती है। बड़ी बीमा कंपनियाँ अपेक्षाकृत स्थिर होती हैं, लेकिन व्यवहार्य बने रहने के लिए वे आकार घटाने पर भरोसा कर सकती हैं। अधिकांश भाग के लिए, औद्योगीकरण लोगों के करियर में स्थिरता के लिए बीमा की गारंटी देता है। आखिरकार, व्यवसायों और व्यक्तियों को समान रूप से किसी प्रकार के बीमा की आवश्यकता होती है, चाहे अर्थव्यवस्था किसी भी स्थिति में हो।

6.3.2 औद्योगीकरण का प्रभाव (Impact of Industrialization)

ये सब जानते हैं कि औद्योगीकरण से आर्थिक समृद्धि आई है; इसके अतिरिक्त इसके परिणामस्वरूप अधिक जनसंख्या, शहरीकरण, बुनियादी जीवन सहायक प्रणालियों पर स्पष्ट तनाव हुआ है जबकि पर्यावरणीय प्रभावों को सहनशीलता की दहलीज सीमा के करीब धकेल दिया गया है। तेजी से बढ़ते औद्योगिक विकास और अपेक्षाकृत कम भूमि द्रव्यमान के साथ, पर्यावरणीय स्थिरता अब औद्योगिक विकास प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण निर्णायक कारक बन रही है।

i) औद्योगीकरण और समाज परिवर्तन (Industrialisation and Social Change)

संचित साक्ष्य लगातार संकेत देते हैं कि हरित दृष्टिकोण के सफल कार्यान्वयन के माध्यम से मौजूदा उद्योगों का पर्यावरण-औद्योगिक नेटवर्क में परिवर्तन क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने के लिए एक व्यवहार्य समाधान प्रदान करता है, जबकि समवर्ती आधार पर क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ाता है। यह अतीत और मौजूदा परिस्थितियों के सावधानीपूर्वक मूल्यांकन के बाद, पर्यावरण के अनुरूप एक उपयुक्त योजना और एकीकृत ढांचे की मांग करता है। प्रभावित क्षेत्र पर अनुभवजन्य ज्ञान स्थानीय संदर्भ को समझने और जमीनी वास्तविकताओं के आधार पर आगे की कार्रवाई विकसित करने में मदद करता है। इसी उद्देश्य से पुडुचेरी के वर्तमान औद्योगिक प्रदूषण और पर्यावरण की स्थिति पर एक अध्ययन किया गया। एक आकस्मिक श्रृंखला विश्लेषण ने इसके तात्कालिक और

मूल कारणों पर प्रकाश डालते हुए स्थानीय पर्यावरण पर औद्योगीकरण के गंभीर प्रभावों का संकेत दिया। पुडुचेरी क्षेत्र में बड़े पैमाने पर प्रदूषण और दुनिया भर में पाए जाने वाले समान परिदृश्यों को रोकने के लिए स्थायी समाधान सुझाने के लिए निष्कर्ष एक आधार बनाते हैं।

ii) कारखानों, खानों और बाल श्रम (Industries, mines and Child Labour)

- औद्योगिक क्रांति ने समाज में बहुत बड़ा परिवर्तन किया।
- एक बड़ा बदलाव घर पर किए जा रहे काम से शिफ्ट था
- कुटीर उद्योगों से लेकर कारखानों में हो रहे काम में हाथ बटना।
- इन शुरुआती कारखानों में काम करने की कठोर और असुरक्षित स्थितियाँ थीं।
- मशीनों ने श्रमिकों के जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा उत्पन्न किया। इससे भी अधिक घातक कोयला खदानों में किया जाने वाला कार्य था। कम वेतन पर लंबे समय तक काम करने वाले मजदूरों के जीवन पर खानों और कारखानों के मालिकों का काफी नियंत्रण था। एक औसत कर्मचारी दिन में 14 घंटे, सप्ताह में छह दिन काम करेगा।
- अपनी नौकरी खोने के डर से, श्रमिक आम तौर पर भयानक परिस्थितियों और कम वेतन के बारे में शिकायत नहीं करेंगे। मालिकों को एहसास हुआ कि वे पुरुषों की तुलना में महिलाओं और बच्चों को कम भुगतान कर सकते हैं। बाल श्रम में वृद्धि हुई क्योंकि इसने उत्पादन की लागत कम और लाभ अधिक रखा। नतीजतन, श्रमिक वर्ग गरीबी में रहता था, जबकि मध्यम वर्ग बनाने वाले मालिक अमीर हो गए थे ।

6.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

i) जनसंख्या वृद्धि ने भूमि पर जीवन यापन करने में कठिनाइयों का सामना करने वाले लोगों की संख्या में इजाफा किया है।

ii) कम वेतन पर लंबे समय तक काम करने वाले मजदूरों के जीवन पर खानों और कारखानों के मालिकों का काफी .....था।

iii) .....से आर्थिक समृद्धि आई है ।

iv) बाल श्रम में वृद्धि हुई क्योंकि इसने उत्पादन की .....रखा है।

v) मशीनों ने .....के जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा उत्पन्न किया।

6.5 सारांश (Summary)

प्राकृतिक संसाधनों को संसाधित कर के अधिक उपयोगी एवं मूल्यवान वस्तुओं में बदलना विनिर्माण कहलाता है। ये विनिर्मित वस्तुएँ कच्चे माल से तैयार की जाती हैं। विनिर्माण उद्योग में प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल या तो अपने प्राकृतिक स्वरूप में सीधे उपयोग में ले लिये जाते हैं जैसे कपास, ऊन, लौह अयस्क इत्यादि अथवा अर्द्ध-संशोधित स्वरूप में जैसे धागा, कच्चा लोहा आदि जिन्हें उद्योग में प्रयुक्त कर के और अधिक उपयोगी एवं मूल्यवान वस्तुओं के रूप में बदला जाता है। अतः किसी विनिर्माण उद्योग से विनिर्मित वस्तुएँ दूसरे विनिर्माण उद्योग के लिये कच्चे माल का कार्य करती हैं। अब यह सर्वमान्य तथ्य है कि किसी भी देश की आर्थिक-प्रगति या विकास उसके अपने उद्योगों के विकास के बिना संभव नहीं है।

औद्योगिक क्रांति का निष्कर्ष कई आविष्कारों का निर्माण था जिसने कुछ उद्योगों की विनिर्माण क्षमताओं में सुधार किया और अर्थव्यवस्था में सुधार किया। अनजाने में इससे गरीबी और बेरोजगारी में भी वृद्धि हुई क्योंकि शारीरिक श्रम पर निर्भरता कम हो गई थी।

उद्योग अवलोकन रिपोर्ट एक विशिष्ट उद्योग (NAICS कोड द्वारा परिभाषित) से संबंधित डेटा का विस्तृत सारांश प्रदान करती है, जिसमें नौकरी और व्यवसाय, रुझान, विकास, जनसांख्यिकी और बहुत कुछ शामिल है। औद्योगिक क्रांति लाने वाले परिवर्तनों में सबसे महत्वपूर्ण थे (1) हाथ के औजारों का काम करने के लिए मशीनों का आविष्कार, (2) भाप का उपयोग और बाद में अन्य प्रकार की शक्ति, और (3) को अपनाना कारखाना प्रणाली।

औद्योगिक विकास के स्तर का किसी देश की आर्थिक सम्पन्नता से सीधा सम्बन्ध है। विकसित देशों जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, रूस की आर्थिक सम्पन्नता इन देशों की औद्योगिक इकाइयों की प्रोन्नत एवं उच्च विकासयुक्त वृद्धि से जुड़ा है। औद्योगिक दृष्टि से अविकसित देश अपने प्राकृतिक संसाधानों का निर्यात करते हैं तथा विनिर्मित वस्तुओं को अधिक मूल्य चुकाकर आयात करते हैं। इसीलिये आर्थिक रूप से ये देश पिछड़े बने रहते हैं।

6.6 सूचक शब्द (Keywords)

औद्योगिक विकास ,

समृद्धि,

जनसंख्या वृद्धि,

जीवन यापन,

औद्योगीकरण,

बाल श्रम

पर्यावरण-औद्योगिक नेटवर्क

6.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

- औद्योगिक क्रांति ने लोगों की आत्मनिर्भरता को कैसे बदला?
- औद्योगिक क्रांति के दौरान लोहे के उत्पादन में किस प्रकार परिवर्तन आया?
- औद्योगिक क्रांति के दौरान और बाद में कस्बों और शहरों का विकास क्यों हुआ?
- औद्योगीकरण ने मजदूर वर्ग के परिवारों को कैसे बदला?

6.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

i) जनसंख्या वृद्धि ii) नियंत्रण iii) औद्योगीकरण iv) लागत कम और लाभ अधिक v) श्रमिकों

6.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

- Basic Concepts of Education by Arung, Fernades , www.linkedin.com
- Indian Political System (4th Ed.) By Roy, H and Singh, M.P. , Pearson India Education Services
- History of Social thought by K.Singh, Prakashan Kendra, Lucknow.
- Principles of Political Science by Anup C, Kanpur, S. Chand and Company.
- Sociology: An Introduction by Smelser, Neil, J.,Wiley Eastern Private Limited
- Sociology: Principles of sociology with an introduction to social thought by Shanker Rao C.N., S. Chand and Company.

Subject : Sociology(Society, Culture and Social Change)	
Course Code **: SOCL-102**	Author **: Dr. Shakuntla Devi**
Lesson No. **: 07**	Editor: **Self**
Processes of Social Change: Characteristic Features of Globalization	

<u>अध्याय की संरचना</u>

7.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

7.1 प्रस्तावना (Introduction)

7.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

7.2.1 वैश्वीकरण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Globalization)

7.2.2 वैश्वीकरण की मुख्य विशेषताएं (Nature and Features of Globalization)

7.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

7.3.1 वैश्वीकरण के महत्व (Importance of Globalization)

7.3.2 वैश्वीकरण का प्रभाव (Impact of Globalization)

7.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

7.5 सारांश (Summary)

7.6 सूचक शब्द (Keywords)

7.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

7.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

7.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

7.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के माध्यम से जाने के बाद, आप निम्न कर सकेंगे:

- वैश्वीकरण के अर्थ और परिभाषा को जानेंगे l
- वैश्वीकरण निर्धारकों की प्रकृति को समझेंगे l

- वैश्वीकरण के महत्व का वर्णन करेंगे l
- वैश्वीकरण और मुख्य विशेषताएं जानेंगे l

7.1 परिचय/ प्रस्तावना (Introduction)

हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के एक पूर्व प्रोफेसर थिओडोर लेविट को "वैश्वीकरण" शब्द गढ़ने का श्रेय दिया जाता है और व्यवसायों को क्या बनाना और बेचना चाहिए, यह परिभाषित करने में विपणन की अघोषित भूमिका का समर्थन करने के साथ, बेलमोंट, मास में अपने घर पर 28 जून को मृत्यु हो गई।

"पहला वैश्वीकरण" अर्थशास्त्रियों द्वारा व्यापार और वित्त के वैश्वीकरण की दुनिया की पहली प्रमुख अवधि का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक वाक्यांश है, जो 1870 और 1914 के बीच हुआ था। "दूसरा वैश्वीकरण" 1944 में शुरू हुआ और 1971 में समाप्त हुआ।

वैश्वीकरण एक शब्द है जिसका उपयोग यह वर्णन करने के लिए किया जाता है कि कैसे व्यापार और प्रौद्योगिकी ने दुनिया को एक अधिक जुड़ा हुआ और अन्योन्याश्रित स्थान बना दिया है। वैश्वीकरण अपने दायरे में उन आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों को भी शामिल करता है जो परिणामस्वरूप हुए हैं।

7.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

7.2.1 वैश्वीकरण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Globalization)

वैश्वीकरण को एक लंबी अवधि की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, न कि एक ऐसी घटना के रूप में जो पिछले दशकों या सदी में उभरी है। यह एक पुरानी परिघटना है जो तब से शुरू हुई जब सभ्यता ने विभिन्न माध्यमों से एक दूसरे के साथ संवाद और बातचीत शुरू की।

► वैश्वीकरण समुद्री अन्वेषण और रोमांच, साल्वे व्यापार उपनिवेशीकरण और श्रम और पूंजी आदानों के आदान-प्रदान के समय से एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया है, चाहे वह मजबूर या स्वैच्छिक हो।

► वैश्वीकरण तकनीकी क्रांति से उभरता है जो पिछली शताब्दी के अंत में शुरू हुआ था, जो सूचना प्रौद्योगिकी के वर्तमान विस्फोट में समाप्त हुआ जिसे "मस्तिष्क उद्योग" कहा जाता है। नया "ज्ञान उद्योग" और आपस में जुड़े हुए गतिशील जाल हाल के वर्षों में वैश्वीकरण को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा रहे हैं।

► वैश्वीकरण को नई आर्थिक व्यवस्था, शीत युद्ध की समाप्ति, विकास और समृद्धि के परिणाम के रूप में देखा जाता है जैसा कि "सेंट्रल इंटेलिजेंस एजेंसी" के पूर्व प्रमुख "जॉर्ज बुश" ने घोषित किया था। पूर्व सोवियत संघ, पूर्वी जर्मनी और ऑर्डर कमांड अर्थव्यवस्थाओं की विफलता ने अंतर्राष्ट्रीय मुक्त व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय कार्यों के समर्थकों को प्रोत्साहित किया।

दूसरी ओर एक दशक बाद, बहुपक्षीय एजेंसियों और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग संगठनों ने मुक्त व्यापार समझौतों को स्थायी रूप से स्थापित किया है और बड़ी संख्या में व्यक्तियों, गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) और सामाजिक आंदोलनों के लिए नई वित्तीय संधियां की हैं, और सामाजिक आंदोलनों ने नकारात्मक सामाजिक आर्थिक घोषित किया है। वैश्वीकरण द्वारा विनाश, विशेष रूप से पिछले एशियाई और रूसी मुद्रा संकट के आलोक में।

► "वैश्वीकरण एक क्रमविनिमेय, संचयी प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को "खुलेपन" की एक अंतरराष्ट्रीय नीति द्वारा संस्थागत और सहायता प्रदान की जा रही है और व्यापार और पूंजी आंदोलनों पर अंतर्राष्ट्रीय समझौतों द्वारा लागू किया गया है। इसलिए, वैश्वीकरण अपने राज्यों के प्रबंधन में सरकारों की पारंपरिक भूमिका को कम करता है"।

6- वैश्वीकरण अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में देशों की बढ़ती आर्थिक परस्पर निर्भरता की प्रक्रिया है। यह वस्तुओं और सेवाओं में सीमा पार व्यापार की मात्रा और विविधता में वृद्धि, उच्च अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रवाह, प्रौद्योगिकी के अधिक तेजी से प्रसार और विभिन्न देशों में फर्मों के बीच संस्थागत संबंधों के माध्यम से होता है।

► वैश्वीकरण केवल एक आर्थिक घटना नहीं है, इसमें राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू शामिल हैं। एक उदाहरण वैश्विक टीवी नेटवर्क, इंटरनेट ... आदि है। और उपग्रह, जो सांस्कृतिक परंपराओं को प्रभावित कर समाप्त हो सकते हैं।

कंप्यूटिंग और दूरसंचार प्रौद्योगिकियों में प्रगति, जिसने प्रसंस्करण और सूचनाओं के आदान-प्रदान की लागत को कम किया, वैश्वीकरण के मुख्य कारण माने गए।

7.2.2 वैश्वीकरण की मुख्य विशेषताएं (Nature and Features of Globalization)

बेशक, ये अलग-अलग परिभाषाएँ "वैश्वीकरण" शब्द को शामिल करने वाली नीतियों की श्रेणी में विविधताओं को दर्शाती हैं। वैश्वीकरण के लक्षण विविधताओं के आधार विशिष्ट गुणों की पहचान करना संभव है:

1) यह एक निर्देशात्मक शब्द के बजाय एक वर्णनात्मक के रूप में सबसे अधिक उपयोगी रूप से उपयोग किया जाता है। यह स्वीकार किए जाने या टाले जाने के लिए कुछ वांछनीय या अवांछनीय अंत को निर्दिष्ट नहीं करता है। यह केवल सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी ताकतों के एक समूह को दर्शाता है जो हाल ही में स्पष्ट रूप से सामने आए हैं।

2) इसके उपयोग में शब्द संभवतः अपेक्षाकृत नया है, जबकि इसके द्वारा निर्दिष्ट फेनोमेनोफिल/फेट्लोइनेट ~ को किसी भी तरह से नया नहीं माना जा सकता है। अतीत ने भी उस परिघटना का अनुभव किया है जो शब्द "वैश्वीकरण" में निहित है।

3) वे संस्थाएँ जो वैश्वीकरण प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उभरी हैं, राष्ट्र-राज्यों की शक्ति और अधिकार से परे हैं। यहाँ तक कि, "वैश्वीकरण" अंतर्राष्ट्रीय मामलों में, राष्ट्र-राज्य अब अतीत की तरह विशिष्ट कर्ता नहीं हैं, बल्कि इसके अलावा अन्य कर्ता भी हैं, जिनमें अन्य के साथ-साथ गैर-सरकारी संगठन

पर्यावरण संबंधी प्रस्ताव, अंतरराष्ट्रीय निगम, जातीय राष्ट्रीयताएं और बहु-राज्यीय क्षेत्रीय संगठन (एनजीओ) शामिल हैं।

4) ग्लोबल एनएलसीटी वर्क्स, अंतरराष्ट्रीय निगमों के उत्पादों और दुनिया के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में लोगों के बड़े प्रवासन ने बहुत अधिक प्रभाव डाला है। दुनिया भर के लोगों के सामाजिक और सांस्कृतिक मुहावरों को प्रभावित किया। '-स्वैश्वीकरण' की दुनिया में, नए अभिनेताओं की भूमिका के प्रदर्शन के कारण एक अपेक्षाकृत बड़ा क्षेत्र आर्थिक, राजनीतिक और संचार नेटवर्क की बढ़ती संख्या शामिल है। उस हद तक, इन नेटवर्कों ने राष्ट्र-राज्य की सीमाओं को लोगों, वस्तुओं, सेवाओं, विचारों और सूचनाओं के आवागमन के लिए झरझरा और पारगम्य बना दिया है।

5) वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने न केवल 111 अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को अधिक विस्तृत बल्कि गहन भी बना दिया है क्योंकि इसमें न केवल बड़ी संख्या में अभिनेता और नेटवर्क एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है। प्रत्येक का दूसरे पर पड़ने वाला प्रभाव अतीत की तुलना में गुणात्मक रूप से अधिक है। ग्लोबल एनएलसीटी वर्क्स, ट्रांसनेशनल कॉरपोरेशन के उत्पादों और दुनिया के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में लोगों के बड़े प्रवासन ने बहुत अधिक प्रभाव डाला है।

7.3.2 वैश्वीकरण का प्रभाव (Impact of Globalization)

दुनिया भर के लोगों के सामाजिक और सांस्कृतिक रूढ़ियों को प्रभावित किया।

विनिर्माण क्षेत्र में विकास और अनौपचारिकता-

- वैश्वीकरण को पृथ्वी पर सभी लोगों के बीच बढ़ती एक-दूसरे पर अवलंबित या आश्रित की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है l
- एक-दूसरे पर अवलंबित या आश्रित जो उत्पादों, श्रम और वित्तीय बाजारों के वैश्विक एकीकरण के कारण हुई है- वैश्वीकरण का यह चरण नए लहर का समर्थन करता है - प्रौद्योगिकियां जो बाजारों के एकीकरण की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाती हैं। बदले में इन

प्रौद्योगिकियों को कुछ कौशल की आवश्यकता होती है - वैश्वीकरण की इन्हीं विशेषताओं - प्रौद्योगिकी और कौशल के उच्च स्तर - ने विवादों को उठाया है कि किसे लाभ होता है, किसे नुकसान होता है?

- अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिक: वे श्रमिक जो अपने सामान्य हितों की खोज में खुद को संगठित करने में सक्षम नहीं हैं रोज़गार की आकस्मिक प्रकृति, अज्ञानता और निरक्षरता, छोटे और बिखरे हुए आकार के प्रतिष्ठानों जैसी कुछ बाधाओं के कारण-विनिर्माण में, कुल श्रमिकों का 3/4 (47.7 मिलियन) अनौपचारिक श्रमिक हैं। (SEWA- स्वरोजगार महिला संघ)

7.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

i) वैश्वीकरण केवल एक ……..नहीं है, इसमें राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू शामिल हैं।

ii) वैश्वीकरण ……से उभरता है ।

iii) वैश्वीकरण को पृथ्वी पर सभी लोगों के बीच बढ़ती एक-दूसरे पर ……की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है l

iv) **……..**विभिन्न देशों के बीच विश्व अर्थव्यवस्था बनाने के लिए आर्थिक संबंधों का विस्तार है ।

v) ……. वैश्वीकरण के मुख्य कारण माने गए।

7.5 सारांश (Summary)

वैश्वीकरण विभिन्न देशों के बीच विश्व अर्थव्यवस्था बनाने के लिए आर्थिक संबंधों का विस्तार है जिसमें प्रत्येक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था दूसरों पर निर्भर है। कोई भी देश आत्मनिर्भर नहीं है, उन सभी को दूसरे देशों के साथ उत्पादों का आदान-प्रदान करने की आवश्यकता है। एक एकीकृत विश्व अर्थव्यवस्था का उदय आवश्यक रूप से अपने आप में एक नकारात्मक चीज नहीं है, क्योंकि संभावित रूप से यह एक सामंजस्यपूर्ण तरीके से अर्थव्यवस्था की अंतर्राष्ट्रीय योजना के लिए

आधार तैयार करता है। सामाजिक न्याय और उत्पादन के साधनों (कारखानों, प्रौद्योगिकी, पूंजी) की सामूहिक संपत्ति पर आधारित एक आर्थिक व्यवस्था के तहत यह मानवता के लिए एक अभूतपूर्व कदम आगे बढ़ने की अनुमति देगा। लेकिन पूंजीवादी व्यवस्था उत्पादन के साधनों की निजी संपत्ति और प्रत्येक व्यक्तिगत पूंजीपति के लिए उच्चतम मुनाफे की खोज पर आधारित है। यह विकास को असंभव बना देता है और एक ऐसी स्थिति पैदा करता है जहां एक छोटा अल्पसंख्यक बड़े पैमाने पर धनवान बन जाता है जबकि पृथ्वी ग्रह पर अधिकांश लोग अपने जीवन स्तर को गिरते हुए देखते हैं।

7.6 सूचक शब्द (Keywords)

वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकियां, अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी, अल्पसंख्यक, सामंजस्यपूर्ण

7.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

- एक छात्र के रूप में वैश्वीकरण कैसे प्रभावित करता है?
- गरीबी और असमानता क्यों बढ़ रही है?
- वैश्वीकरण की परिभाषा क्या है?
- वैश्वीकरण एक छात्र के रूप में कैसे प्रभावित होता है?
- शिक्षा में वैश्वीकरण की क्या भूमिका है?

7.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

i)आर्थिक घटना, ii)तकनीकी क्रांति iii) आश्रित iv) वैश्वीकरण v) कंप्यूटिंग और दूरसंचार प्रौद्योगिकियों में प्रगति

7.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

- Basic Concepts of Education by Arung, Fernades , www.linkedin.com
- Indian Political System (4th Ed.) By Roy, H and Singh, M.P. , Pearson India Education Services
- History of Social thought by K.Singh, Prakashan Kendra, Lucknow.
- Principles of Political Science by Anup C, Kanpur, S. Chand and Company.
- Sociology: An Introduction by Smelser, Neil, J.,Wiley Eastern Private Limited
- Sociology: Principles of sociology with an introduction to social thought by Shanker Rao C.N., S. Chand and Company.

Subject : Sociology(Society, Culture and Social Change)	
Course Code : **SOCL-102**	Author : **Dr. Shakuntla Devi**
Lesson No. : **08**	Editor: **Self**
Processes of Social Change: Characteristic Features of Modernisation and Secularization	

अध्याय की संरचना

8.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

8.1 प्रस्तावना (Introduction)

8.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

8.2.1 आधुनिकीकरण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Modernisation

8.2.2 आधुनिकीकरण की मुख्य विशेषताएं (Nature and Features of Secularization)

8.3 पाठ का आगे का मुख्य भाग (Further main Body of the Text)

8.3.1 आधुनिकीकरण के महत्व (Importance of Modernisation)

8.3.2 आधुनिकीकरण का प्रभाव (Impact of Modernisation)

8.3.3 धर्मनिरपेक्षता की मुख्य विशेषताएं (Characteristic Features of Secularization)

8.3.4 भारतीय धर्मनिरपेक्षता की विशेषताएं

8.4 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

8.5 सारांश (Summary)

8.6 सूचक शब्द (Keywords)

8.7 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

8.8 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

8.9 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

8.0 अधिगम के उद्देश्य (Learning Objectives)

इस अध्याय के माध्यम से जाने के बाद, आप निम्न कर सकेंगे:

- आधुनिकीकरण के अर्थ और परिभाषा को जानेंगे l
- आधुनिकीकरण निर्धारकों की प्रकृति को समझेंगे l
- आधुनिकीकरण के महत्व का वर्णन करेंगे l
- आधुनिकीकरण और मुख्य विशेषताएं जानेंगे l

8.1 परिचय/ प्रस्तावना (Introduction)

आधुनिकीकरण, समाजशास्त्र में, एक पारंपरिक, ग्रामीण, कृषि समाज से एक धर्मनिरपेक्ष, शहरी, औद्योगिक समाज में परिवर्तन होना है।

आधुनिक समाज औद्योगिक समाज है। किसी समाज का आधुनिकीकरण करना, सबसे पहले, उसका औद्योगीकरण करना है। ऐतिहासिक रूप से, आधुनिक समाज का उदय औद्योगिक समाज के उद्भव के साथ अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। आधुनिकता से जुड़ी सभी विशेषताओं को उन परिवर्तनों के समूह से संबंधित दिखाया जा सकता है, जो लगभग 250 साल पहले समाज के औद्योगिक प्रकार में लाए गए थे। इससे पता चलता है कि उद्योगवाद और औद्योगिक समाज शब्द आर्थिक और तकनीकी घटकों की तुलना में कहीं अधिक हैं जो उनके मूल को बनाते हैं। उद्योगवाद जीवन का एक तरीका है जिसमें गहन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन शामिल हैं। औद्योगीकरण के व्यापक परिवर्तन से होकर ही समाज आधुनिक बनते हैं।

आधुनिकीकरण एक सतत और खुली हुई प्रक्रिया है। ऐतिहासिक रूप से, जिस समय में यह हुआ है, उसे सदियों में मापा जाना चाहिए, हालांकि त्वरित आधुनिकीकरण के उदाहरण हैं। किसी भी मामले में, आधुनिकीकरण एक बार और हमेशा की उपलब्धि नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक समाजों के ताने-बाने में एक गतिशील सिद्धांत निर्मित है जो उन्हें व्यवस्थित होने या संतुलन प्राप्त करने की अनुमति नहीं देता है। इनका विकास सदैव अनियमित एवं असमान होता है। विकास का स्तर चाहे जो

भी हो, हमेशा "पिछड़े" क्षेत्र और "परिधीय" समूह होते हैं। यह आधुनिक समाजों में तनाव और संघर्ष का एक सतत स्रोत है। ऐसी स्थिति व्यक्तिगत राज्यों के आंतरिक विकास तक ही सीमित नहीं है। इसे वैश्विक स्तर पर देखा जा सकता है, क्योंकि आधुनिकीकरण अपने मूल पश्चिमी आधार से बाहर की ओर पूरी दुनिया में ले जाता है। असमान और असमान रूप से विकसित राष्ट्रों का अस्तित्व राज्यों की विश्व व्यवस्था में अस्थिरता के मूलभूत तत्व का परिचय देता है।

8.2 अध्याय के मुख्य बिंदु (Main Points of the Text)

8.2.1 आधुनिकीकरण के अर्थ और परिभाषा (Meaning and Definitions of Modernisation)

आधुनिकीकरण किसी चीज़ को अद्यतन करने या उसे समकालीन सेटिंग में काम करने की प्रक्रिया है। एक कार्यालय के आधुनिकीकरण में नए कंप्यूटर, हाई-स्पीड इंटरनेट और एक फैंसी एस्प्रेसो मशीन शामिल हो सकती है।

रसोई के आधुनिकीकरण का मतलब आमतौर पर नए उपकरण और महंगे काउंटरटॉप्स होते हैं - रसोई अधिक आधुनिक दिखती है और साथ ही आधुनिक तरीके से काम करती है। दूसरी ओर, शेक्सपियर के नाटक के आधुनिकीकरण में समकालीन सेटिंग्स और कपड़े, या यहां तक कि संवाद की भाषा को अद्यतन करना शामिल हो सकता है। आधुनिकीकरण आधुनिक के माध्यम से आता है, लेट लैटिन मॉडर्नस से, "मॉडर्न," और अंततः रूट मोडो, "अभी-अभी।"

आधुनिकीकरण परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है, जिसका अर्थ है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित समाज की प्रक्रिया में परिवर्तन होता है।

8.2.2 आधुनिकीकरण की मुख्य विशेषताएं (Nature and Features of Modernisation)

a). प्रौद्योगिकी और मशीनीकरण का अनुप्रयोग

दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह है कि लोग अपने पुराने रहन-सहन, कृषि और यात्रा के पुराने तरीकों को छोड़ देते हैं। पहले भारत में अधिकांश लोग गाँवों में पुराने ढंग से कच्चे घरों में रहते थे और वे अपनी भूमि पर हल जोतते थे और बैलगाड़ियों से यात्रा करते थे।

अब यह पूरी तरह से छोड़ दिया गया है क्योंकि लोग अब अच्छी तरह से बने घरों में रहते हैं, ट्रैक्टर के माध्यम से अपने खेतों की खेती करते हैं और कृषि के अन्य आधुनिक तरीकों (रासायनिक उर्वरक या खाद, अच्छे बीज, सिंचाई प्रणाली और मशीनों के माध्यम से कटाई) का उपयोग करते हैं।

अब आम लोग बसों और रेलगाड़ियों के माध्यम से यात्रा करना पसंद करते हैं लेकिन समाज के अधिक संपन्न वर्ग यानी अमीर लोग सुपर-फास्ट ट्रेनों और हवाई जहाज से यात्रा करना पसंद करते हैं। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह है कि लोग तकनीक और मशीनीकरण के आधुनिक तरीकों का उपयोग कर रहे हैं।

b. औद्योगीकरण

पहले लोग तकलियों से कपड़ा कातते थे और पारंपरिक तरीकों से रहते थे और अपने व्यवसाय और निवास के पुराने पैटर्न का उपयोग करते थे। जब किसी देश का औद्योगीकरण होता है, तो लोग अपनी पारंपरिक ग्रामीण और कृषि अर्थव्यवस्था को छोड़ देते हैं। इसका स्थान औद्योगीकरण ने ले लिया है। नए कारखाने और मिलें प्रतिदिन बढ़ती रहती हैं और नवीनतम तकनीकों का उपयोग करती हैं।

c. शहरीकरण

जब किसी देश का औद्योगीकरण होता है, तब उद्योगों के नए केन्द्रों का विकास होता है। नतीजतन, गांवों के लोग विशेष रूप से मजदूर बड़ी संख्या में शहरों में इन नए केंद्रों में इस उम्मीद के साथ पलायन करते हैं कि वे पर्याप्त पैसा कमाकर अपने गांव लौट आएंगे लेकिन गांवों में उनकी आजीविका और कृषि इतना बोझ नहीं उठा सकती है।

इसके अलावा, उनके लिए गांवों से शहरों में रोजाना आना-जाना बहुत असुविधाजनक होता है क्योंकि बसों और ट्रेनों में बहुत भीड़ होती है और यात्रा बहुत महंगी होती है। इसलिए देश के बढ़ते औद्योगीकरण के साथ, बड़ी संख्या में लोग गांवों से शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं

और वहां स्थायी रूप से बस रहे हैं। बदले में यह शहरों, आवास और स्वच्छता, संचार के तरीकों में सुधार और कई उद्देश्यों के लिए अधिक से अधिक भूमि का अधिग्रहण करने में कई समस्याओं का कारण बनता है।

d. राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि

अकेले कृषि अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय धन और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि नहीं कर सकती क्योंकि उसे समाज के निष्क्रिय सदस्यों का भी समर्थन करना पड़ता है। इसलिए राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के लिए कृषि पर आधारित पुरानी अर्थव्यवस्था को औद्योगिक विकास और उसकी आय से पूरक बनाना होगा क्योंकि औद्योगिक वस्तुओं के निर्यात से देश को भारी मुनाफा हो सकता है।

e. साक्षरता में वृद्धि

आधुनिकीकरण की एक और प्रमुख विशेषता यह है कि निरक्षरता को मिटाने के लिए सरकार और समाज द्वारा हर संभव प्रयास किए जाते हैं और न केवल हर बच्चे को स्कूल भेजने के लिए ज़ोरदार प्रयास किए जाते हैं बल्कि वयस्कों को भी तीन आर सीखने के लिए राजी किया जाता है।

यह शिक्षा केवल कला, विज्ञान और वाणिज्य तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि उच्च चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान, प्रौद्योगिकी और शिल्प तक भी फैलती है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को सभी क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। इसलिए सभी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पीछे भागते हैं।

f. राजनीतिक भागीदारी

जब हर व्यक्ति को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के सर्वोत्तम संभव अवसर प्रदान किए जाते हैं, तो लोग प्रबुद्ध हो जाते हैं। आर्थिक विकास और धन का समान वितरण प्रत्येक व्यक्ति को दैनिक आवश्यकताओं की अत्यावश्यक आवश्यकता से कुछ समय साझा करने और इसे राजनीतिक भागीदारी में समर्पित करने में सक्षम बनाता है।

हर मतदाता अखबार पढ़ना शुरू करता है और राजनीति के बारे में कुछ सीखता है। मतदाता अंततः प्रबुद्ध हो जाता है और उस पार्टी को वोट देता है जो आर्थिक समस्याओं को हल करने की संभावना रखती है और देश को अब तक अप्राप्य ऊंचाइयों पर ले जाती है।

इसलिए राजनीतिक दलों, हित समूहों और विभिन्न अन्य संगठनों के माध्यम से लोकतंत्र में राजनीतिक भागीदारी संभव है। वे नागरिकों के कल्याण के लिए सरकार को प्रभावित करते हैं और जाति, रंग, पंथ, धर्म, लिंग या ऐसे अन्य विचारों के बावजूद सभी को सेवाओं में समान अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं।

g. मास-मीडिया तकनीकों का विकास

आधुनिकीकरण मास-मीडिया तकनीकों के अपने जागरण विकास को लाता है। इन मास-मीडिया तकनीकों में समाचार पत्र, प्रसारण, डाक सुविधाएं, फिल्में, सड़क, रेल और हवाई सेवाएं, बिजली और टीवी शामिल हैं। इन सभी सुविधाओं के माध्यम से नागरिक प्रबुद्ध और अच्छी तरह से सूचित हो जाते हैं और बदले में ये नागरिकों को राज्य की सेवा करने में सक्षम बनाते हैं। बेहतर तरीके से।

h. सामाजिक गतिशीलता

जब किसी देश का आधुनिकीकरण होने लगता है तो लोग बेहतर सुविधाओं और नौकरियों की तलाश में गांवों से शहरों की ओर पलायन करते हैं। गाँव के सरपंच की भूमिका महत्वहीन हो जाती है और शहरों में विभिन्न राजनीतिक दलों और यूनियनों के नेताओं की भूमिका से बदल दी जाती है। जैसे-जैसे लोग जागरूक होते हैं, वैसे-वैसे वे उस नेता के इर्द-गिर्द जमा हो जाते हैं, जो उन्हें सामान पहुंचाने की संभावना रखता है।

i. राष्ट्रीय पहचान की खेती

जब किसी देश का आधुनिकीकरण होता है, तब लोग अपनी संकीर्ण निष्ठाओं और जाति, रंग, लिंग या पंथ के संकीर्ण विचारों को छोड़ने लगते हैं। उनके हितों की पहचान 'राष्ट्र के हितों' से हो जाती है।

आधुनिकीकरण का अर्थ आवश्यक रूप से सभी पारंपरिक मूल्यों और सांस्कृतिक या राजनीतिक विरासत को त्यागना नहीं है:

आधुनिकीकरण का जरूरी अर्थ यह नहीं है कि लोग अपने सभी पारंपरिक मूल्यों या सांस्कृतिक और राजनीतिक विरासत को त्याग दें। उदाहरण के लिए, ब्रिटिश पारंपरिक रूप से रूढ़िवादी हैं लेकिन फिर भी उन्होंने राजशाही और हाउस ऑफ लॉर्ड्स जैसी अपनी पुरानी संस्थाओं को बरकरार रखा है।

यद्यपि उनकी शक्तियों को पर्याप्त रूप से कम कर दिया गया है, फिर भी उन्हें उपयोगी संस्थाएँ बना दिया गया है जो समाज की बढ़ती जरूरतों को पूरा कर सकती हैं। इसलिए अंग्रेजों को सबसे आधुनिक राष्ट्रों में से एक माना जाता है। जापानियों, फ्रांसीसियों और जर्मनों का भी यही हाल है।

हम भारत में भी यही कर रहे हैं। अपनी सांस्कृतिक या राजनीतिक विरासत को खोए बिना हम नवीनतम तकनीक और आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों को अपना रहे हैं। इस प्रकार, हम बड़ी तेजी के साथ आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहे हैं।

8.3.1 आधुनिकीकरण के महत्व (Importance of Modernisation)

आधुनिकीकरण का उद्देश्य समाज, संस्कृति, जनता और परिवार में शिक्षा के माध्यम से जिम्मेदारियों को स्थानांतरित करना है। आधुनिकीकरण विभिन्न नैतिक सिद्धांतों की सहायता से लोगों के विचारों को बदलता है। आधुनिकीकरण आधुनिक आवश्यकताओं को अपनाने में बहुत मदद करता है। यह समाज के एक प्रगतिशील संचरण के रूप में उपयोग किया जाता है

जैसे-जैसे समाज आधुनिक होता है, व्यक्ति तेजी से महत्वपूर्ण होता जाता है, धीरे-धीरे परिवार, समुदाय या व्यावसायिक समूह को समाज की मूल इकाई के रूप में प्रतिस्थापित करता है। श्रम का विभाजन, औद्योगीकरण की विशेषता, संस्थानों पर भी लागू होता है, जो अधिक विशिष्ट हो जाते हैं।

8.3.2 आधुनिकीकरण का प्रभाव (Impact of Modernisation)

भारतीय समाज पर आधुनिकीकरण का प्रभाव निम्नलिखित है :--

भारत पर पश्चिम के प्रभाव की चर्चा पांच चरणों में की जा सकती है।

i) सिकंदर की विजय आदि के साथ शत्रुतापूर्ण संपर्क का है, इसके बाद लगातार शताब्दियों के व्यापार और वाणिज्य के परिणाम के रूप में शांतिपूर्ण आदान-प्रदान का संपर्क है।

ii) दूसरा चरण पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में शुरू हुआ जब वास्को डी गामा अपने जहाजों के साथ 1498 ई. में कालीकट पहुंचे। कुछ ही वर्षों में पुर्तगालियों ने गोवा पर कब्जा कर लिया। लेकिन इन पश्चिमी लोगों का प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित था।

iii) तब शुरू हुआ जब अठारहवीं शताब्दी की शुरुआत में ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना शासन स्थापित किया और बाद में अठारहवीं शताब्दी के मध्य तक देश में ब्रिटिश शासन स्थापित हो गया। यह भारत में पश्चिमी संस्कृति के विस्तार का पहला कदम था।

iv) औद्योगिक क्रांति के बाद उन्नीसवीं सदी की शुरुआत के साथ शुरू हुआ। कच्चे माल के स्रोत के रूप में अंग्रेजों द्वारा भारत के आर्थिक शोषण के साथ, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी पश्चिमी संस्कृति का प्रसार और प्रभुत्व शुरू हुआ।

v) पांचवां और अंतिम चरण 1947 में देश की राजनीतिक स्वतंत्रता के बाद शुरू हुआ।

प्रभाव को संक्षेप में इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:--

(1) पश्चिमी संस्थान जैसे बैंकिंग प्रणाली, लोक प्रशासन, सैन्य संगठन, आधुनिक चिकित्सा, कानून, आदि हमारे देश में पेश किए गए थे।

(2) पाश्चात्य शिक्षा ने उन लोगों के दृष्टिकोण को व्यापक बना दिया जो अपने अधिकारों और स्वतंत्रता की बात करने लगे। नए मूल्यों की शुरूआत, तर्कसंगत और धर्मनिरपेक्ष भावना, और व्यक्तिवाद, समानता और न्याय की विचारधाराओं ने बहुत महत्व ग्रहण किया।

8.3.3 धर्मनिरपेक्षता की मुख्य विशेषताएं (Characteristic Features of Secularization)

- धर्म के मामलों से राज्य को अलग करने से धर्म और समाज के बीच दूरी पैदा होती है।
- काम से संबंधित मामले।
- धार्मिक मामलों को निजीकृत करना।
- सभी कर्मकांडों को मानव निर्मित या कृत्रिम मानते हैं।

भारतीय धर्मनिरपेक्षता की विशेषताएं निम्नलिखित है :--

- राज्य द्वारा सभी धर्मों के लिए समान सम्मान और मान्यता।
- धर्म के आधार पर राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं।
- राज्य द्वारा किसी भी धर्म के कार्य में हस्तक्षेप न करना।
- भारत में कोई आधिकारिक धर्म नहीं है।
- किसी व्यक्ति को किसी भी धर्म का अभ्यास, प्रचार और प्रचार करने का अधिकार है।

धर्मनिरपेक्षता के तीन घटक

लकमैन, बर्जर, विल्सन, मार्टिन, फेन, पार्सन्स और बेलाह के ग्रंथों के सटीक संदर्भों के साथ यह दिखाया गया है कि धर्मनिरपेक्षीकरण प्रतिमान तीन "अवधारणाओं" (या उदाहरण) के मूल पर आधारित है:

- भेदभाव,
- युक्तिकरण, और
- दुनियादारी।

8.5 अपनी प्रगति जांचें (Check Your Progress)

1. जब किसी देश का .....होने लगता है तो लोग बेहतर सुविधाओं और नौकरियों की तलाश में गांवों से शहरों की ओर पलायन करते हैं।

2. अपनी सांस्कृतिक या राजनीतिक विरासत को खोए बिना हम .....तकनीकों को अपना रहे हैं।
3. सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी .....का प्रसार और प्रभुत्व शुरू हुआ।
4. धर्मनिरपेक्षीकरण प्रतिमान तीन .....(या उदाहरण) के मूल पर आधारित है
5. धर्म के मामलों से राज्य को अलग करने से .....के बीच दूरी पैदा होती है।
6. भारत में कोई .....धर्म नहीं है।

8.6 सारांश (Summary)

समाज का ग्रामीण और कृषि प्रधान स्थिति से एक धर्मनिरपेक्ष, शहरी और औद्योगिक स्थिति में परिवर्तन। यह औद्योगीकरण से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। जैसे-जैसे समाज आधुनिक होता है, व्यक्ति तेजी से महत्वपूर्ण होता जाता है, धीरे-धीरे परिवार, समुदाय या व्यावसायिक समूह को समाज की मूल इकाई के रूप में प्रतिस्थापित करता है। श्रम का विभाजन, औद्योगीकरण की विशेषता, संस्थानों पर भी लागू होता है, जो अधिक विशिष्ट हो जाते हैं। परंपरा या प्रथा द्वारा शासित होने के बजाय, समाज उस उद्देश्य के लिए तैयार किए गए अमूर्त सिद्धांतों के अनुसार शासित होता है। पारंपरिक धार्मिक विश्वासों का महत्व अक्सर कम हो जाता है, और विशिष्ट सांस्कृतिक लक्षण अक्सर खो जाते हैं।

8.7 सूचक शब्द (Keywords)

- औद्योगीकरण
- व्यावसायिक समूह
- प्रतिस्थापित
- विशिष्ट सांस्कृतिक
- धर्मनिरपेक्षता

- आधुनिकीकरण

8.8 स्व -मूल्यांकन हेतु प्रश्न (Self-Assessment Questions) (SAQs)

- भारतीय समाज में आधुनिकीकरण का क्या प्रभाव है?
- आधुनिकीकरण का शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ा है?
- आधुनिकीकरण के नकारात्मक प्रभाव क्या हैं?
- धर्मनिरपेक्षता की महत्वपूर्ण विशेषताएं क्या हैं?
- सामाजिक परिवर्तन में आधुनिकीकरण का क्या महत्व है?
- भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षता और आधुनिकीकरण का क्या प्रभाव है?

8.9 अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर देखें (Answers to check your progress)

i) आधुनिकीकरण

ii) नवीनतम तकनीक और आधुनिक वैज्ञानिक

iii)पश्चिमी संस्कृति

iv)"अवधारणाओं"

v) धर्म और समाज

vi) आधिकारिक

8.10 सन्दर्भ ग्रन्थ/निर्देशित पुस्तकें (References/ Suggested Readings)

- Basic Concepts of Education by Arung, Fernades , www.linkedin.com
- Indian Political System (4th Ed.) By Roy, H and Singh, M.P. , Pearson India Education Services
- History of Social thought by K.Singh, Prakashan Kendra, Lucknow.

- Principles of Political Science by Anup C, Kanpur, S. Chand and Company.
- Sociology: An Introduction by Smelser, Neil, J.,Wiley Eastern Private Limited
- Sociology: Principles of sociology with an introduction to social thought by Shanker Rao C.N., S. Chand and Company.